राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF)
2023 पर आधारित

पूर्णत: संशोधित संस्करण

मेधा

7

परामर्शदाता

प्रो० हरिशंकर मिश्र, डी.लिट्.
पूर्व आचार्य, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रोफेसर–अध्यक्ष
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संकलन
कुंकुम चतुर्वेदी
शैल ठाकुर

कृति प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड लखनऊ

कृति प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2011

प्रथम संशोधित संस्करण : 2012

पुनर्मुद्रण : 2013, 2014, 2015

द्वितीय संशोधित संस्करण : 2016

पुनर्मुद्रण : 2017, 2018

तृतीय संशोधित संस्करण : 2019

पुनर्मुद्रण : 2020, 2021, 2022

चतुर्थ संशोधित संस्करण : 2023

पंचम संशोधित संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-87466-30-2

कृति प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हेड ऑफ़िस

वेदांग टावर, आम्रपाली बाजार, सेक्टर - 22, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226 016, उत्तर प्रदेश, भारत

फोन : (0522) 2350903, 2350904

ई-मेल : contact@kritiprakashan.com, वेबसाइट : www.kritiprakashan.in

शाखा

नं0. 498, भूर्तल, खाटू श्याम मंदिर के पास, शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली - 110 042

फोन : (011) 27871972, 27871973 ई-मेल : delhi@kritiprakashan.com

शोरूम

लखनऊ, फोन : (0522) 2202675

प्रथम संस्करण : 2011

प्रथम संशोधित संस्करण : 2012

पुनर्मुद्रण : 2013, 2014, 2015

द्वितीय संशोधित संस्करण : 2016

पुनर्मुद्रण : 2017, 2018

तृतीय संशोधित संस्करण : 2019

पुनर्मुद्रण : 2020, 2021, 2022

चतुर्थ संशोधित संस्करण : 2023

पंचम संशोधित संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-87466-30-2

कृति प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हेड ऑफ़िस

वेदांग टावर, आम्रपाली बाज़ार, सेक्टर - 22, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226 016, उत्तर प्रदेश, भारत

फ़ोन : (0522) 2350903, 2350904

ई-मेल : contact@kritiprakashan.com, वेबसाइट : www.kritiprakashan.in

शाखा

नं0. 498, भूतल, खाटू श्याम मंदिर के पास, शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली - 110 042

फ़ोन : (011) 27871972, 27871973 ई-मेल : delhi@kritiprakashan.com

शोरूम

लखनऊ, फ़ोन : (0522) 2202675

दो शब्द

21वीं सदी के प्रारंभ से ही राजभाषा **हिंदी** में भी बदलाव की झलक देखने को मिलती है। जहाँ एक ओर बोली जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी संपूर्ण भारत में प्रचलित हुई है, वहीं दूसरी ओर कंप्यूटर के इस युग में हिंदी भाषा की शुद्धता लुप्त होती जा रही है।

संभवतः किसी भी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता उसके प्राचीन स्वरूप में बदलाव की माँग करती है। उदाहरण के लिए यदि हम अंग्रेज़ी को ही देखें तो पाएँगे कि कई अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के शब्द उसमें समाहित हो चुके हैं। इसी प्रकार हिंदी की अपने देश में बढ़ती लोकप्रियता ने सब पर अपना प्रभाव छोड़ा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस लोकप्रियता ने अपनी छाप छोड़ी है।

इन सभी तथ्यों को सामने रखते हुए हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हिंदी भाषा की 21वीं सदी में कोई भी पाठ्य पुस्तकमाला उस प्रकार की नहीं हो सकती जैसे एक या दो दशक पहले हुआ करती थी। इसी मूल सिद्धांत को आधार बनाकर प्रस्तुत पुस्तक श्रृंखला **'मेधा' (संशोधित संस्करण)** का निर्माण किया गया है। इस संस्करण में हमने **राष्ट्रीय शिक्षा नीति यानि (NEP 2020)** पर आधारित **करके सीखना (Experiential Learning)** गतिविधियों को जोड़ा है ताकि बच्चों को पाठों में करके सीखने की गतिविधि मिले और छात्र की सीखने की प्रवृत्ति में निखार आए। यह श्रृंखला प्रवेशिका स्तर से कक्षा आठ तक के पाठ्यक्रम के लिए बनाई गई है क्योंकि बच्चों में भाषा ज्ञान की नींव इसी आयु वर्ग में कुशलतापूर्वक रखी जा सकती है।

कुछ मानकों पर हमने विशेष ध्यान केंद्रित किया है; जैसे – भाषा का शुद्ध प्रयोग, सरल एवं रोचक कथाओं का चुनाव, शब्द प्रयोग के नियम, अन्य भाषाओं से लिए गए शब्द, हिंदी भाषा पर अन्य भाषाओं (विशेषकर अंग्रेज़ी) का प्रभाव आदि।

आपके समक्ष यह श्रृंखला लाने से पहले हमने शिक्षकों के मापदंड तथा उनके सुझावों को भी एकत्रित किया है। हमें संतोष है कि इस श्रृंखला में शिक्षक-समुदाय के बहुमूल्य सुझावों को हमने सम्मिलित किया है।

हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रभाषा **हिंदी** को और रुचिपूर्ण बनाकर हम जो **'मेधा'** पाठ्य पुस्तकमाला प्रस्तुत कर रहे हैं, उससे आप अपने अध्यापन को संपूर्ण बना पाएँगे।

संपादक

NEP-2020 AND NCF-2023 EMPHASIZES ON CREATIVE SKILL DEVELOPMENT AND CONCEPTUAL UNDERSTANDING

Our learning, teaching and assessment objective must be focussed to develop 'High Order Thinking Skills' in the students.

CREATE
EVALUATE
ANALYZE
APPLY
UNDERSTAND
REMEMBER

High Order Thinking Skills

Low Order Thinking Skills

LEVELS

Level		
1	REMEMBER	Recognizing and recalling facts.
2	UNDERSTAND	Understanding what the facts mean.
3	APPLY	Applying the facts rules, concepts and ideas.
4	ANALYZE	Breaking down information into components/parts.
5	EVALUATE	Judging the value of information or ideas.
6	CREATE	Combining parts to make a new whole.

- EXPERIENTIAL LEARNING ACTIVITIES
- CAPACITY BUILDING WORKSHEETS
- VALUE BASED LEARNING MATERIAL

According To

NEP-2020 And NCF-2023

पंचपदी - FIVE STEP LEARNING PROCESS

STEP - 1
अदिति
(Introduction)
"what you need to know"

STEP - 2
बोध
(Understand concept)
"Exploration"

STEP - 3
अभ्यास
(Practice)
"Execute and Exercise"

STEP - 4
प्रयोग
(Application)
"Achieving an AHA! moment"

STEP - 5
प्रसार
(Expansion)
"Finding connections with real life"

WHY IS THIS LEARNING ESSENTIAL?

TO CREATE STUDENT CENTRIC ENVIRONMENT

TO LET THE STUDENT

- Think critically, creatively, sensibly
- Evaluate, analyse and conclude
- Make thoughtful decisions
- Gain constructive knowledge

TO MAKE LEARNING EXPERIENCE

- Inclusive
- Cooperative
- Collaborative
- Joyful

TO CREATE INDEPENDENT LEARNERS

THESE ACTIVITIES INCLUDE

- Cross-curricular link
- Integrated learning
- Activity based learning
- Fun, games and studies
- Teamwork
- Learning beyond classroom
- Enquiry based learning
- Assessment for learning
- Project based activities

पुस्तक विशेष

यह पाठ्यपुस्तक 'मेधा' बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों तथा आदतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। कविताओं और कहानियों का चयन बाल-मन और उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. **पाठ बोध** - इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ की विषय-वस्तु को अवगत कराने का प्रयास किया गया है जिससे उन्हें पाठ की मूल भावना की अनुभूति हो सके।
2. **देखो, पढ़ो और लिखो** - पाठ के कुछ कठिन शब्दों का उच्चारण अभ्यास (श्रुतलेख) हेतु पाठ के अंत में दिया गया है।
3. **शब्द बोध** - प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ दिए गए हैं। ये शब्द गुलाबी रंग में दिए गए हैं।
4. इस पुस्तक में उन शब्दों को **काले मोटे** अक्षरों से लिखा गया है जो अंग्रेज़ी भाषा के शब्द हैं।
5. **वर्तनी बोध** - इसके अंतर्गत उन शब्दों को दिया गया है जो दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं। इन शब्दों को पाठ में नीले रंग से लिखा गया है। जैसे- विद्‌यालय - विद्यालय, द्‌वारा - द्वारा आदि।
6. **अभ्यास बोध** - इसके अतर्गत बच्चों को पाठ एवं भाषा आधारित प्रश्नों को दिया गया है-
   - (क) **मौखिक प्रश्न** - मौखिक प्रश्नों को कक्षा 1 से 8 में दिया गया है। इन प्रश्नों को देने का उद्‌देश्य बच्चों के ज्ञान तथा उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर प्रदान करना है। मौखिक प्रश्नों के उत्तर केवल एक वाक्य में ही देने को निर्देशित किया गया है।
   - (ख) **लिखित अभ्यास** - यह बच्चों के लिए पाठ पर आधारित अभ्यास है जिसमें प्रश्न-उत्तर, खाली स्थान भरना, वाक्य प्रयोग, सही/गलत का निशान लगाना आदि प्रश्नों को दिया गया है।
   - (ग) **योग्यता विस्तार** - इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ से जुड़ी दूसरी अन्य गतिविधियाँ करने का अवसर प्रदान किया गया है।
   - (घ) **भाषा बोध** - इसमें बच्चों को पाठ्‌य सामग्री के साथ-साथ व्यवहारिक व्याकरण; जैसे- बहु विकल्पीय प्रश्न, विलोम, पर्यायवाची, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, विशेषण, तत्सम, तद्‌भव, क्रियाविशेषण, समानार्थी आदि का भी ज्ञान दिया जा रहा है।
7. **हिंदी शब्दकोश देखने की विधि** - बच्चों को शब्दकोश देखना अवश्य आना चाहिए, अतः बच्चों को शब्दकोश देखने की विधि बताई गई है।
8. **हिंदी पाठ्‌यपुस्तक की मानक वर्तनी** - इसमें पाठों से जुड़ी वर्तनी के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।
9. **हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी के कुछ प्रचलित शब्द** - इसके अंतर्गत हिंदी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों को दिया गया है।
10. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण** - पुस्तक के अंत में बच्चों को शुद्‌ध वर्तनी प्रयोग का विवरण दिया गया है।
11. **लेखक/कवि का परिचय** - जिन महान कवियों एवं लेखकों की कविताएँ एवं रचनाएँ दी गई हैं, उसके साथ ही उनका जीवन परिचय भी देने का प्रयास किया गया है।

- प्रकाशक

पुस्तक विशेष

यह पाठ्यपुस्तक 'मेधा' बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों तथा आदतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। कविताओं और कहानियों का चयन बाल-मन और उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. **पाठ बोध** - इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ की विषय-वस्तु को अवगत कराने का प्रयास किया गया है जिससे उन्हें पाठ की मूल भावना की अनुभूति हो सके।
2. **देखो, पढ़ो और लिखो** - पाठ के कुछ कठिन शब्दों का उच्चारण अभ्यास (श्रुतलेख) हेतु पाठ के अंत में दिया गया है।
3. **शब्द बोध** - प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ दिए गए हैं। ये शब्द गुलाबी रंग में दिए गए हैं।
4. इस पुस्तक में उन शब्दों को **काले मोटे** अक्षरों से लिखा गया है जो अंग्रेज़ी भाषा के शब्द हैं।
5. **वर्तनी बोध** - इसके अंतर्गत उन शब्दों को दिया गया है जो दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं। इन शब्दों को पाठ में नीले रंग से लिखा गया है। जैसे- विद्‌यालय - विद्यालय, द्‌वारा - द्वारा आदि।
6. **अभ्यास बोध** - इसके अतर्गत बच्चों को पाठ एवं भाषा आधारित प्रश्नों को दिया गया है-

   (क) **मौखिक प्रश्न** - मौखिक प्रश्नों को कक्षा 1 से 8 में दिया गया है। इन प्रश्नों को देने का उद्‌देश्य बच्चों के ज्ञान तथा उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर प्रदान करना है। मौखिक प्रश्नों के उत्तर केवल एक वाक्य में ही देने को निर्देशित किया गया है।

   (ख) **लिखित अभ्यास** - यह बच्चों के लिए पाठ पर आधारित अभ्यास है जिसमें प्रश्न-उत्तर, खाली स्थान भरना, वाक्य प्रयोग, सही/गलत का निशान लगाना आदि प्रश्नों को दिया गया है।

   (ग) **योग्यता विस्तार** - इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ से जुड़ी दूसरी अन्य गतिविधियाँ करने का अवसर प्रदान किया गया है।

   (घ) **भाषा बोध** - इसमें बच्चों को पाठ्य सामग्री के साथ-साथ व्यवहारिक व्याकरण; जैसे- बहु विकल्पीय प्रश्न, विलोम, पर्यायवाची, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, विशेषण, तत्सम, तद्‌भव, क्रियाविशेषण, समानार्थी आदि का भी ज्ञान दिया जा रहा है।
7. **हिंदी शब्दकोश देखने की विधि** - बच्चों को शब्दकोश देखना अवश्य आना चाहिए, अतः बच्चों को शब्दकोश देखने की विधि बताई गई है।
8. **हिंदी पाठ्यपुस्तक की मानक वर्तनी** - इसमें पाठों से जुड़ी वर्तनी के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।
9. **हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी के कुछ प्रचलित शब्द** - इसके अंतर्गत हिंदी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों को दिया गया है।
10. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण** - पुस्तक के अंत में बच्चों को शुद्‌ध वर्तनी प्रयोग का विवरण दिया गया है।
11. **लेखक/कवि का परिचय** - जिन महान कवियों एवं लेखकों की कविताएँ एवं रचनाएँ दी गई हैं, उसके साथ ही उनका जीवन परिचय भी देने का प्रयास किया गया है।

- प्रकाशक

पुस्तक विशेष

यह पाठ्यपुस्तक 'मेधा' बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों तथा आदतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। कविताओं और कहानियों का चयन बाल-मन और उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. **पाठ बोध** – इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ की विषय-वस्तु को अवगत कराने का प्रयास किया गया है जिससे उन्हें पाठ की मूल भावना की अनुभूति हो सके।
2. **देखो, पढ़ो और लिखो** – पाठ के कुछ कठिन शब्दों का उच्चारण अभ्यास (श्रुतलेख) हेतु पाठ के अंत में दिया गया है।
3. **शब्द बोध** – प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ दिए गए हैं। ये शब्द गुलाबी रंग में दिए गए हैं।
4. इस पुस्तक में उन शब्दों को **काले मोटे** अक्षरों से लिखा गया है जो अंग्रेज़ी भाषा के शब्द हैं।
5. **वर्तनी बोध** – इसके अंतर्गत उन शब्दों को दिया गया है जो दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं। इन शब्दों को पाठ में नीले रंग से लिखा गया है। जैसे- विद्‌यालय - विद्यालय, द्‌वारा - द्वारा आदि।
6. **अभ्यास बोध** – इसके अतर्गत बच्चों को पाठ एवं भाषा आधारित प्रश्नों को दिया गया है-

   (क) **मौखिक प्रश्न** – मौखिक प्रश्नों को कक्षा 1 से 8 में दिया गया है। इन प्रश्नों को देने का उद्‌देश्य बच्चों के ज्ञान तथा उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर प्रदान करना है। मौखिक प्रश्नों के उत्तर केवल एक वाक्य में ही देने को निर्देशित किया गया है।

   (ख) **लिखित अभ्यास** – यह बच्चों के लिए पाठ पर आधारित अभ्यास है जिसमें प्रश्न-उत्तर, खाली स्थान भरना, वाक्य प्रयोग, सही/गलत का निशान लगाना आदि प्रश्नों को दिया गया है।

   (ग) **योग्यता विस्तार** – इसके अंतर्गत बच्चों को पाठ से जुड़ी दूसरी अन्य गतिविधियाँ करने का अवसर प्रदान किया गया है।

   (घ) **भाषा बोध** – इसमें बच्चों को पाठ्य सामग्री के साथ-साथ व्यवहारिक व्याकरण; जैसे- बहु विकल्पीय प्रश्न, विलोम, पर्यायवाची, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, विशेषण, तत्सम, तद्‌भव, क्रियाविशेषण, समानार्थी आदि का भी ज्ञान दिया जा रहा है।
7. **हिंदी शब्दकोश देखने की विधि** – बच्चों को शब्दकोश देखना अवश्य आना चाहिए, अतः बच्चों को शब्दकोश देखने की विधि बताई गई है।
8. **हिंदी पाठ्यपुस्तक की मानक वर्तनी** – इसमें पाठों से जुड़ी वर्तनी के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।
9. **हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी के कुछ प्रचलित शब्द** – इसके अंतर्गत हिंदी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों को दिया गया है।
10. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण** – पुस्तक के अंत में बच्चों को शुद्‌ध वर्तनी प्रयोग का विवरण दिया गया है।
11. **लेखक/कवि का परिचय** – जिन महान कवियों एवं लेखकों की कविताएँ एवं रचनाएँ दी गई हैं, उसके साथ ही उनका जीवन परिचय भी देने का प्रयास किया गया है।

– प्रकाशक

विषय-सूची

नोट : सभी पाठों पर आधारित कार्यपत्रक एवं गतिविधियाँ पुस्तक के अंत में दी गई हैं।

जय भारती!

पाठ बोध डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा रचित यह देशभक्तिपूर्ण कविता उनकी अभिलाषाओं की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है, जिसमें वे माँ भारती की स्तुति कर उनकी महिमा का बखान कर रहे हैं।

जय भारत! जय भारती!

नई शक्ति जन-जन के मन में
अभिनव भक्ति उभारती!
प्रेम-शांति की दो धाराएँ,
मन की सीमा पर मिल जाएँ,
सारा जग इस पुण्य भूमि की
सदा उतारे आरती।।
जय भारत! जय भारती!

इसके गौरव की गाथाएँ
मधुमय मानस पर लहराएँ,
सत्यं, शिवं, सुंदर-स्वर से
सबको रहे सँवारती।।
जय भारत! जय भारती!

– डॉ० रामकुमार वर्मा

शिक्षण संकेत- कविता कक्षा में गाकर सुनाएँ तथा बच्चों को कंठस्थ करने के लिए कहें।

जीवन परिचय

डॉ० रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितंबर, सन् 1905 को मध्य प्रदेश के सागर ज़िले में हुआ। इनके पिता लक्ष्मी प्रसाद वर्मा डिप्टी कलैक्टर थे। इन्होंने प्रयाग से हिंदी में एम०ए० तथा नागपुर से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। ये प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के अध्यक्ष पद पर वर्षों तक आसीन रहे। आप एकांकीकार, आलोचक और कवि थे। इनके काव्य में रहस्यवाद और छायावाद की झलक है। मुख्य काव्य-संग्रह हैं– 'अंजलि', 'हिमहास', 'निशीथ', 'जौहर' तथा 'चित्तौड़ की चिंता'। उपन्यास 'चित्ररेखा' पर इन्हें 'देव पुरस्कार' एवं एकांकी संग्रह पर 'अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन पुरस्कार' मिला। इनको भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' अलंकरण से विभूषित किया गया। इनकी मृत्यु सन् 1990 में हुई।

शब्द बोध- REMEMBER

शक्ति	–	ताकत	जन-जन	–	प्रत्येक मनुष्य के
अभिनव	–	नई	जग	–	संसार
पुण्य	–	पवित्र	सदा	–	हमेशा
गौरव	–	यश	मानस	–	मन

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
शांति	शान्ति	सत्यं	सत्यम्
शिवं	शिवम्	सुंदरं	सुन्दरम्

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) कवि जन-जन के मन में क्या भरना चाहते हैं?

(ख) कवि मन की सीमा पर कितनी धाराएँ मिलाना चाहते हैं?

(ग) कवि ने भारत भूमि को क्या कहा है?

(घ) कवि ने किसकी जय की है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) इस कविता में कवि किसकी जय-जयकार कर रहे हैं?
(ख) नई शक्ति लोगों के मन में क्या प्रकट करती है?
(ग) कवि कौन-सी धाराएँ मन की सीमा पर मिलाना चाहते हैं?
(घ) कवि किस स्वर से सबको सँवारना चाहते हैं और क्यों?

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"इसके गौरव की गाथाएँ
मधुमय मानस पर लहराएँ,
सत्यं, शिवं, सुंदरं-स्वर से
सबको रहे सँवारती।।"

(क) उपर्युक्त पद्यांश में 'इसके' शब्द किसके लिए आया है?
(ख) कवि इसके गौरव की गाथाएँ कहाँ लहराना चाहते हैं?
(ग) 'मधुमय मानस' से क्या तात्पर्य है?

योग्यता विस्तार **ANALYZE**

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. बच्चे देशभक्ति पर आधारित कोई अन्य कविता ढूँढ़कर लिखें और उसे स्मरण करें।
2. "आपको अपने भारतीय होने पर क्यों गर्व है?" एक अनुच्छेद में अपने विचार अभिव्यक्त करें।
3. भारत के किन्हीं पाँच देशभक्तों के नाम सचित्र लिखें।

भाषा-बोध **APPLY**

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'अभिनव' का विलोम शब्द है-
(अ) नूतन ☐ (ब) प्राचीन ☑ (स) नया ☐

(ख) 'गाथाएँ' का एकवचन शब्द है-
(अ) गाथा ☑ (ब) गाथायों ☐ (स) गाथाओं ☐

(ग) 'सारा जग इस पुण्य भूमि की' में पुण्य शब्द है-
(अ) संज्ञा ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) विशेषण ☑

(घ) 'भारतीय' का भाववाचक संज्ञा शब्द है-

(अ) भारत ☐ (ब) भारतीयता ☐ (स) भारती ☐

(ङ) पाठ में 'आरती' का तुकांत शब्द है-

(अ) भूमि ☐ (ब) भारती ☐ (स) शक्ति ☐

2. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

जग - ____________ ____________

भूमि - ____________ ____________

सदा - ____________ ____________

नई - ____________ ____________

3. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए-

भारत - भ् + आ + र् + अ + त् + अ

अभिनव -

भक्ति -

आरती -

गौरव -

4. 'प्रेम-शांति' की दो धाराएँ।

इस वाक्य में प्रेम-शांति के बीच में हाइफ़न (सामासिक चिह्न) (-) का प्रयोग किया गया है।

- लेखन में स्पष्टता लाने के लिए हाइफ़न (सामासिक चिह्न) का प्रयोग किया जाता है।
- द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफ़न (-) लगाया जाता है। जैसे- राम-श्याम। इसका अर्थ है- राम और श्याम।
- यहाँ प्रेम-शांति में 'द्वंद्व समास' है। इसका अर्थ है 'प्रेम और शांति'।

द्वंद्व समास

जिस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं, कोई गौण नहीं होता, उसे द्वंद्व (जोड़ा, युग्म) समास कहते हैं। इसमें दोनों पदों को जोड़ने वाले 'और' समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है।

5. नीचे लिखे समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-

नई-पुरानी - ____________ ____________

भला-बुरा - ____________ ____________

धनी-निर्धन - ____________ ____________

जीवन-मरण - ____________ ____________

ऊपर-नीचे - ____________ ____________

गरीब-अमीर - ____________ ____________

2

काबुलीवाला

पाठ बोध विश्वकवि रबींद्रनाथ टैगोर की इस कहानी में बाल-सुलभ उत्सुकता, वात्सल्य-प्रेम और सहृदय मानवता का ताना-बाना बुना गया है। आइए, अनेक रसों से सराबोर इस कहानी का वर्णन पढ़ें।

मेरी पाँच वर्ष की छोटी लड़की मिनी से घड़ी भर भी बात किए बिना नहीं रहा जाता। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने सिर्फ़ एक ही साल लगाया होगा।

एक दिन सवेरे मैंने अपने उपन्यास में हाथ लगाया ही था कि इतने में मिनी ने आकर कहना शुरू कर दिया, "बाबू जी! रामदयाल दरबान 'काक' को 'कौआ' कहता है, वो कुछ जानता नहीं न, बाबू जी?"

दुनिया की भाषाओं की विभिन्नता के विषय में मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया, "देखो बाबू जी, भोला कहता था, आकाश में हाथी सूँड़ से पानी फेंकता है, इससे वर्षा होती है। अच्छा बाबू जी! भोला झूठ–मूठ बहुत बोलता है न?"

मैं बोला, "मिनी! तू जा, भोला के साथ जाकर खेल। मुझे अभी काम है, अच्छा!"

मेरा घर सड़क के किनारे पर था। एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी। सहसा मिनी खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़कर गई और बड़ी ज़ोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला!"

मैले–कुचैले ढीले कपड़े पहने, सिर पर साफ़ा बाँधे, कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की दो पिटारियाँ लिए एक लंबा–सा काबुलीवाला धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था।

लेकिन, मिनी के चिल्लाने पर ज्योंही काबुलीवाले ने हँसते हुए उसकी तरफ़ मुँह फेरा और मेरे मकान की तरफ़ आने लगा, त्योंही वह

डरकर भीतर की ओर भाग गई। फिर उसका पता ही नहीं लगा कि वह कहाँ गायब हो गई! उसके मन में एक अंधविश्वास बैठ गया था कि उस झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसी और भी दो–चार जीती–जागती लड़कियाँ निकल सकती हैं।

इधर काबुलीवाले ने आकर, मुसकुराते हुए मुझे सलाम किया और खड़ा हो गया। मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा। फिर वह बोला, "बाबू साहब! तुम्हारी लड़की कहाँ गई?"

मैंने मिनी के मन से फिजूल का डर दूर करने के इरादे से उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे बिलकुल सटकर काबुलीवाले के मुँह और झोली की तरफ़ संदिग्ध दृष्टि से देखती हुई खड़ी रही। काबुलीवाले ने झोली में से किशमिश और खूबानी निकालकर देना चाहा पर उसने कुछ भी न लिया और दूने संदेह के साथ मेरे घुटनों से चिपट गई। काबुलीवाले से उसका पहला परिचय इस तरह हुआ।

कुछ दिन बाद, एक दिन सवेरे किसी ज़रूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखा मेरी दुहिता दरवाज़े के पास बेंच पर बैठी हुई काबुलीवाले से खूब बातें कर रही है और काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा–बैठा मुसकराता हुआ सब ध्यान से सुन रहा है।

देखा, तो मिनी का छोटा–सा आँचल बादाम–किशमिश से भरा हुआ है। मैंने काबुलीवाले से कहा, "उसे यह सब क्यों दे दिया? अब मत देना।" कहकर जेब में से एक अठन्नी निकालकर उसे दे दी। उसने बिना किसी संकोच के अठन्नी लेकर अपनी झोली में डाल ली।

घर लौटकर देखता हूँ तो उस अठन्नी ने बड़ा उपद्रव खड़ा कर दिया है।

मिनी की माँ मिनी से पूछ रही है, "तूने यह अठन्नी पाई कहाँ से?"

मिनी ने कहा, "काबुलीवाले ने दी है।"

वास्तव में जाते समय काबुलीवाले ने वह अठन्नी मिनी की झोली में डाल दी थी।

इस बीच में काबुलीवाला रोज़ आता रहा और पिस्ता–बादाम की रिश्वत दे–देकर मिनी के छोटे–से हृदय पर उसने काफ़ी अधिकार जमा लिया। इन दोनों मित्रों में कुछ बँधी हुई बातें होती थीं; जैसे– रहमत को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई पूछती, "काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला! तुम्हारी झोली के भीतर क्या है?"

रहमत हँसता हुआ उत्तर देता, "हाथी!"

फिर रहमत मिनी से कहता, "लल्ली! तुम ससुराल कब जाओगी?"

इसपर उलटे वह रहमत से ही पूछती, "तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत अपना मोटा घूँसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।"

सुनकर मिनी खूब हँसती।

देखते–देखते शरद ऋतु आ पहुँची।

हर साल माघ महीने के लगभग रहमत अपने देश चला जाता। इस समय वह अपने ग्राहकों से रुपये वसूल करने के काम में बड़ा उद्विग्न रहता। उसे घर–घर घूमना पड़ता। मगर फिर भी वह मिनी से एक बार मिल ही जाता।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे कमरे में बैठा हुआ अपनी नई पुस्तक का प्रूफ़ देख रहा था। तभी सड़क पर एक बड़ा भारी हल्ला–सा सुनाई दिया।

देखा तो अपने रहमत को दो सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। रहमत के कुरते पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा। मैंने दरवाज़े के बाहर निकलकर सिपाही को रोक लिया और पूछा, ''क्या बात है?''

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक रामपुरी चद्दर खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उसकी तरफ़ बाकी थे जिन्हें उसने देने से इनकार कर दिया। बस इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दिया।

इतने में ''काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला!'' पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई। मिनी ने आने के साथ ही उससे पूछा, ''तुम ससुराल जाओगे?''

रहमत ने हँसकर कहा, ''हाँ, वहीं तो जा रहा हूँ।''

रहमत ताड़ गया कि उसका यह उत्तर मिनी के चेहरे पर हँसी न ला सका, और तब उसने हाथ दिखाकर कहा, ''ससुर को मारता, पर क्या करूँ, हाथ बँधे हुए हैं।''

छुरा चलाने के कसूर में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।

काबुलीवाले का खयाल धीरे–धीरे मन से बिलकुल उतर गया।

कितने ही साल बीत गए। सालों बाद आज फिर एक शरद ऋतु आई है। मिनी की सगाई पक्की हो गई है। हमारे घर पर आज मुँह–अँधेरे से ही शहनाई बज रही है। मेरी मिनी का आज ब्याह है। मैं अपने लिखने–पढ़ने के कमरे में बैठा हुआ हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत आया और सलाम करके खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान न सका। उसके पास न तो झोली थी, न वैसे लंबे–लंबे बाल थे और न चेहरे पर पहले जैसा तेज़ ही था। अंत में उसकी मुसकराहट देखकर पहचान सका कि वह रहमत है।

मैंने पूछा, ''क्यों रहमत! कब आए?''

उसने कहा, ''कल शाम को **जेल** से छूटा हूँ।''

मैंने उससे कहा, ''आज हमारे घर में एक ज़रूरी काम है सो आज मैं उसमें लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।''

मेरी बात सुनकर वह उसी समय जाने को तैयार हो गया पर दरवाज़े के पास जाकर कुछ इधर–उधर

देख करके बोला, "बच्ची को ज़रा देख लेता...!"

शायद उसे विश्वास था कि मिनी अभी तक वैसी ही बच्ची है। उसने सोचा कि मिनी अब भी पहले की ही तरह "काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला!" चिल्लाती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों के उस पुराने कौतुकजन्य हास्यालाप में किसी तरह की रुकावट नहीं होगी।

मैंने कहा, "आज घर में बहुत काम हैं। आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।"

मेरा जवाब सुनकर, वह कुछ उदास–सा हो गया। फिर "सलाम बाबू साहब!" कहकर दरवाज़े के बाहर निकल गया।

मेरे हृदय में न जाने कैसी एक वेदना–सी उठी। मैं सोच ही रहा था कि उसे बुलाऊँ, इतने में देखा तो वह खुद ही आ रहा है। पास आकर बोला, "ये अंगूर, किशमिश और बादाम बच्ची के लिए लाया था, उसको दे दीजिएगा।"

मैंने उसके हाथ से सामान लेकर उसे पैसे देने चाहे पर उसने मेरा हाथ थाम लिया। कहने लगा, "आपकी बहुत मेहरबानी है, बाबू साहब! हमेशा याद रहेगी; पैसा रहने दीजिए।" ज़रा ठहरकर फिर बोला, "बाबू साहब! आपकी जैसी मेरी भी देश में एक लड़की है। मैं उसकी याद करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ा–सा मेवा हाथ में ले आया करता हूँ। मैं तो आपके यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।"

उसने अपने ढीले–ढाले कुरते के अंदर हाथ डालकर एक मैला–कुचैला कागज़ का टुकड़ा निकाला। देखा कि कागज़ पर एक नन्हे–से हाथ के छोटे–से पंजे की छाप है। हाथ में थोड़ी–सी कालिख लगाकर कागज़ के ऊपर उसी का निशान ले लिया गया है। अपनी लड़की की इस याददाश्त को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ता (कोलकाता) के गली–कूचों में मेवा बेचने आता है।

मेरी आँखें भर आईं और फिर इस बात को मैं बिलकुल ही भूल गया कि वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक उच्च वंश का रईस हूँ। तब मैं महसूस करने लगा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी बाप है, मैं भी बाप हूँ। उसकी छोटी–सी बिटिया के हाथ की निशानी ने मेरी ही मिनी की याद

दिला दी। मैंने उसी वक्त मिनी को बाहर बुलवाया। ब्याह की पूरी पोशाक और ज़ेवर–गहने पहने हुए बेचारी वधू–के वेश में मिनी मारे शर्म के सिकुड़ी हुई, मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुलीवाला पहले तो सकपका गया; पहले जैसी बातचीत करते उससे न बना। बाद में हँसता हुआ बोला, ''लल्ली! सास के घर जा रही है क्या?''

मिनी अब सास के मायने समझने लगी है; लिहाज़ा अब उससे पहले की तरह जवाब देते न बना। रहमत की बात सुनकर मारे शर्म से उसका मुँह लाल सुर्ख हो उठा। उसने मुँह फेर लिया।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी साँस भरकर रहमत ज़मीन पर बैठ गया। शायद उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी लड़की भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ बरसों में उसका क्या हुआ होगा, कौन जाने!

मैंने पचास रुपये के **नोट** निकालकर उसके हाथ में दिए और कहा, ''रहमत! तुम आज अपने देश चले जाओ, अपनी लड़की के पास। तुम दोनों के मिलन–सुख से मेरी मिनी सुख पाएगी।''

रहमत को रुपये देने के बाद ब्याह के हिसाब में से मुझे उत्सव–समारोह के दो–एक कार्यक्रम छाँटकर निकाल देने पड़े। जैसी मन में थी वैसी रोशनी नहीं कर सका, अंग्रेज़ी बाजे भी नहीं आए, घर में औरतें बड़ी नाराज़गी दिखाने लगीं, सब कुछ हुआ, फिर भी मेरा खयाल है कि आज एक अपूर्व मंगल–प्रकाश से हमारा वह शुभ उत्सव उज्ज्वल हो उठा।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

शिक्षण संकेत- बच्चों को योग का जीवन में महत्व समझाएँ। उन्हें बताएँ कि योग और व्यायाम मन-मस्तिष्क को स्वस्थ रखते हैं जिससे जीवन-शैली सुंदर बनती है। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन भी बसता है। उन्हें योगासन एवं व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

'गुरुदेव' के नाम से विख्यात **रवीन्द्रनाथ टैगोर** का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में हुआ था। वे विश्वस्तरीय सहित्यकार थे जिन्हें उनकी रचना 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया था। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं - 'गोरा', 'घरे बाइरे', 'नौका डूबी' आदि। भारत के राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' और बांग्लादेश के राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' की रचना करने का गौरव उन्हें ही प्राप्त है। उनका निधन 7 अगस्त 1941 को हुआ था।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – बेंच, प्रूफ़, जेल, नोट

शब्द बोध- REMEMBER

घड़ी भर	–	एक पल के लिए	मैले–कुचैले	–	गंदे और मुड़े–तुड़े
फ़िजूल	–	बेकार	दुहिता	–	बेटी
उपद्रव	–	हंगामा	उद्‌विग्न	–	बेचैन
चद्‌दर	–	चादर	भोंक देना	–	घुसा देना
ताड़ जाना	–	समझ लेना	मुँह–अँधेरे	–	खूब सवेरे
कौतुकजन्य	–	उत्सुकता के कारण	हास्यालाप	–	हँस–हँसकर बातें करना
मेहरबानी	–	कृपा	रईस	–	अमीर

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
अंदर	अन्दर	मुसकुराते	मुस्कुराते
संदिग्ध	सन्दिग्ध	अठन्नी	अठन्नी
उद्‌विग्न	उद्विग्न	पंजे	पन्जे
खयाल	ख्याल	उज्ज्वल	उज्ज्वल

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्‌धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) मिनी ने आकर रामदयाल दरबान के बारे में क्या कहा था?
(ख) मिनी ने खिड़की के पास जाकर किसे पुकारा था?
(ग) लेखक से मिली अठन्नी का काबुलीवाले ने क्या किया था?
(घ) लेखक के पड़ोसी ने काबुलीवाले से क्या खरीदा था?
(ङ) काबुलीवाले ने जो कागज़ का टुकड़ा दिखाया, उसपर किसकी छाप थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) काबुलीवाला कौन था?
(ख) काबुलीवाले से मिनी की दोस्ती किस प्रकार हुई थी?
(ग) काबुलीवाला मिनी को बहुत चाहता था। इसके पीछे कारण क्या था?
(घ) काबुलीवाला को जेल क्यों जाना पड़ा था?
(ङ) जेल से छूटते ही काबुलीवाला कहाँ गया?

(च) कागज़ के टुकड़े पर काबुलीवाले की लड़की के हाथ की छाप देखकर लेखक के मन में क्या प्रतिक्रिया हुई?

(छ) लेखक ने पचास का नोट देते हुए काबुलीवाले से क्या कहा?

3. बताइए कि ये वाक्य किसने किससे कहे और क्यों कहे-

(क) आज हमारे घर में एक ज़रूरी काम है सो आज मैं उसमें लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।

(ख) बाबू साहब! आपकी जैसी मेरी भी देश में एक लड़की है। मैं उसकी याद करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ा-सा मेवा साथ में ले आया करता हूँ। मैं तो यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"मेरा जवाब सुनकर, वह कुछ उदास-सा हो गया। फिर "सलाम बाबू साहब!" कहकर दरवाज़े के बाहर निकल गया। मेरे हृदय में न जाने कैसी एक वेदना-सी उठी। मैं सोच ही रहा था कि उसे बुलाऊँ, इतने में देखा, तो वह खुद चला आ रहा था।"

(क) मिनी के बाबू जी का कौन-सा जवाब सुनकर रहमत उदास हो गया था?

(ख) मिनी के बाबू जी के हृदय में वेदना क्यों उठी?

(ग) रहमत फिर वापस क्यों आने लगा?

(घ) रहमत किससे मिलने के लिए गया था?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. 'मैं बिलकुल भूल ही गया कि वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक उच्च वंश का रईस हूँ। तब मैं महसूस करने लगा कि जो वह है, वही मैं हूँ।' इन पंक्तियों में छिपा भाव क्या है, वर्णन कीजिए।

2. घर वाले मिनी के पास अठन्नी देखकर समझ रहे थे कि उसने ये पैसे चोरी किए थे। आपपर कभी ऐसा इलज़ाम लगे, जब आप दोषी न हों, तब आप क्या करेंगे?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'दुहिता' के समानार्थी शब्द हैं-

(अ) दुहित, आत्मज ☑ (ब) तनया, आत्मजा ☐ (स) वामा, बेटी ☐

(ख) इस शब्द में द्वित्व व्यंजन नहीं आया है-

(अ) पक्की ☐ (ब) उद्विग्न ☐ (स) अठन्नी ☐

(ग) इनमें से अशुद्ध वाक्य है-

(अ) रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दी। ☐ (ब) रहमत ने छुरा निकालकर भोंकी। ☐

(स) रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दिया। ☐

(घ) 'उत्तर' का विलोम शब्द है-

(अ) निरुत्तर ☐ (ब) प्रश्न ☐ (स) वाक्य ☐

(ङ) 'मैले-कुचैले ढीले कपड़े पहने' में विशेषण शब्द है-

(अ) मैले-कुचैले, ढीले ☐ (ब) पहने ☐ (स) कपड़े ☐

2. इन शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए-

(क) लड़की ________ (ख) कपड़ा ________

(ग) बात ________ (घ) घूँसा ________

(ङ) खिड़की ________ (च) दरवाज़ा ________

(छ) पुस्तक ________ (ज) पैसा ________

3. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

(क) आकाश ________ ________

(ख) हाथी ________ ________

(ग) घर ________ ________

4. उचित विराम चिह्न लगाकर इन वाक्यों को दोबारा लिखिए-

(क) रहमत मिनी से कहता लल्ली तुम ससुराल कब जाओगी

____

(ख) काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा बैठा मुसकुरा रहा था

____

(ग) उसके पास न तो झोली थी न वैसे लंबे-लंबे बाल

____

(घ) कागज़ पर छोटे से पंजे की छाप थी

____

(ङ) ये अंगूर किशमिश और बादाम बच्ची के लिए लाया था

____

5. इन शब्दों के लिंग लिखिए-

(क) वेदना ________ (ख) परिचय ________

(ग) अधिकार ________ (घ) ससुराल ________

(ङ) चद्दर ________ (च) अँधेरा ________

(छ) रईस ________ (ज) समारोह ________

पुरस्कार

पाठ बोध जयशंकर प्रसाद जी द्वारा लिखित 'पुरस्कार' कहानी का यह संक्षिप्त रूप है। इस कहानी में एक कृषक कन्या के देशप्रेम एवं त्याग-बलिदान को दर्शाया गया है। इस पाठ के माध्यम से बच्चों में देशप्रेम की भावना को विकसित किया गया है।

(1)

आकाश में काले-काले बादल घुमड़ रहे थे। पर्वतमाला के अंचल में समतल भूमि से मिट्टी की गंध उठ रही थी। रथों, हाथियों और भीड़ के मध्य महाराज की सवारी बढ़ रही थी। बाजे बजने लगे और कुमारियों ने फूलों की वर्षा की।

कोशल का यह उत्सव प्रसिद्ध था। एक दिन के लिए महाराज किसान बन इंद्रदेव की पूजा कर हल जोतते थे। दूसरे राज्यों के युवक, राजकुमार उत्सव में भाग लेते थे। इस बार मगध का राजकुमार अरुण भी अपने रथ पर बैठा उत्सव देख रहा था।

बीजों का थाल लिए खेत की मालकिन कुमारी मधुलिका महाराज के साथ थी। सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे और राजकुमार अरुण देख रहा था मधुलिका का भोला सौंदर्य।

उत्सव का प्रधान कार्य समाप्त हो गया। महाराज ने मधुलिका को खेत का पुरस्कार दिया, थाल में कुछ स्वर्ण मुद्राएँ। मधुलिका ने थाली सिर से लगा ली किंतु साथ ही उसमें रखी स्वर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्योछावर करके बिखेर दिया। मधुलिका ने कहा, "देव! मेरे पितामहों की भूमि बेचना मेरे लिए अपराध है।" वृद्ध मंत्री ने कहा, "अबोध, क्या कह रही है? राजा की कृपा का तिरस्कार!" महाराज के संकेत पर मंत्री ने कहा, "देव! वाराणसी के युद्ध के वीर सिंहमित्र की यह

एकमात्र कन्या मधुलिका है। नियम के अनुसार हम उसे भूमि का चौगुना मूल्य दे रहे हैं।"

महाराज चुप रहे। सभा विसर्जित हुई। सब अपने-अपने शिविर लौट गए। मधुलिका वृक्ष की छाया में अनमनी चुपचाप बैठी रही। रात्रि-उत्सव में अरुण ने भाग न लिया। उसकी आँखों में नींद न थी। अरुण ने देखा, रक्षक सो रहे थे। वह उस वृक्ष के नीचे जा पहुँचा, जहाँ मधुलिका निद्रा का सुख ले रही थी। "कौन?" मधुलिका ने चौंककर पूछा।

"देवि! मैं मगध का राजकुमार। मैं तुम्हारे अनुग्रह का प्रार्थी हूँ। मेरा हृदय तुम्हारी छवि का दास बन गया है। मैं कोशल नरेश से तुम्हारी भूमि तुम्हें दिलवा दूँगा।"

"नहीं, मैं राष्ट्र-नियम नहीं बदलना चाहती, चाहे मुझे कितना ही दुख हो।" मधुलिका उठकर चल दी। राजकुमार लौट गया।

मधुलिका ने राजा का अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे के खेतों में काम करती और कठिन परिश्रम से जो सूखा अन्न मिलता, उसे खाकर झोंपड़ी में पड़ी रहती। आसपास के किसान उसका आदर करते थे। इस तरह दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीतने लगे।

(2)

मधुलिका बीते क्षणों को याद कर रही थी। अत्यधिक गरीबी ने उसे और अधीर कर दिया था। बाहर वर्षा ने भीषण रूप धारण कर लिया। गड़गड़ाहट बढ़ने लगी। मधुलिका अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी में काँप उठी। सहसा बाहर कुछ शब्द हुआ, "कौन है यहाँ?"

"पथिक को आश्रय चाहिए।"

मधुलिका ने डंडियों से बना द्वार खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा, एक पुरुष घोड़े पर सवार है। वह चिल्ला उठी, "राजकुमार!"

"मधुलिका!" आश्चर्य से युवक ने कहा, "तुम्हारी यह दशा!"

मधुलिका बोल उठी, "और आज आपकी यह हालत!"

"मैं मगध का विद्रोही, निकाला गया राजकुमार, कोशल में जीविका खोजने आया हूँ!"

"स्वागत है!" शीतकाल की कोहरे से घिरी चाँदनी में बैठे अरुण और मधुलिका परस्पर बात कर रहे थे।

"इतनी गरीबी में इतने सैनिक साथ रखने की क्या आवश्यकता है?"

"मैं अपने बाहुबल से नया राज्य बनाऊँगा।"

"ओह, तो तुम्हारा उत्साह कम नहीं हुआ!"

"तुम्हारी इच्छा हो तो मैं प्राणों की बाज़ी लगाकर तुम्हें कोशल के सिंहासन पर अपनी रानी के रूप में बिठा दूँ।"

मधुलिका काँप उठी, "क्या?"

"यह सत्य है मधुलिका! कोशल नरेश तुम्हारे लिए चिंतित हैं। वे तुम्हारी प्रार्थना अस्वीकार नहीं करेंगे। कोशल के सेनापति अधिकांश सैनिक लेकर दस्यु-नाश के लिए बहुत दूर गए हुए हैं।"

"जो कहोगे, वही करूँगी," मधुलिका ने कहा।

अगले दिन कोशल नरेश के दरबार में आकर मधुलिका बोली, "देव! तीन बरस हुए मेरी भूमि ले ली गई थी।"

"ओह! तो उसका मूल्य माँगने आई हो?"

"नहीं। दक्षिणी नाले के समीप उतनी ही जंगली भूमि दे दें। मैं अपनी खेती वहीं करूँगी।"

"वह भूमि! वह भूमि उबड़-खाबड़ है परंतु दुर्ग के समीप होने से सैनिक महत्व रखती है।"

"तो मैं लौट जाऊँ?"

"सिंहमित्र की कन्या, तुम निराश नहीं लौटोगी। मैं मंत्री को पत्र देने का आदेश देता हूँ।"

"जय हो देव!" कहती हुई मधुलिका राजमंदिर से बाहर आई।

दुर्ग के दक्षिणी नाले पर झाड़ियाँ काटकर मधुलिका का खेत बन रहा था।

अरुण के आदमी वहाँ स्वतंत्र घूमते। एक दिन अरुण ने कहा, "आज रात के तीसरे पहर मेरी विजय यात्रा होगी। मैं कोशल का राजा बनूँगा। आज रात झोंपड़ी में बिताओ। कल से तो राजमंदिर में तुम्हारा निवास होगा।"

मधुलिका उठ खड़ी हुई। झोंपड़ी की ओर बढ़ती हुई सोचने लगी, 'मगध, कोशल का शत्रु है। शत्रु की विजय! नरेश ने क्या कहा था। यह वीर सिंहमित्र की कन्या है।'

"नहीं, नहीं!" वह पुकार उठी।

रात का पहला पहर बीत चुका था। वह राह पर खड़ी थी। लगभग सौ अश्वारोही चले आ रहे थे। आगे-आगे सेनापति थे। वे बोले, "कौन है तू?"

"मैं अपराधी हूँ। मुझे पकड़ लो।"

"क्या है, साफ़ बता।"

"आज रात श्रावस्ती दुर्ग पर दक्षिणी नाले के पास से आक्रमण होगा। किला शत्रुओं के हाथ होगा।"

"क्या कह रही है तू?" सेनापति ने चौंककर कहा।

"मैं सत्य कह रही हूँ। शीघ्र चलो।"

सेनापति ने अस्सी सैनिकों को दक्षिणी नाले की ओर बढ़ने की आज्ञा दी और मधुलिका को साथ

लेकर स्वयं दुर्ग की ओर बढ़ गए।

अश्वारोहियों को आते देख प्रहरी चौंक गए। उन्होंने सेनापति को पहचाना। श्रावस्ती दुर्ग का द्वार खुला। सेनापति ने पूछा, "दुर्ग में कितने सैनिक होंगे?"

"सेनापति की जय हो! दो सौ।"

"बिना आवाज़ किए उन्हें दुर्ग के दक्षिणी ओर ले चलो।" सेनापति ने मधुलिका को पीछे आने का संकेत किया और राजमंदिर की ओर बढ़े। महाराज के पास जाकर बोले, "क्षमा हो देव! इसी स्त्री के कारण मुझे इस समय यहाँ आना पड़ा।"

महाराज ने कहा, "सिंहमित्र की कन्या, तुम्हें दक्षिणी नाले के समीप भूमि दे दी गई थी।"

"देव, किसी गुप्त शत्रु ने आज रात दुर्ग पर अधिकार करने का प्रबंध किया है।" इस स्त्री ने यह संदेश दिया है। महाराज ने पूछा, "मधुलिका, क्या यह सत्य है?"

"हाँ महाराज!"

"तुमने यह सूचना देकर पुरस्कार का काम किया है।" महाराज ने कहा।

(3)

राजकुमार अरुण अपने साथियों के साथ पकड़ा गया। बंदी अरुण को देखते ही जनता रोष से चिल्लाई, "प्राणदंड!, प्राणदंड!"

राजा ने सहमति दी। मधुलिका बुलाई गई। "तुम्हें जो पुरस्कार लेना हो, माँग लो।" वह चुप रही। राजा ने कहा, "मेरी अपनी जितनी खेती है, मैं सब तुम्हें देता हूँ।"

मधुलिका ने बंदी अरुण की ओर देखा और कहा, "मुझे कुछ न चाहिए।"

अरुण हँस पड़ा।

राजा ने कहा, "नहीं, मैं तुम्हें पुरस्कार अवश्य दूँगा। माँग लो।"

"तो मुझे भी प्राणदंड मिले" कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

– जयशंकर प्रसाद

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- EVALUATE
   (क) मगध का राजकुमार कौन था, वह क्या देख रहा था?
   (ख) महाराज ने मधुलिका को क्या दिया?
   (ग) राजकुमार अरुण अपने बाहुबल से क्या करना चाहता था?
   (घ) मधुलिका ने अपनी भूमि के बदले में क्या माँगा?
   (ङ) पाठ के लेखक का नाम बताइए।

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- UNDERSTAND
   (क) कोशल का कौन-सा उत्सव प्रसिद्ध था?
   (ख) मधुलिका ने उन स्वर्ण मुद्राओं का क्या किया?
   (ग) मधुलिका ने राजकुमार अरुण की मदद क्यों की?
   (घ) मधुलिका ने किस भावना से प्रेरित होकर सेनापति को सूचना दी?
   (ङ) इस कहानी में सबसे अच्छा पात्र तुम्हें कौन-सा लगा? उसकी विशेषताएँ लिखिए।
   (च) मधुलिका ने पुरस्कार में क्या माँगा?

3. नीचे दी गई पंक्तियों का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए-

   नहीं! मैं राष्ट्र नियम नहीं बदलना चाहती, चाहे मुझे कितना ही दुख हो।''

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

''देव! मेरे पितामहों की भूमि बेचना मेरे लिए अपराध है।'' वृद्ध मंत्री ने कहा, ''अबोध! क्या कह रही है? राजा की कृपा का तिरस्कार!''

(क) पितामहों की भूमि बेचना किस प्रकार का अपराध था?
(ख) 'अबोध' शब्द किसके लिए आया है?
(ग) राजा की किस कृपा का तिरस्कार किया गया?
(घ) मधुलिका की भूमि कौन खरीदना चाहता था?
(ङ) 'तिरस्कार' का क्या अर्थ होता है?
(च) 'देव' का विलोम शब्द क्या होगा?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. 'पुरस्कार' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने देशप्रेम एवं अपने पूर्वजों की भूमि के प्रति अत्यंत प्रेम एवं निष्ठा को दर्शाया है। देशप्रेम एवं पूर्वजों की भूमि का कोई मूल्य नहीं होता है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'देशप्रेम' विषय पर दो-दो मिनट की समय सीमा में कक्षा के सामने अपने-अपने विचार रखिए।
3. किन्हीं दो ऐतिहासिक न्यायप्रिय राजाओं के चित्र लगाकर उनके बारे में दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-
   (क) 'आक्रमण' का समानार्थी शब्द है-
   (अ) रक्षा ☐ (ब) हमला ☐ (स) संधि ☐
   (ख) 'वे तुम्हारी प्रार्थना अस्वीकार नहीं करेंगे' में 'वे' और 'तुम्हारी' ______ शब्द हैं-
   (अ) संज्ञा ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) विशेषण ☐
   (ग) 'आकाश में काले-काले बादल घुमड़ रहे थे' में काले-काले एक ______ शब्द है-
   (अ) विशेषण ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) संज्ञा ☐
   (घ) 'राज्य' का बहुवचन है-
   (अ) राज्यायों ☐ (ब) राज्यों ☐ (स) राज्यें ☐
   (ङ) इनमें से शुद्ध शब्द है-
   (अ) सौंदर्य ☐ (ब) सौनर्दय ☐ (स) सोन्दर्य ☐

2. पाठ में आए शब्दों के विलोम लिखिए-

दंड	×	______	शत्रु	×	______
रक्षक	×	______	सत्य	×	______
सुख	×	______	स्वीकार	×	______

Ahan Das, VII

3. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

उत्सव - ______ ______

दिन - ______ ______

रात्रि - ______ ______

नरेश - ______ ______

स्वर्ण - ______ ______

4. पाठ में आए शब्दों के लिंग बदलिए-

राजकुमार - ______ देव - ______

मालिक - ______ दास - ______

बंदी - ______ युवक - ______

महाराज - ______ वृद्ध - ______

हाथी - ______ बैल - ______

5. पाठ में 'र' के रूपों- स्वर रहित और स्वर सहित का खूब प्रयोग हुआ है। दोनों प्रकार के शब्दों की सूची बनाइए-

रेफ़ र ______

______

पदेन र ______

______

6. पर्वतमाला - पर्वतों की माला

राजकुमार - राजा का कुमार

दो शब्दों का मेल समास कहलाता है। ऊपर लिखे शब्द सामासिक शब्द हैं।

विभक्तियों का प्रयोग कर सामासिक पदों का विग्रह किया गया है।

नीचे लिखे शब्दों में विभक्ति लगाकर विग्रह कीजिए-

बाहुबल - ______

अश्वारोही - ______ सेनापति - ______

प्राणदंड - ______

7. उचित कारक चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य पूरे कीजिए-

(क) दक्षिणी नाले ______ समीप उतनी ही जंगली भूमि दे दें।

(ख) रात्रि उत्सव ______ अरुण ______ भाग नहीं लिया।

(ग) वह दूसरे ______ खेतों ______ काम करती थी।

(घ) सेनापति ______ मधुलिका ______ पीछे आने ______ संकेत किया।

4

मैंने तैरना सीखा

पाठ बोध प्रस्तुत गद्य रचना हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में लिखी गई है। लेखक ने तैरना सीखने से संबंधित अनुभवों का वर्णन आत्मकथात्मक शैली में किया है।

मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला – संसार में अनेक कलाएँ हैं। सबका अलग-अलग माध्यम है। कवि न होकर भी काव्य-कला का ज्ञान आपको हो सकता है। तानसेन न होने पर भी आप संगीत की बारीकी समझ सकते हैं, किंतु तैरने की सब टेक्निक जानने के बाद भी यह आवश्यक नहीं है कि आप तैर भी सकें।

आप किसी पुस्तक में पढ़ लीजिए कि पानी में जब खड़ा होना हो तब आपकी कमर नब्बे **डिग्री** का कोण बनाए, आपका हाथ पैंतालीस डिग्री का और आपकी आँख तीस डिग्री का परंतु यदि इतने के बल पर ही आप पानी में कूद पड़ें, तो बिना पासपोर्ट के सीधे अमेरिका की ओर चले जाएँगे। यही एक कला है, जिसमें पांडित्य तथा क्षमता प्राप्त करने के लिए आपको सशरीर माध्यम में प्रवेश करना पड़ता है। मूर्ति बनाने के लिए यदि कोई पत्थर पर सिर टकराए तो मूर्तिकार बनने से पहले उसे कुछ दिन किसी अस्पताल की **स्प्रिंगदार** चारपाई पर आराम करना होगा। संगीत के स्वरों पर **मास्टरी** करने के लिए यदि बाजों से आप बजने लगें तो आपको सिफ़ारिश करके किसी ऐसे कारखाने में जाना होगा, जिसमें मस्तिष्क की मरम्मत होती है। परंतु इसके पहले कि आप तैरने का क-ख भी जान सकें, आपको ऐसे जलसे में जाना होगा, जहाँ की महफ़िल जल से ही होती है। आपको अपने पाणि-पल्लव से पानी का परिरंभण करना होगा और जीवन से जीवन की बाज़ी लगानी होगी।

उत्तर प्रदेश में दो बहती नदियाँ हैं– गंगा और यमुना। यमुना के किनारे रहने वाले रासलीला करते हैं और गंगा के तट के

निवासी गंगा जी की पूजा के अभ्यासी हो जाते हैं। किंतु तैरना दोनों का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है। कहते हैं, इन दोनों पवित्र सरिताओं का निवासी यदि तैरना न जानता हो तो वह वैसा ही है, जैसे टैक्सस के किनारे का रहने वाला बॉल-डांस न जानता हो, मिसीसिपी के तट का वासी रॉक-एन-रोल न जानता हो और राइन का पानी पीने वाला व्याकरण न जानता हो।

विधि का कुछ ऐसा विधान हुआ कि इस बार मेरा जन्म गंगा के किनारे काशी नगरी में हुआ। काशी का माहात्म्य हमसे पहले के लोग भी कह गए हैं। मैं केवल यदि उसमें जोड़ना चाहता हूँ तो केवल इतना कि काशी अब वाराणसी हो गया है। यहाँ का लँगड़ा बहुत दूर-दूर तक पहुँच जाता है।

यहाँ की मिट्टी दूसरे जन्म में सोना हो जाती है और यहाँ कपड़ा कम पहनिए तो महाजन और न पहनिए तो देवता हो जाइए। यहाँ गंगा का वही महत्व है, जो सरकारी कागज़ों पर साइन का, विवाह में नाइन का तथा रेलवे में **लाइन** का। इस तरह गंगा के किनारे रहकर तैरना जानना भी ज़रूरी था। सभी का आग्रह था, ज़ोर था, दबाव था कि मैं तैरना सीख लूँ। मैंने निश्चय किया, तैरना सीखूँगा।

अब मैं गुरु की खोज करने लगा। कविता वही ऊँची, जिस पर दिमाग की सीढ़ी चढ़ न सके और **डॉक्टर** वही बड़ा, जिसका पुरज़ा कोई पढ़ न सके। हमारे नगर में एक व्यायाम के महापंडित थे। बड़ा नाम था। लोगों का कहना था कि यह दिल्ली में डुबकी लगाते थे तो आगरा आकर निकलते थे। मुझे इस पर विश्वास कम था। हाँ, दिल्ली से मथुरा आ सकते होंगे। जल पर उनका प्रभाव असीम था। उनके चेले भी देश-विदेशों में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। यों तो वे आसन, प्राणायाम तथा उनके शारीरिक कसरतों के उस्ताद माने जाते थे, परंतु तैरना तो उनके लिए वैसा ही था, जैसे मच्छर के लिए मसहरी में घुस जाना। मैंने उन्हीं से तैरना सीखने के मेरे प्रस्ताव का स्वागत किया। पाँच **मिनट** तैरने के लाभों पर भाषण भी दिया। दो अवसरों पर मुझे जाना पड़ा कि भाषण की बीमारी बहुत व्यापक है। रक्तचाप रोग के समान। मैं समझ गया कि संसार से सारे रोग दूर हो सकते हैं, देशों की आपसी लड़ाई बंद हो सकती है, चंद्रमा पर धान की खेती हो सकती है किंतु भाषण देना बंद नहीं हो सकता। भाषण में उन्होंने तैरने के जितने लाभ बताए, उतने किसी **विटामिन** से संभव नहीं, न किसी **इंजेक्शन** से, न मंत्र से। उन्होंने कुछ लेना स्वीकार नहीं किया। तैरने की शिक्षा देने में उनका एकमात्र उद्देश्य देश की सेवा थी। युवकों को देश-सेवा के योग्य बनाना था। शांति में, युद्ध में, यात्रा में, प्रेम में तैरने का महत्व ही नहीं, उपयोगिता भी थी, जिसकी सूची यहाँ देना आवश्यक नहीं है।

शनिवार का दिन था। मई का महीना और पाँच बजे संध्या का समय। गंगा के तट पर पहुँचा। मेरे भावी गुरु वहाँ उपस्थित थे। और भी दो-तीन शिष्य जिन्हें तैराकी कला में पारंगत होना था, वहाँ जाँघिया पहने घाट पर मौजूद थे। जानकारी के लिए बता देना आवश्यक है कि वाराणसी में गंगा के किनारे, सड़क से जल तक पत्थर की सीढ़ियाँ बनी हैं। जैसे पुराने ज़माने में रोम में **थियेटर** होते थे। मंच के चारों ओर सीढ़ियाँ बनी रहती थीं। जिन पर साधारण लोग बैठकर तमाशा देखते थे। पानी के ऊपर सीढ़ियों पर बैठकर लोग मालिश कराते हैं, हज़ामत बनवाते हैं, सवेरे बारह महीनों और गरमी के दिनों में संध्या को भी यहाँ युवक और युवती, बालक और बालिका, वृद्ध और वृद्धा एकत्र रहते

हैं। वाराणसी में इसका वही महत्त्व है, जो कोलकाता में चौरंगी का, मुंबई में चौपाटी का, लखनऊ में हजरतगंज का और दिल्ली में कनाट सरकस का। इसी स्थान पर मुझे तैरना सीखना था। मेरे गुरु जी ने यहाँ पुनः एक भाषण दिया, जो भगवान की दया से छोटा था। उन्होंने तैरना सीखने में अभ्यास तथा **स्टाइल** पर ज़ोर दिया। बोले, "जो महत्व सरकार के यहाँ **फ़ाइल** का, शरीर में बाइल का, उससे अधिक महत्व तैरने में स्टाइल का है।" इतना कहने के बाद उन्होंने आज्ञा दी, "पानी में उतरिए।" मुझे उस समय जल से भी भय लगने लगा। किंतु मैंने साहस बटोरा और पानी में उतरने लगा। मेरी गति से, मेरे हाव-भाव से, मेरे चेहरे की भाव-भंगिमा से लोगों को यह जान पड़ा होगा कि मेरे मन में भय अठखेलियाँ कर रहा है, क्योंकि सभी की आँखें मेरी ओर इस प्रकार देख रही थीं, मानो मनुष्य नहीं, कोई चिड़ियाघर का निवासी तैरने जा रहा है।

एक के बाद एक मेरे पाँव पानी में धँसे। मैं उतरता गया। सामने गंगा का जल फैला हुआ था, जैसे स्फटिक का विशाल पर्दा बिछा हो, दाहिने और बाएँ पानी-पानी। मंद गति से धारा बहती चली जा रही थी, जैसे कोई विशाल अजगर रेंग रहा हो। मैंने देखा, पश्चिम में सूर्य मुझ पर ही मुसकरा रहा है। इधर-उधर लोग उत्सुकता से देख रहे थे कि कोई नया खेल होने वाला है। इधर मेरा हाल तो बुरा ही था। सुनने और देखने की शक्ति ही जैसे समाप्त हो गई थी। उसी समय मुझे गुरु जी का स्वर सुनाई दिया, "चिंता न करो, गंगा परम पावनी है। इसमें जो डूबता है, वह भी सीधा स्वर्ग जाता है।" अब तो मेरा विवेक भी गायब हो गया। गुरु जी मुझे हाथ-पैर चलाना सिखा रहे थे और मैं सीधा स्वर्ग जा रहा था। परंतु मरता क्या न करता?

मैं फटाफट हाथ-पैर मारने लगा। गुरु जी ने मुझे थोड़ा और धक्का दे दिया और मैं पाँच-छह हाथ पानी में आगे चला गया। अब तक मैं खंभे की तरह खड़ा था, अब शहतीर की तरह लेट गया। हाथ तो चल ही रहे थे, कभी एक हाथ उठता, कभी दूसरा। फिर मैं पानी के अंदर जाने लगा, जैसे टारपीडो लगने पर जहाज़ जल-समाधि लेने लगता है। मेरी आँखों के आगे लाल सागर लहरा रहा था। जान पड़ता था, गंगा छोड़कर **रेड सी** में आ गया हूँ। सागर में डूबकर जैसे मुझे भगवान विष्णु के दर्शन हो गए थे। गंगाजल का कितना सेवन कर गया, यह तो याद

ही नहीं है, परंतु न जाने कैसे सिर पानी के ऊपर निकल आया। पानी भी पेट में गया था, ऊपर से हवा भी। लगा कि सचमुच मर तो नहीं गया हूँ, मरने वाला हूँ। तभी मुझे गुरु जी ने घाट की ओर धक्का दिया। मुझे भी पानी में डूबने से घाट पर आकर मरना अच्छा लगा। हाथ-पैर तो चला ही रहा था, इसी बीच थाह की सीढ़ी आ गई। गुरु जी ने कहा, "खड़े हो जाओ?" ऐसा जान पड़ता था, चार घंटे कत्थक नृत्य करके आया हूँ। अब मैं घाट पर था। आँख, कान, नाक, मुँह तथा सारे शरीर से पानी टपक रहा था, मानो स्पंज की मूर्ति किसी ने खड़ी कर दी हो और उसे कोई दबा रहा है। गुरु जी ने कहा, "लो, तैरना आ गया।"

– बेढब बनारसी

शिक्षण संकेत- शिक्षकगण बच्चों को तैराकी के विभिन्न पोज़ेज़ के बारे में ज्ञानवर्धन करें। उन्हें तैराकी से मानव जीवन को मिलने वाले लाभ से अवगत कराएँ।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – टेक्निक, डिग्री, पासपोर्ट, स्प्रिंग, मास्टरी, बॉल-डांस, रॉक-एन-रोल, लाइन, डॉक्टर, मिनट, विटामिन, इंजेक्शन, थियेटर, स्टाइल, फ़ाइल, बाइल, स्फटिक, तारपीडो, रेड सी

शब्द बोध-

REMEMBER

टेक्निक	–	तरीका	पासपोर्ट	–	पारपत्र
पाणि-पल्लव	–	पत्ता रूपी हाथ	परिरंभण	–	आलिंगन या मिलना
बॉल-डांस	–	एक विदेशी नृत्य	रॉक-एन-रोल	–	एक विशेष नृत्य
राइन	–	जर्मनी की एक नदी	लँगड़ा	–	एक पैर से अपंग
रोम	–	एक प्राचीन नगर	बाइल	–	पित्त
स्फटिक	–	पारदर्शी पत्थर	शहतीर	–	लट्ठा
टारपीडो	–	जहाज़ तोड़ने वाले बारूदी अस्त्र	स्पंज	–	पानी सोखने वाली वस्तु

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
किंतु	किन्तु	जन्मसिद्ध	जन्मसिद्ध
मिट्टी	मिट्टी	बंद	बन्द
संभव	सम्भव	मंत्र	मन्त्र
उद्देश्य	उद्देश्य	शांति	शान्ति

युद्ध	युद्ध	वृद्ध	वृद्ध
वृद्धा	वृद्धा	खंभे	खम्भे
अंदर	अन्दर	परंतु	परन्तु

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- EVALUATE

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) पानी में कैसे खड़े रहना चाहिए?
(ख) तैरना सीखने के लिए क्या करना पड़ता है?
(ग) लेखक तैरना क्यों सीखना चाहता था?
(घ) गंगा तट का महत्व किसके समान बताया गया है?
(ङ) लेखक को तैरता देखकर गुरुजी ने क्या कहा?
(च) लेखक एवं पाठ का नाम बताइए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- UNDERSTAND

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) लेखक ने काशी के बारे में क्या कहा है?
(ख) पाठ के आधार पर गंगा का महत्व लिखिए।
(ग) महापंडित की क्या विशेषता थी?
(घ) लेखक ने भाषण की बीमारी को व्यापक क्यों बताया है?
(ङ) निःशुल्क तैरने की शिक्षा देने के पीछे पंडित जी का क्या उद्देश्य था?

3. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरकर अवतरण को पूरा कीजिए-

गुरु जी ने ____________ और ____________ दे दिया। मैं पाँच-छह ____________ ____________ पानी में चला गया। अब तक ____________ की तरह खड़ा था, अब ____________ की तरह लेट गया। हाथ तो चल ही रहे थे, कभी एक ____________ उठाता, कभी दूसरा। फिर मैं पानी के ____________ जाने लगा, जैसे ____________ लगने पर जहाज़ ____________ ____________ लेने लगता है। मेरी ____________ के आगे ____________ लहरा रहा था। जान पड़ता था, गंगा छोड़कर ____________ में आ गया हूँ।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

उत्तर प्रदेश में दो बहती नदियाँ हैं- गंगा और यमुना। यमुना के किनारे रहने वाले रासलीला करते हैं और गंगा के तट के

निवासी गंगा जी की पूजा के अभ्यासी हो जाते हैं। किंतु तैरना दोनों का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है।

(क) उत्तर प्रदेश में कितनी नदियाँ बहती हैं?

(ख) तैरना किनका जन्मसिद्ध अधिकार है?

(ग) रासलीला कौन करते हैं?

(घ) गंगा तट के निवासी क्या करते हैं?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. जीवन में तैराकी का क्या महत्व है? इस विषय पर बातचीत कीजिए।
2. 'प्रदूषित होती नदियाँ' विषय पर अनुच्छेद लिखिए।
3. अगर इसी तरह जल-प्रदूषण बढ़ता रहा तो एक दिन नदियों का पानी सूख जाएगा। उस समय पशु-पक्षियों एवं मानव-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'युवक' का स्त्रीलिंग है-
(अ) युवकों ☐ (ब) युवती ☐ (स) युवा ☐

(ख) 'चिंता न करो, गंगा परम पावनी है' में 'गंगा' एक ______________ शब्द है-
(अ) संज्ञा ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) विशेषण ☐

(ग) 'महफिल' ______________ का शब्द है-
(अ) फ़ारसी ☐ (ब) उर्दू ☐ (स) अंग्रेजी ☐

(घ) 'मरता क्या न करता' मुहावरे का अर्थ है-
(अ) मरते-मरते काम पूरा करना ☐ (ब) मजबूरी में आदमी सब कुछ करता है ☐
(स) काम करते-करते मर जाना ☐

(ङ) 'वाराणसी' का प्राचीन नाम है-
(अ) मधुरा ☐ (ब) काशी ☐ (स) आगरा ☐

2. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

भाग्य - ______________ ______________

गंगा - ______________ ______________

कपड़ा - ____________ ____________

कान - ____________ ____________

3. दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए-

कला - ____________ बारीकी - ____________

पुस्तक - ____________ कविता - ____________

नदी - ____________ अठखेली - ____________

4. पाठ में आए शब्दों के विलोम लिखिए-

बंद × ____________ शिष्य × ____________

बारीक × ____________ बीमार × ____________

प्रेम × ____________ संभव × ____________

5. वाक्य में कर्ता और क्रिया का होना अनिवार्य होता है।

'मैं खोज करने लगा' - इस वाक्य में (मैं) कर्ता तथा 'खोज करने लगा' क्रिया है। कर्ता को उद्देश्य तथा क्रिया + कर्म को विधेय कहा जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य तथा विधेय को अलग-अलग करके लिखिए-

	उद्देश्य	विधेय
(क) यहाँ की मिट्टी दूसरे जन्म में सोना हो जाती है।	____________	____________
(ख) मैं फटाफट हाथ-पैर मारने लगा।	____________	____________
(ग) सागर में डूबकर भगवान विष्णु के दर्शन हो गए थे।	____________	____________
(घ) लोग उत्सुकता से देख रहे थे।	____________	____________

6. आज हमारे गृह में ग्रह पूजा है।

उपर्युक्त वाक्य में 'गृह' तथा 'ग्रह' शब्द उच्चारण की दृष्टि में तथा सुनने में लगभग समान हैं परंतु इनका अर्थ भिन्न-भिन्न है। पहले 'गृह' का अर्थ घर तथा दूसरे 'ग्रह' का अर्थ नक्षत्र है। अतः जिन शब्दों का उच्चारण लगभग समान हो पर अर्थ भिन्न-भिन्न हों, वे श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

निम्नलिखित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए-

पानी - ____________

पाणि - ____________

तरणी - ____________

तरणि - ____________

पथ - ____________

पथ्य - ____________

5

पिता का पत्र

पाठ बोध राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जेल प्रवास के समय अनेक रचनाएँ रचीं जिनका वर्तमान समय में बहुत महत्व है क्योंकि उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। यहाँ उनके द्‌वारा लिखे उस पत्र को उद्‌धृत किया जा रहा है, जो उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को लिखा था। यह पत्र हमें आज भी प्रेरणा देता है।

ट्रांसवाल जेल
25 मार्च, 1909

प्रिय पुत्र

प्रतिमास एक पत्र लिखने और एक पत्र प्राप्त करने का अधिकार मुझे मिलता है। अब मैं पत्र लिखूँ किसे? **मिस्टर** रीच, मिस्टर पोलक और तुम्हारा खयाल मुझे बारी-बारी से आया लेकिन मैंने तुम्हें ही लिखना पसंद किया। मेरे बारे में तुम ज़रा भी चिंता मत करना। विशेष कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं है। मैं पूर्णरूप से शांति में हूँ।

आशा है कि 'बा' अब अच्छी हो गई होंगी। मुझे मालूम है कि तुम्हारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं लेकिन मुझे दिए नहीं गए। फिर भी **डिप्टी गवर्नर** की उदारता से मुझे मालूम हुआ कि 'बा' का स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्या वह फिर से चलने-फिरने लगीं?

अब कुछ तुम्हारे विषय में कहना चाहूँगा। तुम कैसे हो? तुम पर जो जवाबदारी मैंने डाली है, तुम उसके सर्वथा योग्य हो और आनंद से उसे निभा रहे होगे, ऐसी आशा मुझे है।

मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। जेल में मैंने यहाँ खूब पढ़ा है। इससे मैं यही समझता हूँ कि केवल अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र निर्माण और कर्तव्य का बोध है।

यदि यह दृष्टिकोण सही है और मेरे विचार से तो यह बिलकुल ठीक है, तो तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो, इससे अच्छा और क्या हो सकता है? रामदास और देवदास को भी तुम सँभाल रहे हो। यदि यह काम तुम अच्छी तरह और

आनंद से करते हो, तो तुम्हारी आधी शिक्षा तो इसके दवारा ही पूरी हो जाती है।

उपनिषदों की समालोचना में नत्थूराम जी ने लिखा है, उसमें एक वाक्य का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कहा है कि प्रथम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम, संन्यास आश्रम के समान है। यह बात सही है। आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देता है। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को जवाबदारी और कर्तव्य का भान होना चाहिए। उन्हें अपने आचार-विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए और वे इसे भार समझकर न करें बल्कि एक आनंद का अनुभव करते हुए करें।

यह आनंद कृत्रिम भी नहीं होना चाहिए। यह सरल और स्वाभाविक होना चाहिए। मुझे राजकोट के कई ऐसे लड़के याद आते हैं, मैं स्वयं भी जब तुमसे काफ़ी छोटा था तो मुझे अपने पिता जी की सेवा करने में बहुत आनंद मिलता था। बारह वर्ष की आयु के बाद आमोद-प्रमोद का बहुत ही कम बल्कि नहीं के समान ही अवसर मुझे मिला है।

संसार में तीन चीज़ें महत्वपूर्ण हैं, इनको प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे। ये तीन बातें हैं– अपनी आत्मा का, अपने आपका और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें अक्षर ज्ञान नहीं मिलेगा। वह तो मिलेगा ही लेकिन तुम उसकी चिंता करो, यह मैं नहीं चाहता। इसके लिए तुम्हारे पास अभी बहुत समय है। अक्षर ज्ञान तो इसलिए होता है कि जो कुछ तुम्हें मिला, उसे तुम दूसरों को दे सको।

इतना और याद रखना कि अब से हमें गरीबी में रहना है। जितना अधिक मैं विचार करता हूँ, उतना ही अधिक मुझे लगता है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है।

खेत में घास खोदने और गड्ढे भरने में पूरा समय देना। भविष्य में तुम्हें अपना जीवन-निर्वाह इससे ही करना है। मेरी इच्छा है कि अपने परिवार में तुम एक योग्य किसान बनो। सभी औज़ारों को सदा साफ़ और सुव्यवस्थित रखना।

अक्षर ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देना। भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध होगी। ये दोनों विषय बड़ी उम्र में सीखना कठिन है। संगीत में भी बराबर रुचि रखना। हिंदी, गुजराती और अंग्रेज़ी के चुने हुए भजनों और कविताओं का एक संग्रह तुम्हें तैयार रखना चाहिए। वर्ष के अंत में तुम्हें अपना यह संग्रह बहुत मूल्यवान प्रतीत होगा। काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ? शांतचित्त से विचारपूर्वक तुमने यदि सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो तुम्हारे लिए ये बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। तुमसे मुझे यह भी आशा है कि घर-खर्च के लिए जो भी तुम खर्च करते हो, उसका पैसे-पैसे का हिसाब रखते हो।

मुझे यह भी आशा है कि तुम रोज़ शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करते होगे और रविवार को 'वेस्ट' के यहाँ भी प्रार्थना में जाते होगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रार्थना प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय में ही करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हारे अपने जीवन में आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्र को पढ़कर, अच्छी तरह समझ लेने के बाद मुझे जवाब लिखना। जवाब जितना लंबा हो, उतना लिख सकते हो। अंत में अपने प्रेम सहित यह पत्र मैं समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा पिता

मोहनदास

शिक्षण संकेत- बच्चों को पत्र-लेखन के नियम एवं विधि की जानकारी दें। उन्हें पत्रों के प्रकार के विषय में बताएँ तथा पत्र-लेखन के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। हम उन्हें प्यार से 'बापू' पुकारते हैं। इनका जन्म 2 अक्टूबर, सन् 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ। सभी स्कूलों और शासकीय संस्थानों में 2 अक्टूबर को इनकी जयंती मनाई जाती है। इन्हीं की प्रेरणा से हमारा देश 15 अगस्त, सन् 1947 को आज़ाद हुआ। गांधी जी के पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। इनकी माता का नाम पुतलीबाई था। वह धार्मिक विचारों की थीं। गांधी जी ने हमेशा सत्य और अहिंसा के लिए आंदोलन चलाए। वे वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भी गए थे। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। एक बार एक मुकदमे की पैरवी के लिए वे दक्षिण अफ्रीका भी गए थे। वे अंग्रेज़ों दवारा भारतीयों पर अत्याचार होते देख बहुत दुखी हुए। उन्होंने 'डांडी यात्रा' भी की। गांधी जी की 30 जनवरी, सन् 1948 को प्रार्थना-सभा में नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – जेल, मिस्टर, डिप्टी गवर्नर

शब्द बोध- REMEMBER

विशेष	–	खास	सर्वथा	–	पूरी तरह
दृष्टिकोण	–	नज़रिया, सोचने का तरीका	समालोचन	–	गुण-दोषों की विवेचना
ब्रह्मचर्य	–	इंद्रियों पर संयम की अवस्था	कृत्रिम	–	नकली
महत्वपूर्ण	–	ज़रूरी, विशेष	जीवन-निर्वाह	–	जीवन बसर करना
सुव्यवस्थित	–	ठीक ढंग से	मूल्यवान	–	कीमती
सद्‌गुण	–	अच्छे गुण	नियमितता	–	नियम पालन
जवाब	–	उत्तर	पत्र	–	चिट्‌ठी

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
पसंद	पसन्द	चिंता	चिन्ता
शांति	शान्ति	द्‌वारा	द्वारा
आनंद	आनन्द	गड्‌ढे	गड्ढे
सिद्‌ध	सिद्ध	अंत	अन्त
लंबा	लम्बा		

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) महात्मा गांधी ने किसे पत्र लिखा?
(ख) गांधी जी ने सच्ची शिक्षा किसे कहा है?
(ग) गांधी जी के अनुसार महत्वपूर्ण विषय कौन से हैं?
(घ) अक्षर ज्ञान किस लिए प्राप्त किया जाता है?
(ङ) गांधी जी अपने पुत्र को क्या बनाना चाहते थे?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) गांधी जी ने अपने पुत्र के ऊपर किस प्रकार की जवाबदारी डाली थी?

(ख) गांधी जी के अनुसार बच्चों को बारह वर्ष की उम्र के बाद किस कर्त्तव्य का भान होना चाहिए?

(ग) अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद क्यों है?

(घ) शांतचित्त से सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की शिक्षा गांधी जी ने क्यों दी?

(ङ) गांधी जी ने कौन-कौन से विषयों को उपयोगी बताया है?

3. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरिए-

(क) मिस्टर ____________, मिस्टर ____________ और ____________ खयाल मुझे बारी-बारी से आया।

(ख) मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपनी ____________ के प्रति असंतोष है।

(ग) आचार-विचार में ____________ और ____________ के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए।

(घ) सभी ____________ को सदा साफ़ और सुव्यवस्थित रखना।

(ङ) अमीरी की तुलना में ____________ अधिक मूल्यवान है।

4. वाक्यों को पाठ के क्रमानुसार पुनः लिखिए-

(क) खेत में घास खोदने में पूरा समय देना। ____________

(ख) संसार में तीन चीज़ें महत्त्वपूर्ण हैं। ____________

(ग) केवल अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। ____________

(घ) तुम उसके सर्वथा योग्य हो। ____________

(ङ) मैं पूर्णरूप से शांति में हूँ। ____________

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

'संसार में तीन चीज़ें महत्वपूर्ण हैं, इनको प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे। ये तीन बातें हैं- अपनी आत्मा का, अपने आपका और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें अक्षर ज्ञान नहीं मिलेगा।''

(क) संसार में कौन-सी तीन चीज़ें महत्वपूर्ण हैं?

(ख) यह बात किसने-किससे कही है?

(ग) सच्चे ज्ञान से क्या आशय है?

(घ) अक्षर ज्ञान न मिलने का क्या तात्पर्य है?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. कभी आपके माता-पिता ने आपको कोई काम सौंपा और आपने उसे बखूबी निभाया। अपना अनुभव कक्षा में बताइए।
2. आज के युग में भी 'सत्य, अहिंसा का मार्ग ही श्रेष्ठ है'। इस विषय पर अपनी कल्पना से लिखिए।
3. 'समय का सदुपयोग' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'प्रमोद' का विलोम शब्द है-

(अ) खुशी ☐ (ब) दुःख ☐ (स) प्रसन्नता ☐

(ख) 'कृत्रिम' का पर्यायवाची शब्द है-

(अ) प्राकृतिक ☐ (ब) बनावटी ☐ (स) असली ☐

(ग) 'दृष्टिकोण' दो शब्दों को मिलाकर बनाया गया है, इसी प्रकार दृष्टि में कौन-सा विकल्प जोड़ने से नया शब्द बनेगा-

(अ) हीन ☐ (ब) दान ☐ (स) दो ☐

(घ) 'प्रतिमास' का अर्थ है-

(अ) हर साल ☐ (ब) हर महीने ☐ (स) हर सप्ताह ☐

(ङ) 'उदार' में 'ता' प्रत्यय लगाने से ________ शब्द बनता है-

(अ) उदरता ☐ (ब) उदारता ☐ (स) उद्रारता ☐

2. अनुस्वार एक स्वर रहित व्यंजन है जबकि अनुनासिक स्वरों का गुण है। प्रत्येक स्वर अनुनासिक होता है। आइए पढ़िए-

अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं

(क) वर्ण-विच्छेद कीजिए-

लिखूँ = ल् + ___ + ख् + ___

मैं = ___ + ऐं

यहाँ = ___ + ___ + ___ + आँ

उन्होंने = ___ + ___ + ___ + ओं + ___ + ___

बातें = ___ + ___ + ___ + ___

(ख) अनुस्वार पढ़िए और पहचानिए-

आनन्द	-	आनंद	सङ्ग्रह	-	संग्रह
पसन्द	-	पसंद	लम्बा	-	लंबा

3. पाठ में आए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए-

शांत	-	____________	उदार	-	____________
गरीब	-	____________	योग्य	-	____________
अच्छा	-	____________	सरल	-	____________
गहरा	-	____________	सत्य	-	____________
सच्चा	-	____________	छोटा	-	____________
ज्ञानी	-	____________	हिंसक	-	____________

4. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए-

(क) प्रतिमास पत्र लिखने की अधिकार मैं प्राप्त था। ____________

(ख) मैं संपूर्ण रूप से शांति में है। ____________

(ग) मैं जानती हूँ कि तुम्हें अपना शिक्षा के प्रति असंतोष है। ____________

(घ) तुम्हारा आधा शिक्षा तो इसके द्वारा पूरी हो जाता है। ____________

(ङ) जेल में मुझे यहाँ खूब पढ़ी है। ____________

5. वाक्य-विचार

भाषा में अनेक ऐसे शब्द आते हैं जिनके अर्थ में बहुत थोड़ा अंतर होने के कारण उन्हें प्रायः एक दूसरे का समानार्थी समझ लिया जाता है परंतु वास्तव में उनमें अर्थ का अंतर होता है, अतः वे अर्थभेदवाले शब्द कहलाते हैं।

पाठ में प्रयुक्त कुछ ऐसे ही शब्दों के अर्थ पढ़िए-

अमूल्य	जिसका कोई मूल्य न हो	**ध्यानपूर्वक**	ध्यान लगाकर
बहुमूल्य	जिसका मूल्य बहुत अधिक हो	**विचारपूर्वक**	विचार करके
आयु	जीवन काल	**अक्षर ज्ञान**	(वर्णों) शब्दों का ज्ञान
अवस्था	हालत, दशा	**शिक्षा**	विद्या, ज्ञान

6

अन्याय के विरोध में

पाठ बोध अंतोन चेखव की प्रस्तुत कहानी का सीधा-सा संदेश है कि स्वयं को भला दिखाने के उपक्रम में दब्बू और बोदा बने रहना कदापि उचित नहीं होता। अन्याय का प्रतिवाद तो होना ही चाहिए।

कुछ दिन पहले की बात है। मैंने अपने बच्चों की गवर्नेस जूलिया को अपने पढ़ने के कमरे में बुलाया और कहा, "बैठो जूलिया! मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे खयाल से तुम्हें पैसों की ज़रूरत होगी और जितना मैं तुम्हें अब तक जान सका हूँ, मुझे लगता है, तुम अपने आप तो कभी पैसे माँगोगी नहीं। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाह रहा हूँ। हाँ! तो बताओ तुम्हारी कितनी तनख्वाह तय हुई थी? तीस रूबल महीना तय हुई थी ना?"

"जी नहीं, चालीस रूबल महीना।" जूलिया ने दबे स्वर में कहा।

"नहीं भाई तीस। मैंने **डायरी** में **नोट** कर रखा है। मैं बच्चों की गवर्नेस को हमेशा तीस रूबल महीना ही देता आया हूँ। अच्छा... तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं...।"

"जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।"

"क्या कह रही हो! ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। तो दो महीने के बनते हैं– साठ रूबल! लेकिन साठ रूबल तभी बनेंगे, जब महीने में एक भी नागा न हुआ हो। तुमने इतवार को छुट्टी मनाई है। उस दिन तुमने काम नहीं किया। कोल्या को सिर्फ़ घुमाने ले गई हो। इसके अलावा तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं...।"

जूलिया का चेहरा पीला पड़ गया। वह बार-बार अपने **ड्रेस** की

सिकुड़नें दूर करने लगी। बोली एक शब्द भी नहीं।

हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ यानी बारह दिन काम नहीं हुआ। मतलब यह कि तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ़ तान्या को ही पढ़ाया। पिछले सप्ताह शायद तीन दिन हमारे दाँतों में दर्द रहा था और मेरी बीबी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्टी दे दी थी। तो इस तरह तुम्हारे कितने नागे हो गए? बारह और सात उन्नीस। उन्नीस नागे। हाँ तो भाई घटाओ साठ में से उन्नीस...। तुम्हारा कितना हिसाब बन रहा है? इकतालीस। इकतालीस रूबल। ठीक है न?

जूलिया की आँखों में आँसू छलछला आए। उसने धीरे से खाँसा। उसके बाद अपनी नाक पोंछी लेकिन उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

"हाँ एक बात तो मैं भूल ही गया था," मैंने डायरी पर नज़र डालते हुए कहा, "पहली जनवरी को तुमने चाय की **प्लेट** और प्याली तोड़ डाली थी। प्याली का दाम तुम्हें पता भी है? मेरी किस्मत में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है। चलो, मैं उसके दो रूबल ही काटूँगा। अब देखो, तुम्हें अपने काम पर ठीक से ध्यान देना चाहिए ना? उस दिन तुमने ध्यान नहीं रखा और तुम्हारी नज़र बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ खरोंच लगकर उसकी **जैकेट** फट गई। उसकी भरपाई कौन करेगा? तो दस रूबल उसके कट गए। इसी तरह तुम्हारी लापरवाही के कारण नौकरानी ने तान्या के नए जूते चुरा लिए। अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों की देखभाल करना है। इस काम के ही तो तुम्हें पैसे मिलते हैं। तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे तो काटने ही पड़ेंगे। मैं कोई गलत तो नहीं कह रहा हूँ न? तो जूतों के लिए पाँच रूबल और कट गए। और हाँ, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिए थे...।"

"जी नहीं, आपने मुझे कुछ नहीं...।"

जूलिया ने दबी ज़बान से कहना चाहा।

"अरे, तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ? मैं डायरी में हर चीज़ नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी?"

"जी नहीं। आप कह रहे हैं, तो आपने दिए ही होंगे।"

"दिए ही होंगे नहीं, दिए हैं।" मैं कठोर स्वर में बोला।

"तो ठीक है, घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से... बचे चौदह... क्यों, हिसाब ठीक है न?"

उसकी आँखें आँसुओं से भर उठीं। उसके पूरे शरीर पर पसीना छलछला आया। उसकी आवाज़ काँपने लगी। वह धीरे से बोली, "मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वे भी आपकी पत्नी ने दिए थे। सिर्फ़ तीन रूबल। ज़्यादा नहीं!"

"अच्छा," मैंने स्वर में आश्चर्य भरकर कहा, "और इतनी बड़ी बात तुमने मुझे बताई भी नहीं? और न ही तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई। देखो, हो जाता न अनर्थ। खैर, मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ। हाँ, तो चौदह में से तीन और घटा दो। इस तरह तुम्हारे बचते हैं ग्यारह रूबल। बोलो भाई,

ये रही तुम्हारी तनख्वाह...? ये ग्यारह रूबल। देख लो, ठीक है न?"

जूलिया ने काँपते हाथों से ग्यारह रूबल ले लिए और अपनी जेब टटोलकर किसी तरह उन्हें उसमें ठूँस लिए और धीरे से विनीत स्वर में बोली, "जी धन्यवाद!"

मैं गुस्से से आग-बबूला होने लगा। कमरे में टहलते हुए मैंने क्रोधित स्वर में उससे कहा, "धन्यवाद किस बात का?" "आपने मुझे पैसे दिए, इसके लिए धन्यवाद!"

अब मुझसे नहीं रहा गया। मैंने ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए कहा, "तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो, जबकि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है। तुम्हें धोखा दिया है। तुम्हारे पैसे हड़पकर तुम्हारे साथ अन्याय किया है। इसके बावज़ूद तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो।"

"जी हाँ। इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया। आप कम से कम कुछ तो दे रहे हैं।" उसने मेरे क्रोध पर ठंडे पानी का छींटा मारते हुए कहा।

"उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा भी नहीं दिया। जूलिया! मुझे यह बात सुनकर तनिक भी अचरज नहीं हो रहा है।" मैंने कहा।

फिर स्वर धीमा करके मैं बोला, "जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ़ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मज़ाक किया परंतु मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा भी नहीं मारूँगा। देखो, यह तुम्हारे अस्सी रूबल रखे हैं। मैं अभी इन्हें तुम्हें दूँगा लेकिन उससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहूँगा। जूलिया! क्या ज़रूरी है कि इनसान भला कहलाए जाने के लिए इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाए कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस चुपचाप सारी ज़्यादतियाँ सहता जाए? नहीं जूलिया, नहीं। इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए तुम्हें कठोर, निर्भय और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा, पूरी ताकत के साथ। मत भूलो जूलिया! कि इस संसार में दब्बू और भीरु लोगों के लिए कोई जगह नहीं है... कोई जगह नहीं है...।"

– अंतोन चेखव

शिक्षण संकेत- बच्चों को बताएँ कि जिस प्रकार व्यक्ति के मन का पाप कोई दूसरा नहीं निकाल सकता। वह स्वयं ही उस पाप में से निकल सकता है, उसी प्रकार अन्याय के विरोध में न्याय प्राप्त करना भी व्यक्ति की स्वयं की जिम्मेदारी है।

जीवन परिचय

अंतोन चेखव का जन्म 29 जनवरी, सन् 1860 को दक्षिणी रूस के तगानरोग नामक शहर में हुआ था। बीस वर्ष की आयु में ही इन्होंने लिखना आरंभ कर दिया था। इन्होंने लघु कथाएँ, कहानियाँ, प्रहसन, व्यंग्यात्मक लेख आदि लिखे हैं। चेखव ने अपनी रचनाओं में उन्नीसवीं शताब्दी के नौवें दशक के रूसी समाज का यथार्थवादी चित्रण किया है। इन्होंने सैकड़ों कहानियाँ लिखीं। इनमें सामाजिक कुरीतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है। इन्होंने अपने सभी नाटकों में साधारण लोगों की मामूली ज़िंदगी का सजीव वर्णन किया है। इनका प्रभाव अनेक रूसी लेखकों बुनिन, कुप्रिन, गोर्की आदि पर पड़ा। यूरोप, एशिया और अमरीका के लेखक भी इनसे प्रभावित हुए। इनकी मृत्यु 15 जुलाई, सन् 1904 को हुई।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द - गवर्नेस, डायरी, नोट, ड्रेस, प्लेट, जैकेट

शब्द बोध-

REMEMBER

गवर्नेस – संरक्षिका, देखभाल करनेवाली
रूबल – रूस की मुद्रा
यकीन – विश्वास
भीरु – डरपोक
ज़्यादतियाँ – अन्याय, कठोरता
हृदयहीन – निर्मम
तनख्वाह – वेतन
नागा – अनुपस्थिति, अवकाश
अनर्थ – अनुचित कार्य
बोदा – बेवकूफ़
अस्तित्व – विद्यमान होना

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
छुट्‌टी	छुट्टी	सत्ताईस	सत्ताईस
ठंडे	ठण्डे	परंतु	परन्तु
इनसान	इंसान		

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

(क) लेखक ने जूलिया को किसलिए बुलाया?

(ख) जूलिया को लेखक के घर में काम करते हुए कितना समय हो गया था?

(ग) जूलिया का चेहरा पीला क्यों पड़ गया था?

(घ) लेखक के अनुसार जूलिया ने कितने नागे किए थे?

(ङ) लेखक की पत्नी ने जूलिया को कितने रूबल दिए थे?

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

(क) जूलिया कौन थी, उसको किसने अपने कमरे में बुलाया और क्यों?

(ख) जूलिया ने अपने मालिक को अपनी तनख्वाह कितनी बताई?

(ग) जूलिया चुपचाप अन्याय क्यों सहती रही?

(घ) लेखक ने जूलिया से माफ़ी क्यों माँगी?

(ङ) लेखक को किस बात पर क्रोध आया?

(च) तुम जूलिया की जगह होते, तो क्या करते?

3. आशय स्पष्ट कीजिए-

"संसार में दब्बू और भीरु लोगों के लिए कोई जगह नहीं है।"

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए तुम्हें कठोर, निर्भय, हृदयहीन संसार से लड़ना होगा।"

(क) लेखक किससे बात कर रह हैं?

(ख) लेखक यह सीख क्यों दे रहे हैं?

(ग) अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए क्या करना होगा?

(घ) इस कहानी के लेखक का नाम लिखिए।

योग्यता विस्तार **ANALYZE**

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

सोचो ज़रा यदि हम अंग्रेज़ों से पूर्ण स्वराज्य न माँगते तो क्या वे हमें देते? इस कहानी से हमें व्यावहारिकता की शिक्षा मिलती है इसलिए याद रखिए कि हमको भला बनना चाहिए, भीरु और दब्बू नहीं।

1. 'अन्याय सहन करना उतना ही पाप है जितना कि अन्याय करना।' इस विषय पर एक लेख लिखिए।
2. अपने घर की सेविका का भावनात्मक साक्षात्कार लीजिए। अपने मित्रों द्वारा लिए गए साक्षात्कार पढ़िए। जानिए कि आपके सेवक किन-किन परेशानियों से गुज़रते हैं।
3. यदि लेखक की जगह आप होते तो क्या करते?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'अचरज' का पर्यायवाची शब्द है-
(अ) साधारण ☐ (ब) आश्चर्य ☐ (स) अस्तित्व ☐

(ख) 'छुट्टियाँ' का एकवचन है-
(अ) छुट्टी ☐ (ब) छुट्टियों ☐ (स) छुट्टि ☐

(ग) 'लापरवाही' का विलोम शब्द है-
(अ) चिंता ☐ (ब) सावधानी ☐ (स) फ़िक्र ☐

(घ) 'इतवार' के बाद कौन-सा दिन आता है-
(अ) मंगलवार ☐ (ब) सोमवार ☐ (स) शनिवार ☐

(ङ) रूबल किस देश की मुद्रा है?
(अ) रूस ☐ (ब) जापान ☐ (स) जर्मनी ☐

2. निम्नलिखित विशेषण शब्दों की भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए-

बोदा - ____________ निर्भय - ____________
दब्बू - ____________ हृदयहीन - ____________
भीरु - ____________ ठग - ____________
कठोर - ____________ धोखेबाज़ - ____________
भारतीय - ____________ बच्चा - ____________

3. उर्दू शब्दों के हिंदी समानार्थी शब्द लिखिए-

खयाल - ____________ सिर्फ़ - ____________
ज़रूरत - ____________ नुकसान - ____________
तनख्वाह - ____________ यकीन - ____________
हमेशा - ____________ खामोश - ____________

4. पाठ मे से तीन व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा शब्द लिखिए-

व्यक्तिवाचक संज्ञा - ________ ________ ________

जातिवाचक संज्ञा - ________ ________ ________

भाववाचक संज्ञा - ________ ________ ________

5. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) जिसके अंदर भय न हो ________

(ख) जो इंसानियत करे ________

(ग) जिसका हृदय कठोर हो ________

(घ) जो न्याय के विरुद्ध हो ________

6. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए-

(क) चेहरा पीला पड़ना - ________

____

(ख) आग बबूला होना - ________

____

(ग) क्रोध पर ठंडे पानी का छींटा मारना - ________

____

(घ) सबक सिखाना - ________

____

केवल पठन हेतु

7

प्राकृतिक सौंदर्य

एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना
बाँध मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सज कर खड़ा है,
पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली
नीले फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर

कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो
हो गई सबसे सयानी
हाथ पीले कर लिए हैं
व्याह मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे
देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है।

(केदारनाथ अग्रवाल)

8

कोयल

पाठ बोध प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने कोयल से वार्तालाप को कविता के रूप में व्यक्त किया है और उसके गुणों के बारे मे वर्णित किया है।

देखो, कोयल काली है, पर
मीठी है इसकी बोली!
इसने ही तो कूक-कूक कर,
आमों में है मिसरी घोली।।

कोयल ! कोयल ! सच बतलाओ,
क्या संदेशा लाई हो?
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।।

यही आम जो अभी लगे थे,
खट्टे-खट्टे, हरे-हरे।
कोयल कूकेगी तब होंगे,
पीले और रस भरे-भरे।।

हमें देखकर टपक पड़ेंगे,
हम खुश होकर खाएँगे।
ऊपर कोयल गाएगी,
हम नीचे उसे बुलाएँगे।।

क्या गाती हो? किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख, माँगती
हो क्या मेघों से पानी?

कोयल! यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है?
माँ ने ही क्या तुमको मीठी
बोली यह सिखलाई है?

डाल-डाल पर उड़ना-गाना,
जिसने तुम्हें सिखाया है।
सबसे मीठा-मीठा बोलो!
यह भी तुम्हें बताया है।।

बहुत भली हो, तुमने माँ की,
बात सदा ही है मानी।
इसीलिए तो तुम कहलाती,
हो सब चिड़ियों की रानी।।

– सुभद्रा कुमारी चौहान

शिक्षण संकेत- बच्चों को बताएँ कि कोयल 'चिड़ियों की रानी' क्यों कहलाती है। उन्हें भी सदा मधुर वचन बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान जी का जन्म सन् 1904 में इलाहाबाद के एक संपन्न ठाकुर परिवार में हुआ था। इन्हें बचपन से ही काव्य से बहुत प्रेम था। इनके पिता इन्हें कविता करने के लिए प्रोत्साहन देते थे तथा माखनलाल चतुर्वेदी जी भी इनका मार्गदर्शन करते थे। सुभद्रा जी की सरल, सपाट, आडंबरहीन 'खड़ी बोली' और तुकांत छंदों में रचित कविताएँ युवकों में जोश भर देती हैं तथा नारी सुलभ मन में चेतना जगाकर अश्रुधारा प्रवाहित करने का भी दम भरती हैं। इनकी काव्य रचनाओं में अलंकारों का अभाव है, साथ ही शैली में कल्पना की उड़ान भी नहीं है। इनके काव्य संग्रह 'मुकुल' पर सन् 1931 में साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'सेक्सरिया पुरस्कार' प्रदान किया गया। सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो बसंत' शीर्षक कविताएँ आज भी हृदय में वीरता के भाव जाग्रत करती हैं। इनकी बहुत कम उम्र में ही सन् 1948 में एक मोटर दुर्घटना में अकाल मृत्यु हो गई थी।

शब्द बोध- REMEMBER

मिसरी	–	मिठास	सच	–	सत्य
संदेशा	–	खबर	डाली	–	टहनी
टपक	–	ऊपर से सहसा गिरना	धरती	–	पृथ्वी
मेघ	–	बादल	सदा	–	हमेशा

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
संदेशा	सन्देशा	खट्टे	खट्टे

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**
   (क) कोयल का रंग कैसा होता है?
   (ख) कोयल से किस प्रकार की बोली सीखनी चाहिए?
   (ग) धरती की प्यास कौन बुझाता है?
   (घ) आम का स्वाद कैसा है?
   (ङ) इस कविता की कवयित्री कौन हैं?

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**
   (क) आम मीठे कैसे हो जाते हैं?
   (ख) कोयल कब किस वृक्ष पर बैठकर कूकती है?
   (ग) बच्चे कोयल को जाने के लिए क्यों कह रहे हैं?
   (घ) बादलों के छाने से क्या होता है?
   (ङ) कोयल को सभी क्यों पसंद करते हैं?

3. निम्न पंक्तियों की व्याख्या कीजिए-

   यही आम जो अभी लगे थे,
   खट्टे-खट्टे, हरे-हरे।

कोयल कूकेगी तब होंगे,
पीले और रस भरे-भरे।।

4. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए-

बहुत भली हो, तुमने ____________ की,
बात ____________ ही है मानी।
इसीलिए तो तुम ____________,
हो सब ____________ की रानी।।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

हमें देखकर टपक पड़ेंगे,
हम खुश होकर खाएँगे।
ऊपर कोयल गाएगी,
हम नीचे उसे बुलाएँगे।।

(क) कोयल कहाँ पर गाएगी?
(ख) बच्चों को देखकर कौन टपक पड़ेंगे?
(ग) बच्चे किस फल की बात कर रहे हैं?
(घ) 'कोयल' शब्द का वर्ण-विच्छेद कीजिए।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. आप अपनी माँ से क्या-क्या सीखते हैं?
2. 'मीठी बोली का महत्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
3. अगर आपका कोई मित्र आपसे अभद्र व्यवहार करता है तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'मिठास' का विलोम शब्द है-

(अ) मीठा ☐ (ब) खटास ☐ (स) तीखा ☐

(ख) 'प्यासी धरती देख माँगती' में धरती एक ________ शब्द है-

(अ) सर्वनाम ☐ (ब) क्रिया ☐ (स) संज्ञा ☐

(ग) 'गाना-बजाना' ________ शब्द है-

(अ) तत्सम् ☐ (ब) तद्भव ☐ (स) तुकांत ☐

(घ) 'काला' का समानार्थक शब्द है-

(अ) सफ़ेद ☐ (ब) अश्वेत ☐ (स) रंगीन ☐

(ग) 'मेघ' का पर्यायवाची शब्द है-

(अ) बादल ☐ (ब) बरसात ☐ (स) बारूद ☐

2. प्यासी धरती, काली कोयल

'प्यासी एवं काली' शब्द क्रमशः 'धरती एवं कोयल' की विशेषता बता रहे हैं।
संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के साथ उपयुक्त विशेषण जोड़कर लिखिए-

________ धूप

________ पेड़

________ आम

________ गाना

________ माँ

3. दिए गए शब्दों के वचन बदलिए-

बोली - ________ मेघों - ________

गाना - ________ डाल - ________

चिड़िया - ________ आमों - ________

4. दिए गए शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए-

मिसरी - ________ कोयल - ________

चिड़िया - ________ दरवाज़ा - ________

आम - ________ संदेशा - ________

5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित क्रिया शब्द भरिए-

कोयल ________ है। कौआ काँव-काँव ________ है। बादल ________ है। बिजली ________ है।

9

तीर्थयात्रा

पाठ बोध इस कहानी के माध्यम से कहानीकार सुदर्शन बच्चों में परहित और त्याग की भावना का संदेश प्रसारित करते हैं। वास्तव में दूसरों की भलाई करना ही सच्ची तीर्थयात्रा है, इस तथ्य को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रमाणित किया है।

लाजवंती के यहाँ कई पुत्र पैदा हुए मगर सबके सब बचपन में ही मर गए। आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था। उसका मुँह देखकर वह पहले बच्चों की मौत का दुख भूल जाती थी। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए फिरती थी, मानो वह कोई दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी, कहीं उसे किसी की नज़र न लग जाए। उसे खेलने के लिए भी घर के बाहर न निकलने देती। अगर हेमराज कभी निकल भी जाता, तो लाजवंती घबराकर ढूँढ़ने लग जाती थी।

गाँव की स्त्रियाँ कहतीं, "हमारे भी तो बच्चे हैं, तू ज़रा-ज़रा-सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?" लाजवंती यह सुनती तो उसकी आँखों में आँसू लहराने लगते। भर्राए हुए स्वर में उत्तर देती, "क्या कहूँ? मेरा जी डर जाता है।"

इस समय उसे अपने मृत पुत्र याद आ जाते थे और उसके मन में भय बैठ जाता था। मगर इतना सावधान रहने पर भी हेमराज बुरी नज़र से न बच सका।

प्रातःकाल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला, "माँ!"

आवाज़ में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बरतन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली, "क्या है बेटा? घबराया हुआ क्यों है तू?"

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुककर बोला, "सिर में दर्द हो रहा है... बहुत दर्द हो रहा है।"

बात साधारण थी मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन चल बसा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।

लाजवंती को पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। वह व्याकुल हो गई।

गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें लुकमान समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। लाजवंती उनके पास पहुँची। लाजवंती को देखकर वैद्य बोले, "क्यों बेटी! क्या बात है?"

लाजवंती ने चिंतित-सी होकर उत्तर दिया, "हेम बीमार है।"

वैद्य जी ने सहानुभूति के साथ पूछा, "कब से?"

"आज ही से, कहता है सिर में दर्द है।"

"बुखार तो नहीं?"

"मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते, तो अच्छा था।"

वैद्य जी का मनोरथ सिद्ध हुआ। उन्होंने जल्दी से कपड़े पहने और लाजवंती के साथ हो लिए। जाकर देखा तो हेमराज बुखार से बेसुध पड़ा था। वैद्य जी ने कहा, "कोई चिंता नहीं, दवा देता हूँ, बुखार उतर जाएगा।"

लाजवंती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया। उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंट कर दी। वैद्य जी ने मुँह से नहीं-नहीं कहा परंतु हाथों ने मुँह का साथ न दिया। उन्होंने पैसे ले लिए।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्य जी ने कई दवाइयाँ बदलीं परंतु किसी ने अपना असर न दिखाया। लाजवंती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रातभर उसके सिरहाने बैठीं रहती। लोग आते और धीरज दे-देकर चले जाते।

एक दिन लाजवंती ने वैद्य से पूछा, "हकीम जी! आखिर क्या बात है जो यह बुखार उतरने का नाम ही नहीं लेता?"

वैद्य जी ने उत्तर दिया, "मियादी बुखार है।"

लाजवंती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा, "मियादी बुखार क्या?"

"अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।"

"पर कब उतरेगा?"

"इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।"

"आज ग्यारह दिन तो हो चुके हैं।"

"बस दस दिन और हैं। किसी तरह ये दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।"

लाजवंती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली, "कोई अंदेसा तो नहीं?"

वैद्य जी बोले, "देखो! बुखार सख्त है, हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।"

लाजवंती सहम गई। उसका दिल बैठने लगा। आशा के साथ निराशा भी उसके सामने आकर खड़ी हो गई।

उसका पति रामलाल मुलतान में नौकर था। उसने तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। लाजवंती और रामलाल दोनों घबरा गए। सोचने लगे, क्या बुखार एकाएक उतरेगा?

वैद्य ने नाड़ी देखी तो घबराकर बोले, "आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना, बुखार एकाएक उतरेगा।"

लाजवंती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। वैद्य के शब्द किसी आनेवाले भय की पूर्वसूचना थे। रामलाल बेटे के सिरहाने बैठ गए। लाजवंती के हृदय को चैन न था। वह मंदिर पहुँची और देवी के सामने गिरकर देर तक रोती रही।

जब थककर उसने सिर उठाया तो उसका मुखमंडल शांत था, जैसे तूफ़ान शांत हो जाता है। उसको ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई दिव्य शक्ति उसके कान में कह रही है, "तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर दिया है। लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मानता मानी, "देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थयात्रा करूँगी।"

मानता मानने के बाद लाजवंती को ऐसा लगा जैसे उसका संकट टल गया। घर पहुँची तो पति ने कहा, "लो बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।"

लाजवंती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली, "अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थयात्रा मान आई हूँ।"

रामलाल ने तीर्थयात्रा के खर्च का अनुमान किया तो हृदय बैठ गया परंतु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक ठहरने न दिया। उत्तर दिया, "अच्छा किया, रुपया क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे, यही हमारी दौलत है।"

प्रभात हुआ तो हेम का बुखार बिलकुल उतर गया था। लाजवंती के मुखमंडल से प्रसन्नता टपक रही थी।

वैदय जी ने आकर देखा तो प्रसन्नता से बोले, "अब कोई चिंता नहीं, तुम्हारा बच्चा बच गया।"

लाजवंती ने हेम की कमज़ोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा, "क्या से क्या हो गया!"

वैदय ने लाजवंती की ओर देखा और रामलाल से बोले, "यह सब इसके ही परिश्रम का फल है।" लाजवंती ने उत्तर दिया, "देवी माता की कृपा है और आपकी दवा के प्रभाव का फल है।"

"मैने क्या किया?"

"मैं तो तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को ज़िंदा कराया था, तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है।"

सातवें दिन रामलाल नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थयात्रा की तैयारी करो।

तीन महीने बाद लाजवंती तीर्थयात्रा के लिए तैयार हुई। जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हुआ। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थी। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं। दूसरी तरफ कहीं पूरियाँ बन रही थीं तो कहीं हलुआ। लोग खा-पीकर आराम करने चले गए।

अब लाजवंती ने बक्से में जरूरी कपड़े रखे, गले में लाल रंग की सूती माला पहनी, माथे पर चंदन का लेप किया। गऊ एक पड़ोसिन को सौंपी और उससे बार-बार कहा– "इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना, मैं जा रही हूँ मगर मेरा मन अपनी गऊ में ही रहेगा।"

सहसा किसी के सिसकी भरने की आवाज सुनाई दी। लाजवंती ने सोचा, इस समय सिसकी भरनेवाला कौन है? उसने चारों तरफ देखा, मगर कोई दिखाई न दिया। वह छत पर चढ़ गई और पड़ोसिन के आँगन में झुककर जोर से बोली, "माँ हरो!" कुछ देर सन्नाटा रहा फिर एक चारपाई से उत्तर मिला, "कौन है? लाजवंती?" आवाज में आँसू मिले हुए थे।

लाजवंती हरो के पास पहुँची और बोली, "माँ! क्या बात है? तू रो क्यों रही है?" हरो और भी सिसकियाँ भर-भरकर रोने लगी। लाजवंती ने फिर पूछा, "अरी क्या बात है, तू इस समय रो क्यों रही है? मैं तेरी पड़ोसिन हूँ, मुझसे न छिपा।"

"बता न तुझे क्या दुख है?"

हरो ने दुखी होकर उससे पूछा, "क्या तुम उसे दूर कर दोगी?"

"हो सका तो जरूर कर दूँगी।"

हरो थोड़ी देर तक चुप रही, फिर धीरे से बोली, "कुँवारी बेटी का दुख खा रहा है। रात-रातभर रोती रहती हूँ। जाने यह नाव कैसे पार लगेगी?"

"यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च तो तुम्हारे जेठ ने मंज़ूर कर लिया है?"

"उसने दो सौ रुपए के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं मगर मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। अब चिंता यह है कि बारात आएगी तो उसके सामने क्या धरूँगी?"

लाजवंती ने कहा, "क्या गाँव के लोग एक कन्या का ब्याह नहीं कर सकते? और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।"

हरो की आँखें भर आईं। वह इस समय गरीब थी परंतु कभी उसने अच्छे दिन भी देखे थे। उसने धीरे से कहा, "बेटी, मुझसे भी तो यह अपमान न देखा जाएगा। किसी के सामने हाथ फैलाना भी तो बुरा है।"

"तो क्या करोगी? क्या कन्या कुँवारी बैठाकर रखोगी?"

"भगवान की यही इच्छा है तो मेरा क्या बस है? उसे लेकर कहीं निकल जाऊँगी। न कोई देखेगा, न कोई बात करेगा।"

लाजवंती हरो की अवस्था से काँप गई। उसे ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा हो कि अगर यह हो गया तो ईश्वर का कोप गाँवभर को जलाकर राख कर देगा। लाजवंती का हृदय दुख से पानी-पानी हो गया। उसने कहा, "चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तेरी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन भी मिलेगा। तेरी बेटी तेरी ही नहीं, मेरी भी बेटी है।" यह सुनकर हरो की आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे।

लाजवंती तीर्थयात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी, हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर उसका हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपए लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। ये रुपए जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी पर उन्हें देते समय उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। सच्चा सुख त्याग में ही है।

– सुदर्शन

शिक्षण संकेत- बच्चों को पाठ समझाइए तथा उन्हें बताइए कि ज़रूरतमंद की मदद करना ही सच्ची तीर्थयात्रा है।

जीवन परिचय

सुदर्शन जी का वास्तविक नाम बद्रीनाथ शर्मा था। इनका जन्म सन् 1895 में पंजाब राज्य के सियालकोट नामक स्थान में हुआ था। बचपन से ही इन्हें कहानियाँ लिखने का शौक था। इन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी, जब ये कक्षा 6 में पढ़ते थे। इनके प्रमुख कहानी संग्रह पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना आदि हैं। इनका प्रसिद्ध उपन्यास 'भागवंती' है। इनकी कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना रहा है। वे 1950 में बने फिल्म लेखक संघ के प्रथम उपाध्यक्ष थे। ये महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित अखिल भारतीय हिंदुस्तानी प्रचार सभा वर्धा की साहित्य परिषद के सम्मानित सदस्यों में थे। इनकी रचनाओं में तीर्थयात्राएँ, पत्थरों का सौदागर, पृथ्वी-वल्लभ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मुख्य धारा के साहित्य-सृजन के अतिरिक्त अनेक फिल्मों की पटकथा और गीत भी लिखे हैं। इनका देहावसान सन् 1967 में हुआ।

शब्द बोध-

REMEMBER

नारी-हृदय – स्त्री-मन
सहानुभूति – हमदर्दी
मियाद – कार्य विशेष के लिए निश्चित समय
अंदेसा – आशंका
दिव्य शक्ति – ईश्वरीय ताकत
परिक्रमा – चारों ओर चक्कर लगाना
अनुमान – अंदाज़
अधीर – बेचैन
अनुभवी – तजुर्बेकार, परिपक्व
मनोरथ – इच्छा
मुखमंडल – चेहरा
पाषाण – पत्थर
मानता – मनौती
कृतज्ञता – एहसान
कल्पित – कल्पना किया हुआ

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
यद्‌यपि	यद्यपि	चिंता	चिन्ता
उत्तर	उत्तर	वैद्‌य	वैद्य
सिद्‌ध	सिद्ध	दुपट्‌टे	दुपट्टे
मंदिर	मन्दिर	शांत	शान्त
इकट्‌ठा	इकट्ठा	प्रबंध	प्रबंध
हरिद्‌वार	हरिद्वार	संदूक	सन्दूक

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) हेमराज के इलाज के लिए किसे बुलाया गया?
(ख) हेमराज को क्या हो गया था?
(ग) लाजवंती ने क्या संकल्प लिया?
(घ) हरो क्यों रो रही थी?
(ङ) लाजवंती कौन थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) गाँव की स्त्रियाँ बच्चे के लिए सदा चिंतित रहनेवाली लाजवंती से क्या कहती थीं?
(ख) दुर्गादास वैद्य को गाँववाले लुकमान क्यों समझते थे?
(ग) माँ हरो क्यों रो रही थी?
(घ) अपना संचित धन देते हुए लाजवंती क्यों प्रसन्न हुई?
(ङ) हरो और लाजवंती में से आपको कौन-से पात्र ने प्रभावित किया? कारण सहित उत्तर लिखिए।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) वैद्य जी ने मुँह से नहीं-नहीं कहा परंतु हाथों ने मुँह का साथ न दिया।
(ख) मैं तेरी पड़ोसिन हूँ, मुझसे न छिपा।
(ग) सच्चा सुख त्याग में ही है।
(घ) तेरी बेटी तेरी ही नहीं, मेरी भी बेटी है।

4. निम्नलिखित कथन किसने-किसससे कहा?

कथन	किसने	किससे
(क) "सिर में दर्द हो रहा है।"	________	________
(ख) "बुखार उतर जाएगा।"	________	________
(ग) "तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया।"	________	________
(घ) "जाने यह नाव कैसे पार लगेगी!"	________	________
(ङ) "तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी।"	________	________
(च) "तो क्या करोगी? क्या कन्या कुँवारी बैठाकर रखोगी?"	________	________

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

नारी-हृदय - ____________________

मियाद - ____________________

परिक्रमा - ____________________

अधीर - ____________________

मनोरथ - ____________________

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए फिरती थी, मानो वह कोई दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों।"

(क) लाजवंती को अपना पुत्र अनोखा क्यों लगता था?

(ख) उसे अपने पुत्र की चिंता क्यों रहती थी?

(ग) इस पाठ के लेखक कौन हैं?

(घ) दिए गए मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए- दीपक बुझना, छाती से लगाकर रखना।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

जब हम परोपकार पर लिखी गई कहानियाँ पढ़ते हैं तब हमारे मन-मस्तिष्क में यह भावना आती है कि क्या हम अपने जीवन में परोपकार रूपी सच्चे सुख को प्राप्त कर पाए हैं।

इसी आधार पर लिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. अपने जीवन की किसी एक घटना का वर्णन कीजिए जब आपने परोपकार किया हो।
2. प्राचीन समय में तार सूचना देने का तीव्र साधन था। आज सूचना देने के कौन-कौन से साधन हैं?
3. आने वाले समय में विज्ञान के कौन-कौन से चमत्कार होंगे? अपनी कल्पना से लिखिए।
4. बीमार बच्चे की माँ और डॉक्टर के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'पुत्र' का स्त्रीलिंग शब्द है-

(अ) पौत्र ☐ (ब) पुत्री ☐ (स) बेटी ☐

(ख) 'गऊ' किस भाषा का शब्द है-
(अ) विदेशी ☐ (ब) संस्कृत ☐ (स) हिंदी ☐

(ग) 'देवी' का बहुवचन शब्द है-
(अ) देवियों ☐ (ब) देवियाँ ☐ (स) देव ☐

(घ) 'मियादी बुखार है' में 'मियादी' एक शब्द है-
(अ) संज्ञा ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) विशेषण ☐

(ङ) 'मानो वह कोई दीपक हो' में सर्वनाम शब्द है-
(अ) मानो ☐ (ब) वह, कोई ☐ (स) दीपक हो ☐

2. नीचे दिए समरूपी भिन्नार्थक शब्दों-अर्थों को पढ़िए। देखिए, केवल नुकता लगाने से इनके अर्थ में परिवर्तन हो गया-

तेज - आभा, चमक
तेज़ - तीव्र
जरा - बुढ़ापा
ज़रा - थोड़ा-सा

निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

फन - ____________
फ़न - ____________
जलील - ____________
ज़लील - ____________

3. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के हिंदी समानार्थी लिखिए-

नज़र - ____________
बुखार - ____________
आखिरी - ____________
मियाद - ____________
सख्त - ____________
तरफ़ - ____________
ज़रूर - ____________
आवाज़ - ____________

4. छ ट ठ ड ढ द र ह – वर्णमाला के इन गोल आकृतिवाले वर्णों को स्वर रहित बनाने के लिए हलंत का प्रयोग किया जाता है।

दिए गए शब्दों को पढ़िए-

वैद्‌य
छुट्‌टी
अर्थ (अर्‌थ)
बुद्‌धि
हड्‌डी

5. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

जीवन × ____________
हानिकारक × ____________
आशा × ____________
भय × ____________
सावधान × ____________
स्वस्थ × ____________

मान	×	______	धैर्य	×	______
कृतज्ञ	×	______	आवश्यक	×	______

6. नीचे दिए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

(क) उसकी आँखों में आँसू लहराने लगते। भर्राए हुए स्वर में उत्तर देती।

(ख) लाजवंती को पैरों के नीचे से धरती खिसकती मालूम होने लगी।

(ग) लाजवंती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया।

(घ) वैद्‌य जी ने नहीं-नहीं कहा परंतु हाथों ने मुँह का साथ न दिया।

उपर्युक्त वाक्यों में क्या विशेष बात दिखाई देती है? बच्चो! 'सुदर्शन' द्‌वारा लिखित इस कहानी में हमें 'मुहावरों' का बहुलता से प्रयोग मिलता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा रोचक तथा ग्राह्‌य हो जाती है तथा अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है।

मुहावरा एक वाक्यांश होता है और इसका लाक्षणिक अर्थ में ही प्रयोग होता है न कि शाब्दिक अर्थ में; जैसे- 'डूबे हुए हृदय को सहारा' हृदय कैसे डूबेगा, सहारा कैसे मिलेगा, प्रश्न का कोई जवाब नहीं है अर्थात् स्पष्ट है कि विशेष अर्थ में इसका तात्पर्य 'निराश मन को सांत्वना मिलना' से है।

पाठ में आए मुहावरों की सूची बनाइए और किन्हीं पाँच का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

____

____

____

____

____

7. नीचे दिए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

लाजवंती घबराकर ढूँढ़ने लग जाती थी। - कैसे ढूँढ़ने लगती?

हेमराज जागते ही मुँह फुलाकर बोला। - कैसे बोला?

लाजवंती देवी के सामने गिरकर देर तक रोती रही। - कब तक?

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रिया- (लग जाती थी, बोला, रोती रही) की विशेषता बता रहे हैं।

जो शब्द क्रिया से पूर्व आकर क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

पाठ में से ऐसे ही वाक्य ढूँढ़कर लिखिए-

____

____

____

____

10

मज़दूरी और प्रेम

पाठ बोध इस निबंध में लेखक सरदार पूर्ण सिंह ने मज़दूर के मेहनतकश कठोर जीवन, श्रम और निर्माणकारी शक्ति का बड़ा ही सुंदर विवेचन किया है। साथ ही उन्हें महाराजाओं का अन्नदाता और समाज के पुष्पोद्यान का माली कहा है।

हल चलानेवाले प्रायः स्वभाव से ही साधु होते हैं। हल चलानेवाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवनकुंड की ज्वाला की किरणें चावल के लंबे और सफ़ेद दानों के रूप में निकलती हैं। गेहूँ के लाल-लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियों की डालियाँ सी हैं। मैं जब कभी अनार के फूल देखता हूँ, तब मुझे बाग के माली का रुधिर याद आ जाता है। उसकी मेहनत के कण जमीन में गिरकर उगे हैं, और हवा तथा प्रकाश की सहायता से मीठे फलों के रूप में नज़र आ रहे हैं। किसान मुझे अन्न में, फूल में, फल में आहुति हुआ सा दिखाई पड़ता है। कहते हैं, ब्रह्माहुति से जगत पैदा हुआ है। अन्न पैदा करने में किसान भी ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरी प्रेम का केंद्र है। उसका सारा जीवन पत्ते-पत्ते में, फूल-फूल में, फल-फल में बिखर रहा है। वृक्षों की तरह उसका भी जीवन एक प्रकार का मौन जीवन है। वायु, जल, पृथ्वी, तेज़ और आकाश की नीरोगता इसी के हिस्से में है। विद्या यह नहीं पढ़ा; जप और तप यह नहीं करता; संध्या-वंदनादि इसे नहीं आते; ज्ञान, ध्यान का इसे पता नहीं; मंदिर, मसजिद, गिरजे से इसे कोई सरोकार नहीं; केवल साग-पात खाकर ही यह अपनी भूख निवारण कर लेता है। ठंडे चश्मों और बहती हुई नदियों के शीतल जल से यह अपनी प्यास बुझा लेता है। प्रातःकाल उठकर यह अपने हल-बैलों को नमस्कार करता है और खेत जोतने चल देता है। दोपहर की धूप इसे भाती है। इसके बच्चे मिट्टी ही में खेल-खेलकर बड़े हो जाते हैं। इसको और इसके परिवार को बैल और गौवों से प्रेम है। उनकी यह सेवा करता है। पानी बरसानेवाले के दर्शनार्थ आँखें नीले आकाश की ओर उठती हैं। नयनों

की भाषा में यह प्रार्थना करता है। सायं और प्रातः, दिन और रात विधाता इसके हृदय में अचिंतनीय और अद्भुत आध्यात्मिक भावों की वृष्टि करता है। यदि कोई इसके घर आ जाता है तो यह उसको मृदु वचन, मीठे जल और अन्न से तृप्त करता है। धोखा यह किसी को नहीं देता। यदि इसको कोई धोखा दे भी दे, तो उसका इसे ज्ञान नहीं होता; क्योंकि इसकी खेती हरी-भरी है; गाय इसकी दूध देती है; स्त्री इसकी आज्ञाकारिणी है; मकान इसका पुण्य और आनंद का स्थान है। पशुओं को चराना, नहलाना, खिलाना, पिलाना, उसके बच्चों की अपने बच्चों की तरह सेवा करना, खुले आकाश के नीचे उसके साथ रातें गुज़ार देना क्या स्वाध्याय से कम है? दया, वीरता और प्रेम जैसा भाव इन किसानों में देखा जाता है, अन्यत्र मिलने का नहीं। गुरु नानक ने ठीक कहा है– "**भोले भाव मिलें रघुराई**", भोले भाले किसानों को ईश्वर अपने खुले दीदार का दर्शन देता है। उनकी फूस की छतों में से सूर्य और चंद्रमा छन-छनकर उनके बिस्तरों पर पड़ते हैं। ये प्रकृति के जवान साधु हैं। जब कभी मैं इन बे-मुकुट के गोपालों के दर्शन करता हूँ, मेरा सिर स्वयमेव ही झुक जाता है। जब मुझे किसी फ़कीर के दर्शन होते हैं, तब मुझे मालूम होता है कि नंगे सिर, नंगे पाँव, एक टोपी सिर पर, एक लँगोटी कमर में, एक काली कमली कंधे पर, एक लंबी लाठी हाथ में लिए हुए गौवों का मित्र, बैलों का हमजोली, पक्षियों का हमराज़, महाराजाओं का अन्नदाता, बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर बिठानेवाला, भूखों और नंगों को पालनेवाला, समाज के **पुष्पोद्यान** का माली और खेतों का रखवाला जा रहा है।

मुझे तो मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में उनकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगंध आती है। **राफेल** आदि के चित्रित चित्रों में उनकी कला-कुशलता को देख इतनी सदियों के बाद भी उनके अंतःकरण के सारे भावों का अनुभव होने लगता है। केवल चित्र का ही दर्शन नहीं, किंतु साथ ही उसमें छिपी हुई चित्रकार की आत्मा तक के दर्शन हो जाते हैं। परंतु यंत्रों की सहायता से बने हुए **फ़ोटो** निर्जीव से प्रतीत होते हैं। उनमें और हाथ के चित्रों में उतना ही भेद है, जितना कि बस्ती और श्मशान में। हाथ की मेहनत से चीज़ में जो रस भर जाता है, वह भला लोहे के द्वारा बनाई हुई चीज़ में कहाँ ! जिस आलू को मैं स्वयं बोता हूँ, मैं स्वयं पानी देता हूँ, जिसके इर्द-गिर्द की घास-पात खोदकर मैं साफ़ करता हूँ, उस आलू में जो रस मुझे आता है, वह **टीन** में बंद किए हुए अचार मुरब्बे में नहीं आता। मेरा विश्वास है कि जिस चीज़ में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप से मिल जाती है और उसमें मुर्दे को ज़िंदा करने की शक्ति आ जाती है। होटल में बने हुए भोजन यहाँ नीरस होते हैं क्योंकि वहाँ मनुष्य मशीन बना दिया जाता है।

आदमियों का व्यापार करना मूर्खों का काम है। सोने और लोहे के बदले मनुष्य को बेचना मना है। आजकल भाप की कलों का दाम तो हज़ारों रुपया है; परंतु मनुष्य कौड़ी के सौ-सौ बिकते हैं! सोने और चाँदी की प्राप्ति से जीवन का आनंद नहीं मिल सकता। सच्चा आनंद तो मुझे मेरे काम से मिलता है। मुझे अपना काम मिल जाय तो फिर स्वर्गप्राप्ति की इच्छा नहीं, मनुष्य-पूजा ही सच्ची ईश्वर-पूजा है। मंदिर और गिरजे में क्या रखा है? ईंट, पत्थर, चूना कुछ ही कहो– आज से हम अपने ईश्वर की तलाश मंदिर, मसजिद, गिरजा और पोथी में न करेंगे। अब तो यही इरादा है कि मनुष्य की अनमोल

आत्मा में ईश्वर के दर्शन करेंगे। यही **आर्ट है**– यही धर्म है। मनुष्य के हाथ ही से ईश्वर के दर्शन करानेवाले निकलते हैं। बिना काम, बिना मज़दूरी, बिना हाथ के कलाकौशल के विचार और चिंतन किस काम के! यह नया साहित्य मज़दूरों के हृदय से निकलेगा। उन मज़दूरों के कंठ से यह नई कविता निकलेगी, जो अपना जीवन आनंद के साथ खेत की मेड़ों का, कपड़े के तागों का, जूते के टाँकों का, लकड़ी की रगों का, पत्थर की नसों का भेदभाव दूर करेंगी। हाथ में कुल्हाड़ी, सिर पर टोकरी, नंगे सिर और नंगे पाँव, धूल से लिपटे और कीचड़ से रंगे हुए ये बेज़बान कवि जब जंगल में लकड़ी काटेंगे तब लकड़ी काटने का शब्द इनके असभ्य स्वरों से मिश्रित होकर वायुयान पर चढ़ दसों दिशाओं में ऐसा अद्भुत गान करेगा कि भविष्य के कलावंतों के लिए वही ध्रुपद और मल्हार का काम देगा। चरखा कातनेवाली स्त्रियों के गीत संसार के सभी देशों के कौमी गीत होंगे। मज़दूरों की मज़दूरी ही यथार्थ पूजा होगी। कलारूपी धर्म की तभी वृद्धि होगी। तभी नए कवि पैदा होंगे, तभी नए औलियों का उद्भव होगा। परंतु ये सब के सब मज़दूरी के दूध से पलेंगे। धर्म, योग, शुद्धाचरण, सभ्यता और कविता आदि के फूल इन्हीं मज़दूर-ऋषियों के उद्यान में प्रफुल्लित होंगे।

मज़दूरी करना जीवनयात्रा का आध्यात्मिक नियम है। **जोन ऑफ़ आर्क** की फ़कीरी और भेड़ें चराना, टॉल्सटाय का त्याग और जूते गाँठना, उमर खैयाम का प्रसन्नतापूर्वक तंबू सीते फिरना, खलीफ़ा उमर का अपने रंग महलों में चटाई आदि बुनना, ब्रह्मज्ञानी कबीर और रैदास का अपना कार्य करना, गुरु नानक और भगवान श्रीकृष्ण का मूक पशुओं का पालन करना सच्ची फ़कीरी का अनमोल भूषण है।

मज़दूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मज़दूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियों को ऐसी कलावती देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी दस्तकारी की बदौलत हज़ारों की कीमत का बना देती हैं, नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती हैं। जापान-निवासी कागज़, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं। करोड़ों रुपये के हाथ के बने हुए जापानी खिलौने विदेशों में बिकते हैं। हाथ की बनी हुई जापानी चीज़ें मशीन से बनी हुई चीज़ों को मात करती हैं। संसार के सब बाज़ारों में उनकी बड़ी माँग रहती है।

हाथ से काम करनेवालों से प्रेम रखने और उनकी आत्मा का सत्कार करने से साधारण मज़दूरी सुंदरता का अनुभव करनेवाले कला-कौशल अर्थात् कारीगरी, का रूप हो जाती है। इस देश में जब मज़दूरी का आदर होता था तब इसी आकाश के नीचे बैठे हुए मज़दूरों के हाथों ने भगवान बुद्ध के निर्वाण-सुख को पत्थर पर इस तरह उकेरा था कि इतना काल बीत जाने पर, पत्थर की मूर्ति के ही दर्शन से ऐसी शांति प्राप्त होती है जैसी कि स्वयं भगवान बुद्ध के दर्शन से होती है। मुँह, हाथ, पाँव इत्यादि का गढ़ देना साधारण मज़दूरी परंतु मन के गुप्त भावों और अंतःकरण की कोमलता तथा जीवन की सभ्यता को प्रत्यक्ष प्रकट कर देना प्रेम-मज़दूरी है।

– सरदार पूर्ण सिंह

शिक्षण संकेत- शिक्षक छात्रों को निबंध लेखन के नियम एवं विधि के विषय मे ज्ञानवर्धन करें। छात्रों को विषय देकर निबंध लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी, सन् 1881 को पश्चिम सीमाप्रांत (अब पाकिस्तान में) के हजारा ज़िले के मुख्य नगर एबटाबाद के समीप सलहद ग्राम में हुआ। इनके पिता सरदार करतार सिंह भागर सरकारी कर्मचारी थे। इन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन में ही उर्दू, पंजाबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इनकी सबसे अधिक रचनाएँ अंग्रेज़ी में हैं। देहरादून की वन अनुसंधानशाला में कार्यकाल के समय में इन्होंने अंग्रेज़ी में वैज्ञानिक विषयों से संबंधित बहुत से शोधपूर्ण लेख लिखे। इन्हें आधुनिक पंजाबी कविता का प्रणेता माना जाता है। अंग्रेज़ी में 'सिस्टर्स ऑफ़ दि स्पिनिंग व्हील' तथा पंजाबी में 'खुले मैदान' रचनाएँ काफ़ी लोकप्रिय हैं। 31 मार्च, सन् 1931 में मात्र 50 वर्ष की अल्पायु में इनका स्वर्गवास हो गया।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – राफेल, फ़ोटो, टीन, आर्ट, जोन ऑफ़ आर्क

शब्द बोध- **REMEMBER**

साधु	– सज्जन	ज्वाला	– अग्नि
रुधिर	– रक्त	आहुति	– हवन
मौन	– चुपचाप	नीरोगता	– बिना बीमारी के
संध्यावंदन	– सायंकालीन पूजा	सरोकार	– मतलब

निवारण	–	दूर करना	दर्शनार्थ	–	दर्शन के लिए
विधाता	–	ईश्वर (ब्रहमा)	अद्‌भुत	–	अनोखा
आध्यात्मिक	–	परमात्मा और आत्मा से संबंध रखनेवाला	वृष्टि	–	बरसात
			मृदु	–	कोमल, मीठे
तृप्त	–	संतुष्ट	स्वाध्याय	–	स्वयं पढ़ना
पुष्पोद्‌यान	–	फूलों का बगीचा	कलावंतों	–	कला के विशेषज्ञों
दिव्य	–	अलौकिक	गुप्त	–	छिपा हुआ

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
लंबे	लम्बे	ब्रहमा	ब्रह्मा
पत्ते	पत्ते	विद्‌या	विद्या
मंदिर	मन्दिर	कंधे	कन्धे
पुष्पोद्‌यान	पुष्पोद्यान	सुगंध	सुगन्ध
यंत्रों	यन्त्रों	ज़िंदा	ज़िन्दा
वृद्‌धि	वृद्धि	उद्‌यान	उद्यान
तंबू	तम्बू	लोकांतर	लोकान्तर

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्‌धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) जगत किस आहुति से पैदा हुआ है?
(ख) किसान प्रातः काल उठकर क्या करता है?
(ग) किसान को किसमें रस आता है?
(घ) सच्ची ईश्वर पूजा किसे कहा गया है?
(ङ) कौमी गीत किसे कहा गया है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) किसान की तुलना किससे की गई है और क्यों?
(ख) किसान की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।
(ग) लेखक को फ़कीर का दर्शन होने पर कैसा प्रतीत होता है?

(घ) होटल के बने भोजन नीरस क्यों होते हैं?

(ङ) मज़दूरी करने से क्या होता है?

(च) साधारण मज़दूरी और प्रेम मज़दूरी में क्या अंतर है?

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"सच्चा आनंद तो मुझे मेरे काम से मिलता है। मुझे अपना काम मिल जाए तो फिर स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा नहीं, मनुष्य-पूजा ही सच्ची ईश्वर-पूजा है।"

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ख) लेखक को सच्चा आनंद कहाँ मिलता है?

(ग) सच्ची ईश्वर पूजा क्या है?

(घ) 'स्वर्ग प्राप्ति' का समास विग्रह कीजिए और नाम भी लिखिए।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. एक दशक पहले किसान जिस रूप में जीता था, आज उसके जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आ गया है?
2. आधुनिक गाँव पर एक अनुच्छेद लिखिए।
3. आने वाले दशक में गाँव कैसे होंगे? अपनी कल्पना के आधार पर लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'साधु' का विलोम शब्द है-

(अ) सज्जन ☐ (ब) असाधु ☐ (स) देव ☐

(ख) 'मनुष्य' का बहुवचन शब्द है-

(अ) मनुष्यों ☐ (ब) मनुष्य ☐ (स) मनुष्यें ☐

(ग) 'अनमोल' का अर्थ है-

(अ) मूल्यहीन ☐ (ब) अमूल्य ☐ (स) मोल ☐

(घ) 'जीवनयात्रा' किन दो शब्दों को मिलाकर बना है-

(अ) जीव + यात्रा ☐ (ब) जीवन + यात्रा ☐ (स) जी + वन + यात्रा ☐

(ङ) निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है-

(अ) मजदूरी करना जीवनयात्रा का आध्यात्मिक नियम है।

(ब) मजदूरी करना जीवनयात्रा की आध्यात्मिक नियम है।

(स) मजदूरी करना जीवनयात्रा को आध्यात्मिक नियम हो।

2. दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

किसान - ____________ सोना - ____________

पात - ____________ खेत - ____________

हाथ - ____________ लकड़ी - ____________

काम - ____________ सिर - ____________

पाँव - ____________ कागज - ____________

3. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

हवा - ____________ ____________

जल - ____________ ____________

पृथ्वी - ____________ ____________

आकाश - ____________ ____________

वृक्ष - ____________ ____________

जंगल - ____________ ____________

4. निम्नलिखित शब्दों में 'इक' अथवा 'ईय' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए-

दर्शन - ____________ संसार - ____________

चिंतन - ____________ समाज - ____________

परिवार - ____________ प्रकृति - ____________

भारत - ____________ अध्यात्म - ____________

5. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

- माँ बच्चे को दूध पिला रही है।
- माँ बच्चे को आया से दूध पिलवा रही है।

उपर्युक्त वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य-व्यापार न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है, ऐसी क्रिया को 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं।

पढ़िए और समझिए-

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
मिलना	मिलाना	मिलवाना
चरना	चराना	चरवाना
नहाना	नहलाना	नहलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना

निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक रूप लिखिए-

बैठना - ______________ देना - ______________

बेचना - ______________ करना - ______________

हँसना - ______________ पढ़ना - ______________

6. दिए गए शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए-

कवि - ______________ अन्नदाता - ______________

आज्ञाकारी - ______________ माली - ______________

पुरुष - ______________ महाराजा - ______________

विद्‌वान - ______________ देवता - ______________

11

एक कुत्ता एक मैना

पाठ बोध यह उन दिनों का संस्मरण है जब हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी शांतिनिकेतन में रहा करते थे। इस संस्मरण में उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रति अपनी आस्था व श्रद्धा का उल्लेख किया है। साथ ही, गुरुदेव का पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम व आकर्षण का भाव भी दर्शाया है।

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं और जाएँ। पता नहीं क्यों, वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान के सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं। वृद्ध और कमजोर रवीन्द्रनाथ के लिए चढ़ना असंभव था। फिर भी, बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया गया।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके दर्शन की ठानी। 'दर्शन' इसलिए क्योंकि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था, प्रायः वे यह कहकर मुस्कुराकर कहते, "दर्शनार्थी हैं क्या?"

गुरुदेव यहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी जितनी शांतिनिकेतन में। हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्ताचलगामी सूर्य की ओर निहार रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कुराए, बच्चों से जरा छेड़छाड़ की, कुशल-क्षेम पूछी और फिर चुप हो गए। ठीक उसी समय, एक कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और गुरुदेव के पैरों के पास खड़े होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने, ये आ गए! इन्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, इनके चेहरे पर कैसी शांति दिखाई दे रही है!"

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेहदाता यहाँ से दो मील

11

एक कुत्ता एक मैना

पाठ बोध यह उन दिनों का संस्मरण है जब हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी शांतिनिकेतन में रहा करते थे। इस संस्मरण में उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रति अपनी आस्था व श्रद्धा का उल्लेख किया है। साथ ही, गुरुदेव का पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम व आकर्षण का भाव भी दर्शाया है।

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं और जाएँ। पता नहीं क्यों, वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंज़िले मकान के सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं। वृद्ध और कमजोर रवीन्द्रनाथ के लिए चढ़ना असंभव था। फिर भी, बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया गया।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके दर्शन की ठानी। 'दर्शन' इसलिए क्योंकि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था, प्रायः वे यह कहकर मुस्कुराकर कहते, "दर्शनार्थी हैं क्या?"

गुरुदेव यहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी जितनी शांतिनिकेतन में। हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्ताचलगामी सूर्य की ओर निहार रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कुराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-क्षेम पूछी और फिर चुप हो गए। ठीक उसी समय, एक कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और गुरुदेव के पैरों के पास खड़े होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने, ये आ गए! इन्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, इनके चेहरे पर कैसी शांति दिखाई दे रही है!"

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेहदाता यहाँ से दो मील

दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके गुरुदेव ने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी। मैं जब भी वह कविता पढ़ता हूँ तब मेरे सामने श्रीनिकेतन की वह घटना प्रत्यक्ष–सी हो जाती है।

इस प्रसंग में एक आश्चर्य की बात का और उल्लेख किया जा सकता है – जब गुरुदेव की चिता–भस्म कोलकाता से आश्रम में लाई गई, उस समय न जाने किस सहज–बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया। कलश के पास चुपचाप बैठा रहा और आश्रमवासियों के साथ चुपचाप भस्म को अंतिम विदा देने भी गया।

एक बार मैं सवेरे–सवेरे गुरुदेव के पास गया था। उस समय एक लँगड़ी मैना छत पर फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, "देखते हो, यह रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई देता है।"

गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण भाव एकदम नहीं दिखता। मेरा अनुभव था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं। तीन–चार वर्ष से मैं एक नए मकान में रहने लगा हूँ। मकान की दीवारों में चारों ओर एक–एक सूराख छोड़ रखा है। एक मैना दंपत्ति नियमित रूप से प्रतिवर्ष वहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं। वे तिनके और चीथड़ों का ढेर लगा देते हैं। हम सूराखों में ईंटें भर देते हैं परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं।

पति–पत्नी जब कोई तिनका लेकर सूराख में आते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आई तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर नए पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही पैरों से साफ़ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर वाणी में गाना शुरू कर दिया। अचानक उसी समय यदि पति देवता भी कोई कागज़ का

टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब तो क्या कहना! दोनों के नाच–गान और आनंदमय नृत्य से सारा घर गूँज उठता है। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता पर मेरा विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती होंगी–

पत्नी – ये लोग यहाँ कैसे आ गए, जी?

पति – उँह! बेचारे आ गए हैं तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे?

पत्नी – लेकिन फिर भी इनको इतना खयाल होना चाहिए कि यह हमारा **प्राइवेट** घर है।

पति – आदमी जो हैं, इतनी सदबुद्धि कहाँ!

पत्नी – जाने भी दो!

पति – और क्या!

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी। जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत स्पष्ट रूप में मेरे सामने आ जाती है। 'कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार कवि की आँखें इस बेचारी के हृदय तक पहुँच गईं,' यह सोचता हूँ तो हैरान हो जाता हूँ।

– आचार्य हज़ारी प्रसाद दविवेदी

शिक्षण संकेत- कक्षा में 'गुरुदेव' टैगोर जी के विषय में चर्चा करें। बच्चों को उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

हज़ारी प्रसाद दविवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को बलिया (उत्तर प्रदेश) के दूबे-का-छपरा नामक गाँव में हुआ था। हिंदी और संस्कृत भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। वे प्रसिद्ध उपन्यासकार और निबंधकार के रूप में जाने जाते थे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- 'अशोक के फूल', 'कल्पलता', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा' आदि। दविवेदी जी का निधन 19 मई 1979 को हुआ था।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – प्राइवेट

शब्द बोध- REMEMBER

अस्ताचलगामी	–	अस्त होने वाला	स्नेहदाता	–	स्नेह या प्यार देने वाला
निहारना	–	देखना	चिता-भस्म	–	चिता की राख
कुशल-क्षेम	–	समाचार आदि	सूराख	–	छेद

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
शांति	शान्ति	परंतु	परन्तु
असंभव	असम्भव	सदबुदधि	सद्बुद्धि
दंपत्ति	दम्पत्ति		

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- EVALUATE

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) श्रीनिकेतन में कितनी मंज़िलें बनीं थी?

(ख) गुरुदेव लेखक को क्या कहकर संबोधित किया करते थे?

(ग) गुरुदेव का पालतू कुत्ता उनके पास पहुँचकर क्या करने लगा?

(घ) गुरुदेव को किसकी चाल में करुण भाव नज़र आता था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- UNDERSTAND

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) गुरुदेव शांतिनिकेतन को छोड़कर कहाँ रहने लग गए थे?

(ख) लेखक जब गुरुदेव के पास पहुँचे तब वे क्या कर रहे थे?

(ग) अपने पालतू कुत्ते की पीठ पर हाथ फेरने के बाद गुरुदेव ने क्या कहा?

(घ) अपने पालतू कुत्ते के संबंध में किस घटना का उल्लेख लेखक ने किया है?

(ङ) नर व मादा मैना प्रतिवर्ष कहाँ आकर डेरा जमाया करते थे?

(च) मैनाओं द्वारा तिनका लेकर आने के बाद जिस दृश्य का उल्लेख लेखक ने किया है, उसे अपने शब्दो में लिखिए।

(छ) लेखक की दृष्टि में कुत्ता और मैना के प्रति गुरुदेव की सोच क्या थी?

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(i) गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने, ये आ गए! इन्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आ... है! और देखो, इनके चेहरे पर कैसी शांति दिखाई दे रही है!"

(ii) गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण भाव एकदम नहीं दिखता। मेरा अनुभव था कि मैना क... भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं।

(iii) शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी। जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो ... मैना की करुण मूर्ति अत्यंत स्पष्ट रूप में मेरे सामने आ जाती है। 'कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और कि... प्रकार कवि की आँखें इस बेचारी के हृदय तक पहुँच गईं,' यह सोचता हूँ तो हैरान हो जाता हूँ।

(क) मैना के लिए कवि का क्या अनुभव था?

(ख) गुरुदेव ने किसे लक्ष्य करके कविता लिखी?

(ग) किसके चेहरे पर शांति दिखाई दे रही थी?

(घ) मैना की कैसी मूर्ति अत्यंत स्पष्ट रूप में कवि के सामने आ जाती है?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. वह कौन-सी बात होती है जिसके कारण आप किसी पूजनीय या आदरणीय के प्रति आकर्षित होते हैं?

2. कुत्ता वफ़ादार जानवर होता है। वह हमारे स्नेह का भूखा भी होता है। आपके मुहल्ले में एक कुत्ते को किसी कारवाले ने टक्कर मार दी है। ऐसे में आप क्या करेंगे?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) इस वाक्य में रेखांकित शब्द संकेतवाचक विशेषण है-

(अ) इस बेचारी को देखकर मैं क्या, आप भी उतना ही हैरान हो जाएँगे। ☐

(ब) इस बेचारी को देखकर मैं क्या, आप भी उतना ही हैरान हो जाएँगे। ☐

(स) इस बेचारी को देखकर मैं क्या, आप भी उतना ही हैरान हो जाएँगे। ☐

(द) इस बेचारी को देखकर मैं क्या, आप भी उतना ही हैरान हो जाएँगे। ☐

(ख) इनमें से स्त्रीलिंग शब्द है-

(अ) नृत्य ☐ (ब) स्नेह ☐ (स) छेड़छाड़ ☐

(ग) इनमें से संज्ञा शब्द है-

(अ) दूर ☐ (ब) दूरी ☐ (स) सुदूर ☐

(घ) 'आश्चर्य' का पर्यायवाची शब्द है-

(अ) कुतूहल ☐ (ब) अनुभव ☐ (स) योगदान ☐

(ङ) 'उस समय एक लँगड़ी मैना' छत पर फुदक रही थी' में विशेषण शब्द है-

(अ) समय ☐ (ब) लँगड़ी ☐ (स) मैना ☐

2. इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

स्पष्ट	x	________	सहज	x	________
सद्बुद्धि	x	________	उपयोग	x	________
नियमित	x	________	उपस्थित	x	________

3. कुछ वाक्य सरल वाक्य होते हैं जिनमें एक मुख्य क्रिया होती है।

कुछ वाक्य संयुक्त वाक्य होते हैं जिनमें दो स्वतंत्र वाक्य (या उपवाक्य) योजक की सहायता से जुड़े होते हैं।

कुछ वाक्य मिश्रित वाक्य होते हैं जिनमें एक उपवाक्य, दूसरे उपवाक्य पर आश्रित होता है।

नीचे दिए गए वाक्यों की पहचान सरल, संयुक्त या मिश्रित वाक्य के रूप में कीजिए-

(क) उसने पैरों को साफ़ कर लिया और गाना शुरू किया। ________

(ख) मैं इस कविता को पढ़कर आनंदित हो उठता हूँ। ________

(ग) मेरा विश्वास है कि मैना मेरे बारे में बात करती होगी। ________

(घ) मैं सवेरे-सवेरे गुरुदेव के पास गया था। ________

(ङ) गुरुदेव के मन में आया कि कहीं और जाएँ। ________

(च) वह ऊपर आया और गुरुदेव के पास बैठ गया। ________

(छ) हमने सपरिवार उनके दर्शन किए। ________

4. निर्देशानुसार शब्द चुनिए-

(क) वह चुपचाप अंतिम विदा देने आया। (विशेषण) ________

(ख) गुरुदेव ने बच्चों से ज़रा-सी छेड़-छाड़ की। (व्यक्तिवाचक संज्ञा) ________

(ग) हम लोग कुत्ते के आनंद को देखने लगे। (भाववाचक संज्ञा) ________

(घ) आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। (क्रियाविशेषण) ________

(ङ) ऊपर जाने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थी। (विशेषण) ________

(च) श्रीनिकेतन की वह घटना मैं भूल नहीं सकता। (विशेषण) ________

(छ) पति देवता भी तिनका लेकर आए। (रेखांकित शब्द का स्त्रीलिंग रूप) ________

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

मकान - ____________________

दर्शन - ____________________

अनुभव - ____________________

आश्चर्य - ____________________

विश्वास - ____________________

6. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

आनंद = __ + __ + __ + __ + __

निहार = __ + __ + __ + __ + __

वृद्ध = __ + __ + __ + __

देवता = __ + __ + __ + __ + __ + __

करूण = __ + __ + __ + __

12

साहसी पुत्र

पाठ बोध इस एकांकी के माध्यम से लेखक विष्णु प्रभाकर जी ने विद्यार्थियों को साहसी तथा परोपकारी बनने की प्रेरणा दी है। साथ ही उन्होंने यह भी संदेश दिया है कि विद्यार्थियों को मुसीबत से घबराना नहीं चाहिए, उसका मुकाबला करना चाहिए।

(प्रारंभिक संगीत के बाद घड़ी की टिक्-टिक् उभरकर पास आती है। उसी के साथ वृद्धा माँ का स्वर उभरता है।)

माँ – क्या बज गया मधु? तेरे दोनों भाइयों में से कोई भी तो नहीं आया।

मधु – यही तो देख रही हूँ माँ। लो, कुलदीप तो भागता हुआ आ रहा है।

कुलदीप – माँ, माँ! तुमने सुना, वहाँ बहुत बुरी हालत है।

माँ – किसकी बुरी हालत है? तू अब तक कहाँ था?

कुलदीप – माँ! बड़े ज़ोर से तूफ़ान आया है। नदियों में बाढ़ आ गई। मास्टर जी ने बताया कि गाँव के गाँव बह गए। सैकड़ों आदमी मर गए। चारों तरफ़ हाहाकार मचा हुआ है। वे कहते हैं, हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए।

माँ – तू तो बेटा, एक साँस में इतनी बात कह गया कि मेरी कुछ समझ में नहीं आया।

मधु – चर्चा तो हमारे **स्कूल** में भी हो रही थी परंतु इतना नुकसान हुआ है, यह किसी को मालूम नहीं।

कुलदीप – अभी तो और भी नुकसान होनेवाला है इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो

कुछ भी कर सकें तुरंत करें, पैसेवाले पैसे दें, जिनके पास अनाज है, वे अना... कपड़े हैं तो कपड़े दें और जो नौजवान हैं, वे लोगों को बचाने का काम करें।

माँ – हाँ, हाँ, यह तो होना ही चाहिए। तो बता ये चीजें कहाँ भेजनी होंगी?

कुलदीप – वह तो लेनेवाले यहीं आ जाएँगे लेकिन मैं जा रहा हूँ।

(दोनों एक साथ) कहाँ जा रहा है?

कुलदीप – लोगों को बचाने।

माँ – *(हँसकर)* रहने दे बेटा! तेरे विचार बहुत अच्छे हैं लेकिन तू इतना छोटा है कि लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जाएँगे।

मधु – काम तो यहाँ ही बहुत हैं। घर-घर जाकर चंदा इकट्ठा कर सकते हो।

कुलदीप – वह तुम करना। मैं मर्द हूँ और मर्द घर में नहीं बैठा करते।

माँ – अच्छा, अच्छा, पहले तू खाना खा ले और हाँ, संदीप कहाँ है?

मधु – माँ, मुझे तो लगता है, भैया लोगों को बचाने के लिए चले गए हैं। वे हमेशा ऐसी बातें किया करते हैं। कहते थे, मेरे पिता जी ने आज़ादी की लड़ाई में अपने प्राण दिए। मुझे भी तो अब कुछ करना चाहिए।

(एक युवक वहाँ आता है।)

युवक – शायद संदीप का घर यही है? है न। वह बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है। मैं यही बताने आया था। आप चिंता न करें।

माँ – सुनो तो बेटा, कितनी देर हो गई उसको गए?

युवक – वे तो सुबह ही चले गए थे। मैं आपको जल्दी खबर नहीं दे सका। मैं भी वहीं जा रहा हूँ।

मधु – मैं जानती थी। यह सब सुनकर भैया रुक नहीं सकते थे।

कुलदीप – लेकिन मुझे तो अब रुकना पड़ेगा। भैया बहुत बुरे हैं, हर काम में आगे रहते हैं।

माँ – (हँसकर) वह बड़ा जो है। उसके पिता कभी ज़िंदगीभर चैन से नहीं बैठे। यह भी नहीं बैठेगा।

मधु – अच्छा ही है, पिता जी का काम कोई तो करे। आओ, हम भगवान से प्रार्थना करें कि वे उन्हें सकुशल रखें।

माँ – (जैसे ध्यान मग्न हो गई हों) हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है? क्यों हमें दुःख सहने पड़ रहे हैं। कितना बलिदान चाहता है? हे प्रभु! तू मेरे बच्चे की रक्षा कर। वह खूब सेवा करे परंतु सकुशल घर लौट आए।

कुलदीप – यह सब तो ठीक है माँ। अब कुछ करना भी तो चाहिए। तुम दोनों घर-घर जाकर अनाज और धन इकट्ठा करो। मैं **कैंप** में जाकर वालंटियर का काम करता हूँ। मैं जाऊँ न माँ?

माँ – जा, लेकिन एक बात का ध्यान रखना। नदी के पास मत जाना।

कुलदीप – मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा, वह तो खुद हमारे पास आ गई है। *(हँसकर)* अच्छा मैं चला।

माँ – लेकिन खाना तो खाता जा!

कुलदीप – नहीं... नहीं, देर हो जाएगी। वहीं कुछ खा लूँगा।

(वह चला जाता है। कुछ शोर सुनाई देता है।)

मधु – देखो, देखो, माँ कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं! वह देखो, **ट्रक** भी है। ऐसा लगता है, वे बाढ़ पीड़ित गाँवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं?

माँ – क्या ही अच्छा हो, यदि सभी ऐसा कर सकें। फिर तो बहुत-सी समस्याएँ यूँ ही खत्म हो जाएँगी। मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवा कार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करे!

मधु – जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

(एक गाड़ी वहाँ आकर रुकती है। एक युवती पास आती है।)

युवती – क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधु – जी हाँ!

माँ – *(एकदम)* क्या बात है बेटी? संदीप कहाँ है? कैसा है?

युवती – आप शायद उनकी माँ हैं? चिंता न कीजिए, कोई विशेष बात नहीं है।

मधु – लेकिन आप हैं कौन?

युवती – मैं सेवा दल की सदस्या हूँ। बाहर मेरे और भी साथी खड़े हैं। हम सब लोग बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए आए हैं। संदीप जी ने वहाँ बहुत काम किया। प्राणों की चिंता किए बिना सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर सभी लोग दंग रह गए। उन्होंने ज़रा भी आराम नहीं किया लेकिन अचानक...

(दोनों एक साथ) अचानक क्या हुआ? बोलती क्यों नहीं? जल्दी बताओ क्या हुआ?

युवती – आप घबराइए नहीं! लोगों को बचाते-बचाते उनकी नाव उलट गई परंतु उन्हें तो तैरना आता था, उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सब लोगों को दूसरी

नाव में चढ़ा नहीं लिया गया, तब तक वे नहीं चढ़े लेकिन जैसे ही चढ़ने
सहसा पानी का एक ज़ोरदार रेला आया और वे बह गए।

माँ – *(चीखकर)* हाय राम!

युवती – नहीं... नहीं, परेशान न होइए। दूसरे लोगों ने उन्हें बचा लि
कठिन परिश्रम के कारण वे बेहोश हो गए हैं। मेरे साथ आ
उन्हें अंदर ले आएँ। दवा दे दी है, जल्दी ही उन्हें होश
जाएगा।

मधु – चलो, चलो। *(तेज़ी से बाहर जाते हैं फिर अंदर आते हैं।)*

युवक – हाँ ऐसे! इन्हें यहाँ लिटा दीजिए। डॉक्टर ने इंजेक्शन ल
दिया है। आपका बेटा बहुत बहादुर है। देखिए, उन्हें होश
रहा है।

(तभी कुलदीप वहाँ आता है।)

कुलदीप – माँ, माँ, मैंने सुना है......... अरे! ये तो भैया हैं। इन्हें क्या हुआ

मधु – बाढ़ पीड़ितों को बचाते-बचाते ये नदी में गि
गए थे। लो, इन्होंने आँखें खोल दीं।

संदीप – *(बहुत धीमा स्वर)* मैं, मैं कहाँ हूँ?

युवक – तुम अपने घर में हो। ये तुम्हारी माँ है, बहि
है, भाई है।

संदीप – मुझे तो इतना याद है कि जैसे मैं अथाह जल
में डूब रहा हूँ और फिर कोई अंतरिक्ष में से
आकर मुझे बचा रहा है। वे शायद तुम थे।

युवक – संदीप बाबू! आप बोलिए नहीं। आज आराम
कीजिए। अभी आपको बहुत काम करना है।

संदीप – बहुत अच्छा डॉक्टर, आपकी आज्ञा
का पालन होगा।

(सब हँसते हैं।)

युवती – अच्छा अब हमें
आज्ञा दीजिए।

माँ – ऐसे नहीं। चाय बन रही है, पीकर जाओ।

युवक – हमें तो जाने ही दीजिए।

कुलदीप – समझ लीजिए, भैया को अभी होश नहीं आया, पाँच **मिनट** और लगेंगे।
(सब हँसते हैं।)

युवक – अच्छी बात है। पाँच मिनट और रुकेंगे।

कुलदीप – तो बस, लो चाय भी आ गई।
(हँसी और समाप्ति सूचक संगीत)

– विष्णु प्रभाकर

शिक्षण संकेत- कक्षा में बच्चों को माँ-मधु, कुलदीप-संदीप, युवक-युवती के संवाद अभिनय सहित उच्चारित करने को कहें।

जीवन परिचय

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून, सन् 1912 को उत्तर प्रदेश के मुजफ़्फ़रनगर ज़िले के मीरापुर ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। बाद में वे अपने मामा के घर हिसार चले गए। श्री प्रभाकर के लेखन के मुख्य अवयव राष्ट्रीयता, देशभक्ति, सामाजिक चेतना हैं। इनकी रचनाएँ 'अर्धनारीश्वर' तथा 'आवारा मसीहा' बहुत लोकप्रिय हैं। इन्हें सन् 1993 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, सन् 1995 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार तथा सन् 2004 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। इनका देहावसान 11 अप्रैल, सन् 2009 में हुआ। इन्होंने अपनी वसीयत में अपने संपूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। इसीलिए उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया। उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को सौंप दिया गया।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – स्कूल, कैंप, वालंटियर, ट्रक, डॉक्टर, इंजेक्शन, मिनट

शब्द बोध- REMEMBER

नुकसान – हानि
मर्द – पुरुष
चैन – आराम
हुक्म – आदेश
पीड़ित – दुखी
बलिदान – त्याग

वालंटियर	–	स्वयंसेवक
सहसा	–	एकाएक
इंजेक्शन	–	सुई
अचानक	–	एकाएक
परिश्रम	–	मेहनत
अथाह	–	जिसका थाह न हो

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
प्रारंभिक	प्रारम्भिक	वृद्धा	वृद्धा
परंतु	परन्तु	इकट्ठा	इकट्ठा
चिंता	चिन्ता	अंदर	अन्दर
इंजेक्शन	इन्जेक्शन	अंतरिक्ष	अन्तरिक्ष

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- EVALUATE

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) माँ भगवान से क्या प्रार्थना करती है?
(ख) मधु ने माँ को क्या सुझाव दिया?
(ग) संदीप के साथ क्या हादसा हुआ?
(घ) होश आते ही संदीप ने क्या कहा?
(ङ) संदीप बेहोश कैसे हो गया था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- UNDERSTAND

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) कुलदीप ने माँ को किस आपदा के बारे में सूचना दी?
(ख) कुलदीप ने बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए क्या उपाय सुझाए?
(ग) संदीप कहाँ चला गया था?
(घ) युवती ने संदीप के बारे में क्या बताया?
(ङ) बाढ़ क्यों आती है? लिखिए।
(च) पाठ के लेखक कौन हैं?

3. आशय स्पष्ट कीजिए-

नदी तो खुद हमारे पास आ गई है।
बहुत-सी समस्याएँ यूँ ही खत्म हो जाएँगी।

4. निम्नलिखित कथन किसने-किससे कहा?

	किसने	किससे
(क) "दोनों भाईयों में से कोई भी तो नहीं आया।"	______	______
(ख) "बड़े ज़ोर से तूफ़ान आया है।"	______	______
(ग) "देखो, कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं?"	______	______
(घ) "वे तो सुबह ही चले गए थे।"	______	______
(ङ) "लोगों को बचाते-बचाते उनकी नाव पलट गई।"	______	______

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"क्या ही अच्छा हो, यदि सभी ऐसा कर सकें। फिर तो बहुत-सी समस्याएँ यूँ ही खत्म हो जाएँगी। मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवा कार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करे!"

(क) "यदि सभी ऐसा कर सकें," किस काम को करने की बात हो रही है?

(ख) माँ, "बहुत-सी" किन समस्याओं को खत्म करवाना चाहती है?

(ग) दोनों बेटे कौन-सा सेवा कार्य कर रहे हैं?

(घ) माँ अपने बेटों की रक्षा के लिए क्यों चिंतित है?

(ङ) अचानक क्या समस्या आ गई थी?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. देश के किसी भी भाग में बाढ़ के आने का समाचार सुनने के बाद आपने क्या किया? अपने कार्यों की कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. राष्ट्र पर आने वाली हर विपदा का सामना सैनिकों को करना पड़ता है। "हमारे सैनिक" विषय पर अनुच्छेद लिखिए।
3. जब भी देश में प्राकृतिक विपदा आती है, पूरे राष्ट्र को एकजुट होकर अपना योगदान देना चाहिए। क्या आप अपना पूर्ण योगदान देते हैं?

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'अथाह' का पर्यायवाची है-

(अ) सीमित ☐ (ब) अपार ☐ (स) थाह ☐

(ख) 'सदस्या' का पुल्लिंग है-
(अ) सदस्य ☐ (ब) सदस्यों ☐ (स) प्राणी ☐

(ग) 'नुकसान' का विलोम है-
(अ) हानि ☐ (ब) फायदा ☐ (स) क्षति ☐

(घ) हिंदी में अंग्रेजी के प्रचलित शब्द 'स्कूल' को कहते है-
(अ) शिक्षा ☐ (ब) विद्यालय ☐ (स) विद्यार्थी ☐

(ङ) 'आपका बेटा बहुत बहादुर है' में 'बहादुर' शब्द है-
(अ) क्रिया ☐ (ब) विशेषण ☐ (स) विशेषण ☐

2. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

रक्षा = ___ + ___ + ___ + ___ + ___
चिंता = ___ + ___ + ___ + ___ + ___
कार्य = ___ + ___ + ___ + ___ + ___
तूफ़ान = ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___
ज़िंदगी = ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

3. अंग्रेज़ी शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए हम (ॅ) के चिह्न का प्रयोग करते हैं। जैसे - डॉक्टर
पाँच ऐसे ही (ॅ) के चिह्नवाले शब्द लिखिए-

___ ___ ___ ___ ___

4. दिए गए शब्द-समूह के लिए एक शब्द बनाइए-
(क) जिसके अंदर साहस हो ___
(ख) जो बड़ों की आज्ञा मानता हो ___
(ग) जो अपने देश से प्रेम करे ___

5. दिए गए शब्दों का बहुवचन रूप (कारक शब्दों सहित) प्रयोग करते हुए वाक्य में भरिए-
(क) मेरे ___ बहुत साहस का काम किया। (भाई)
(ख) कुछ ___ हालत बहुत खराब थी। (गाँव)
(ग) अनेक ___ लोगों को ठहराया गया। (स्कूल)
(घ) ___ निकलकर अनेक युवा सामने आए। (घर)

6. उचित स्थान पर उपयुक्त विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य पुनः लिखिए-
(क) क्या संदीप जी का मकान यही है ___
(ख) अच्छा अब हमें आज्ञा दीजिए ___
(ग) ये तुम्हारी माँ है बहिन है भाई है ___
(घ) अभी आपको बहुत काम करना है ___

13

घीसा

पाठ बोध प्रस्तुत रेखाचित्र में घीसा ही इसका प्रमुख पात्र है। संपूर्ण रेखाचित्र 'घीसा' के इर्द-गिर्द ही घूमता है। घीसा एक ऐसा बालक था, जो लेखिका द्‌वारा पढ़ाए जानेवाले गरीब बच्चों में सबसे होशियार था। वह लेखिका द्‌वारा दिए गए हर आदेश का पालन करता है। वह अपना कुरता देकर लेखिका के लिए भेंट में तरबूज़ लेकर आता है। उसकी अबोधता, भोलेपन तथा निःस्वार्थ-भावना से लेखिका बहुत हैरान होती है। अंत में घीसा भगवान को प्यारा हो जाता है। लेखिका को वैसा शिष्य ढूँढ़ने पर भी फिर कभी न मिला।

गंगा पार झूँसी के **खंडहर** और उसके आस-पास के गाँवों के प्रति मेरा जैसा अकारण आकर्षण रहा है, उसे देखकर भी **संभवतः** लोग जन्म-जन्मांतर के संबंध पर व्यंग्य करने लगते हैं। है भी तो आश्चर्य की बात! जिस अवकाश के समय को लोग इष्ट-मित्रों से मिलने, उत्सवों में सम्मिलित होने तथा अन्य आमोद-प्रमोद के लिए सुरक्षित रखते हैं, उसी को मैं इस खंडहर और उसके क्षत-विक्षत चरणों पर पछाड़े खाती हुई भागीरथी के तट पर काट ही नहीं, सुख से काट देती हूँ।

ग्वालों के बालक जो गाय-भैंसों को बहकते देखकर लकुटी लेकर दौड़ पड़ते, गड़रियों के बच्चे जो अपने झुंड की एक भी बकरी या भेड़ को उस ओर बढ़ते देखकर कान पकड़कर खींच ले जाते और व्यर्थ ही दिन-भर गिल्ली-डंडा खेलनेवाले निठल्ले लड़के भी बीच-बीच में नज़र बचाकर मेरा रुख देखना नहीं भूलते, कह नहीं सकती, कब और कैसे मुझे उन बालकों को कुछ सिखाने का ध्यान आया... मेरे विद्‌यार्थी पीपल के पेड़ की घनी छाया में मेरे चारों ओर एकत्र हो गए और वे जिज्ञासु कैसे थे सो क्या बताऊँ! कुछ कानों में बालियाँ और हाथों में कड़े पहने, धुले कुरते और ऊँची धोती में, कुछ अपने बड़े भाई का पाँव तक लंबा कुरता पहने खेत में डराने के लिए खड़े किए हुए नकली आदमी का स्मरण दिलाते थे, कुछ उभरी पसलियों, बड़े पेट और टेढ़ी दुर्बल टाँगों के

कारण अनुमान से ही मनुष्य-संतान की परिभाषा में आ सकते थे; पर घीसा उनमें अकेला ही रहा। पढ़ने, उसे सबसे पहले समझने, उसे व्यवहार के समय स्मरण रखने, पुस्तक में एक भी धब्बा न लगाने, **स्लेट** को चमचमाती रखने और अपने छोटे-से-छोटे काम का उत्तरदायित्व बड़ी गंभीरता से निभाने में उसके समान कोई चतुर न था। शनीचर के दिन ही वह अपने छोटे और दुर्बल हाथों से पीपल की छाया को गोबर-मिट्टी से पीला चिकनापन दे आता था। फिर इतवार को माँ के मज़दूरी पर जाते ही पेड़ की नीची डाल पर रखी हुई मेरी शीतलपाटी उतारकर बार-बार झाड़-पोंछकर बिछा जाती, कभी काम न आनेवाली सूखी स्याही लगी काँच की दवात, टूटे **निब** और उखड़े हुए रंगवाले भूरे-हरे कलम को पेड़ के कोटर से निकालकर यथास्थान रख दिया जाता और तब इस विचित्र पाठशाला का विचित्र मंत्री और निराला विद्यार्थी कुछ आगे बढ़कर मेरे सप्रणाम स्वागत के लिए प्रस्तुत हो जाते।

मुझे आज भी वह दिन नहीं भूलता, जब मैंने बिना कपड़ों का प्रबंध किए हुए ही उन बेचारों को सफ़ाई का महत्व समझाते-समझाते थका डालने की मूर्खता की। दूसरे इतवार को सब जैसे-के-तैसे ही सामने थे। केवल कुछ गंगा जी में मुँह इस तरह धो आए थे कि मैल अनेक रेखाओं में विभक्त हो गया था। कुछ के हाथ-पाँव ऐसे घिसे थे कि शेष मलिन शरीर के साथ वे अलग जोड़े हुए-से लगते थे और कुछ मैले फटे कुरते घर ही छोड़कर ऐसे अस्थि-पंजरमय रूप में आ उपस्थित हुए थे; पर घीसा गायब था। पता चला कि कल रात को माँ को मज़दूरी के पैसे मिले और आज सवेरे वह सब काम छोड़कर पहले साबुन लेने गई। अभी लौटी है, अतः घीसा कपड़े धो रहा है क्योंकि गुरु साहब ने कहा था कि नहा-धोकर साफ़ कपड़े पहनकर आना और अभागे के पास कपड़े ही क्या थे! जब घीसा नहाकर गीला अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने आ खड़ा हुआ, तब आँखें ही नहीं, मेरा रोम-रोम गीला हो गया। उस समय समझ में आया कि द्रोणाचार्य ने अपने भील शिष्य से अँगूठा कैसे कटवा लिया था।

होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐसे गहरे रंगों से अंकित है, जिसका धुल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य धीरे-धीरे बढ़

रहा था। घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था। दो-चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही, फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठाकर काम पर जाने लगी। इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली, परंतु पीपल से पचास पग दूर पहुँचते-पहुँचते, उसी को डगमगाते पैरों से गिरते-पड़ते अपनी ओर आते देख मेरा मन उद्विग्न हो उठा। वह प्यास से जाग गया था। इतने में मुल्लू के काका ने नदी पार से लौटकर दरवाज़े से ही अंधी बुढ़िया को बताया कि शहर में दंगा हो रहा है, तब घीसा को गुरु साहब का ध्यान आया। मुल्लू के काका के हटते ही वह ऐसे हौले-हौले उठा कि बुढ़िया को पता ही न चला और कभी दीवार, कभी पेड़ का सहारा लेता-लेता इस ओर भागा। वह सोचकर आया था कि अब वह गुरु साहब को किसी तरह भी न जाने देगा।

जब मुझे उन लोगों को छोड़ जाना था, तब मेरा मन बहुत-ही अस्थिर हो उठा। कुछ बालक उदास थे और कुछ पढ़ने की छुट्टी से प्रसन्न। कुछ जानना चाहते थे कि छुट्टियों के दिन चूने की टिपकियाँ रखकर गिने जाएँ या कोयले की लकीरें खींचकर। कुछ के सामने बरसात में चूते हुए घर में आठ पृष्ठ की पुस्तक बचा रखने का प्रश्न था और कुछ कागज़ों पर चूहों के आक्रमण की ही समस्या का समाधान चाहते थे। तब मैंने बहुत दूर एक छोटा-सा काला धब्बा आगे बढ़ते देखा वह कुछ और नहीं बल्कि नंगे बदन घीसा एक बड़ा तरबूज़ दोनों हाथों में सँभाले आ रहा था, जिसमें बीच के कुछ कटे भाग में से भीतर की ईषत्-लक्ष्य ललाई चारों ओर के गहरे हरेपन में कुछ बंद गुलाबी फूल जैसी जान पड़ती थी।

घीसा के पास न पैसा था, न खेत-तब क्या वह इसे चुरा लाया है? घीसा गुरु साहब से झूठ बोलना भगवान जी से झूठ बोलना समझता है। वह तरबूज़ कई दिन पहले देख आया था। माँ के लौटने में जाने क्यों देर हो गई, तब उसे अकेले ही खेत पर जाना पड़ा। वहाँ खेतवाले का लड़का था, जिसकी नज़र उसके नए कुरते पर बहुत दिन से थी। उसने कहा– "पैसा नहीं है, तो कुरता दे जाओ।" और आज घीसा तरबूज़ न लेता, तो कल उसका क्या करता। इसलिए कुरता दे आया, पर गुरु साहब को चिंता करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि गरमी में वह कुरता पहनता ही नहीं और आने-जाने के लिए पुराना ठीक रहेगा। तरबूज़ सफ़ेद न हो, इसलिए कटवाना पड़ा-मीठा है या नहीं, यह देखने के लिए उँगली से कुछ निकाल भी लेना पड़ा।

गुरु साहब न लें, तो घीसा रात-भर रोएगा। ले जाएँ तो वह रोज़ नहा-धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा।

उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक के सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

जब फिर उस ओर जाने का मुझे अवकाश मिल सका, तब पता चला कि घीसा को उसके भगवान जी ने सदा के लिए पढ़ने से अवकाश दे दिया था। आज वह कहानी दोहराने की मुझ में शक्ति नहीं है। अभी मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है कि मैं अन्य मलिन मुखों में उसकी छाया ढूँढ़ती रहूँ।

– **महादेवी वर्मा**

शिक्षण संकेत- बच्चों को कक्षा में पाठ पढ़ाने के बाद समझाएँ कि हमें सदा शिक्षणगण एवं गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए, उनके प्रति आदर-भाव रखना चाहिए। उन्हें बताएँ कि गुरु का स्थान गोविंद से भी ऊँचा क्यों माना गया है।

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद ज़िले में हुआ था। इनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाध्यापक थे। इनके नाना ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। इन्होंने एम०ए० (संस्कृत) परीक्षा प्रयाग विद्यापीठ से उत्तीर्ण किया। इसके बाद यह प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या और फिर कुलपति नियुक्त हुईं। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा गया है। महादेवी वर्मा विरह और वेदना की श्रेष्ठ कवयित्री हैं और छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। महादेवी वर्मा को उनकी रचना 'यामा' के लिए भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' प्रदान किया गया। भारत सरकार ने उन्हें सन् 1956 में 'पद्मभूषण' और सन् 1988 में 'पद्मविभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। इस महान कवयित्री का निधन सन् 1987 में हुआ था।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द - स्लेट, निब

शब्द बोध- REMEMBER

खंडहर	–	टूटे-फूटे मकान का बचा हुआ भाग			
अकारण	–	बिना कारण	आकर्षण	–	खिंचाव
संभवतः	–	शायद, मुमकिन है	अवकाश	–	छुट्टी
इष्ट-मित्र	–	प्रिय दोस्त			
आमोद-प्रमोद	–	भोग-विलास, रंग-रलियाँ			
क्षत-विक्षत	–	घायल, लहूलुहान	लकुटी	–	लाठी
निठल्ले	–	बेरोज़गार, बेकार			
जिज्ञासु	–	जानने की इच्छा रखनेवाला			
दुर्बल	–	कमज़ोर	उत्तरदायित्व	–	ज़िम्मेदारी
शीतलपाटी	–	एक प्रकार की पतली और चिकनी चटाई			
कोटर	–	पेड़ के तने में खुदा हुआ गड्ढा			
विभक्त	–	बँटा हुआ, विभाजित	मलिन	–	मैला

अस्थि-पंजरमय	–	हड्डियों के ढाँचे के समान, कंकाल के समान		
स्मृति	–	याद्दाश्त	वैमनस्य	– मनमुटाव, दुश्मनी
ज्वर	–	बुखार	उद्विग्न	– आकुल, खिन्न
हौले-हौले	–	धीरे-धीरे		
ईषत्	–	थोड़ा, अल्प, आंशिक रूप में		
आदान-प्रदान	–	लेन-देन		

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
खंडहर	खण्डहर	संभवतः	सम्भवतः
संबंध	सम्बन्ध	झुंड	झुण्ड
डंडा	डण्डा	विद्यार्थी	विद्यार्थी
गंभीरता	गम्भीरता	मिट्टी	मिट्टी
प्रबंध	प्रबन्ध	उद्विग्न	उद्विग्न
छुट्टियाँ	छुट्टियाँ	बंद	बन्द

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**
   (क) घीसा का गाँव कहाँ बसा हुआ था?
   (ख) लेखिका की पाठशाला कहाँ लगती थी?
   (ग) घीसा ने गुरु-दक्षिणा में क्या दिया?
   (घ) क्या देकर घीसा ने तरबूज़ खरीदा?
   (ङ) घीसा शनिवार को क्या करता था?

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**
   (क) घीसा अन्य बच्चों से कैसे भिन्न था?
   (ख) सफ़ाई का महत्व समझाने के बाद बच्चे किस रूप में दिखाई पड़े?
   (ग) घीसा रविवार को क्या करता था?
   (घ) क्या देखकर लेखिका का रोम-रोम गीला हो गया?
   (ङ) घीसा का शारीरिक रंग कैसा था?

3. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान भरकर वाक्यों को पूरा कीजिए-

(क) ग्वालों के बालक __________ लेकर दौड़ पड़ते।

(ख) कुछ बालक __________ थे।

(ग) कागज़ों पर __________ के आक्रमण की चिंता थी।

(घ) घीसा के पास न __________ था न __________।

(ङ) द्रोणाचार्य ने अपने __________ से __________ कटवा लिया था।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

होली के पहले की एक घटना तो मेरी स्मृति में ऐसे गहरे रंगों से अंकित है, जिसका धुल सकना सहज नहीं। उन दिनों हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य धीरे-धीरे बढ़ रहा था। घीसा दो सप्ताह से ज्वर में पड़ा था। दो-चार दिन उसकी माँ स्वयं बैठी रही, फिर एक अंधी बुढ़िया को बैठाकर काम पर जाने लगी। इतवार की साँझ को मैं बच्चों को विदा दे, घीसा को देखने चली।

(क) यह घटना किस समय की है?

(ख) घीसा की माँ को काम पर क्यों जाना पड़ा?

(ग) घीसा को क्या हो गया था?

(घ) हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य का क्या अर्थ है?

(ङ) 'स्मृति' शब्द का अर्थ लिखकर वर्ण-विच्छेद कीजिए।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. हमारे देश में अशिक्षा दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न किए जा रहे हैं। आपको "अशिक्षा मिटाओ" अभियान के लिए कार्य करने का अवसर मिले तो आप अपना योगदान किस प्रकार देंगे?
2. गाँव के दो विद्यार्थी पाठशाला जा रहे हैं। रास्ते में वे क्या बातचीत करेंगे? उनकी बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।
3. दिए गए चित्र का वर्णन अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर कीजिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'अवकाश' का पर्यायवाची है-
(अ) आकुल ☐ (ब) आकलन ☐ (स) छुट्टी ☐

(ख) 'दुर्बल' का विलोम होगा-
(अ) सबल ☐ (ब) निर्बल ☐ (स) कमजोर ☐

(ग) 'जानने की इच्छा रखनेवाले' को कहेंगे-
(अ) सर्वज्ञ ☐ (ब) अल्पज्ञ ☐ (स) जिज्ञासु ☐

(घ) 'दो सप्ताह' में 'कितने दिन' होते हैं-
(अ) सात ☐ (ब) चौदह ☐ (स) दस ☐

(ङ) 'मेरा रोम-रोम गीला हो गया' में 'गीला' शब्द है-
(अ) संज्ञा ☐ (ब) क्रिया ☐ (स) विशेषण ☐

2. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चले, वह वचन कहलाता है। वचन के दो भेद होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए-

बालक - ____________ टाँग - ____________

बच्चा - ____________ लकीर - ____________

छुट्टी - ____________ मंत्री - ____________

3. 'सुरक्षित' शब्द 'सुरक्षा' में 'इत' प्रत्यय लगाने से बना है।

'इत' प्रत्यय से बने चार शब्द लिखिए-

____________ ____________ ____________ ____________

'अस्थिर' शब्द 'स्थिर' में 'अ' उपसर्ग जोड़कर बनाया गया है।

'अ' उपसर्ग से बने चार शब्द लिखिए-

____________ ____________ ____________ ____________

4. काल - क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। काल के मुख्यतः तीन भेद हैं-

- **वर्तमान काल**- जो समय चल रहा है। जैसे- घीसा कपड़े धो रहा है।
- **भूतकाल**- जो समय बीत चुका है। जैसे- सब बच्चे वहाँ एकत्र हो जाते थे।
- **भविष्यत् काल**- जो समय आने वाला है। जैसे- गुरु साहब को घीसा जाने नहीं देगा।

पाठ से तीनों काल के दो-दो उदाहरण छाँटकर लिखिए-

वर्तमान काल - ____________________

____

भूतकाल - ____________________

____

भविष्यत् काल - ____________________

____

5. निम्न शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

मित्र - ____________ ____________

संसार - ____________ ____________

नदी - ____________ ____________

माँ - ____________ ____________

सवेरे - ____________ ____________

दिन - ____________ ____________

14

तीन इच्छाएँ

जंगल के किनारे किसी गाँव में एक लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ रहता था। लकड़हारा रोज़ जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता और उन्हें बाज़ार में बेंच आता। उससे जो पैसे मिलते, उसमें उनका गुज़र–बसर हो जाता।

एक दिन लकड़हारा जंगल में लकड़ियाँ काटने गया। जंगल में जाकर वह एक बड़े से पेड़ के पास खड़ा हो गया। उसने पेड़ को बड़े ध्यान से देखा और बड़बड़ाते हुए कहा, "यदि मैं इस पेड़ को काट लूँ तो मुझे फिर कभी लकड़ियाँ काटने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। यह पेड़ बहुत ही बड़ा है। इससे मुझे बहुत सारी लकड़ी प्राप्त होगी और उसे बेंचकर मैं मालामाल हो जाऊँगा।"

यह कहकर उसने पेड़ काटने के लिए अपनी कुल्हाड़ी उठाई, परंतु तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "रुको! इस पेड़ को मत काटो। कृपा करके इसे छोड़ दो।"

लकड़हारा रुक गया और उसने आश्चर्यपूर्वक चारों तरफ़ देखा। परंतु उसे कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। वह चकित था कि अभी किसी ने उसे रुकने के लिए कहा और कोई दिखाई भी नहीं दे रहा। उसे लगा कि ये उसका भ्रम था। अतः उसने एक बार फिर पेड़ पर वार करने के लिए अपनी कुल्हाड़ी उठाई, पर उसे फिर एक आवाज़ सुनाई दी, "कृपा करके मेरे ऊपर दया करो। पेड़ को मत काटो।"

वह फिर रुक गया और उसने चारों तरफ़ देखा, परंतु इस बार भी उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसे चकित देखकर पेड़ से आवाज़ आई, "मैं इस पेड़ की परी हूँ। यह पेड़ मेरा घर है। सरदियों में मैं इस पेड़ के तने में और बाकी दिन इसकी शाखाओं में रहती हूँ। यदि तुम इस पेड़ को काट दोगे तो मैं बेघर हो जाऊँगी। सरदियाँ आने वाली हैं। पेड़ कटने पर मेरा आश्रय छिन जाएगा और मैं ठंड के मारे मर जाऊँगी। तुम मेरा घर मत छीनो। इसके बदले मैं तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की तीन इच्छाएँ पूरी करूँगी।"

यह सुनकर लकड़हारा बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, 'अब बगैर कुछ किए मैं धनी हो जाऊँगा।' वह तुरंत यह खुशखबरी अपनी पत्नी को सुनाने के लिए घर की ओर दौड़ पड़ा। घर पर उसकी पत्नी उसका इंतज़ार कर रही थी। लकड़हारे को जल्दी आया देखकर उसकी पत्नी ने कहा, "अरे! आज तो तुम बहुत जल्दी वापस आ गए। तुम बहुत खुश भी दिखाई दे रहे हो। क्या बात है, मैं भी तो जानूँ?"

लकड़हारे ने प्रफुल्लित होकर कहा, ''आज तो मुझे बहुत बड़ा खज़ाना मिल गया है। मिला नहीं है, मिलने वाला है। अरे! मिल ही गया समझो।'' यह कहकर वह खुशी से झूमने लगा। लकड़हारे की पत्नी की समझ में कुछ नहीं आया। वह बोली, ''तुम क्या बोल रहे हो? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। बताओ तो आखिर बात क्या है?''

लकड़हारे ने अपनी पत्नी को जंगल वाली पूरी घटना सुना दी। यह सुनकर उसकी पत्नी खुशी के मारे उछल पड़ी। लकड़हारा बोला, ''मुझे बहुत ज़ोरों की भूख लगी है। जल्दी से खाना दो।''

पत्नी बोली, ''मैंने तो अभी कुछ भी नहीं बनाया है। तुम तो देर से आते हो। अभी कुछ बना देती हूँ।''

इस पर लकड़हारे ने कहा, ''नहीं, रहने दो। मैं खाना बनने तक इंतज़ार नहीं कर सकता।''

वह खास अंदाज़ में बोला, ''मेरी इच्छा है कि भूख मिटाने के लिए मुझे स्वादिष्ट हलवा मिल जाए।'' उसके बोलते ही तुरंत एक कटोरे में हलवा उसके सामने आ गया। उसने जी भरकर हलवा खाया। वह जितना हलवा खाता, कटोरा उतना ही फिर भर जाता। अतः भरपेट खाने के बाद उसने अपनी पत्नी से कहा, ''आओ, तुम भी हलवा खा लो। बहुत ही स्वादिष्ट है।''

उसकी पत्नी गुस्से से बोली, ''मूर्ख! तुमने एक वरदान बेकार कर दिया। मैं चाहती हूँ कि यह सारा हलवा तुम्हारी नाक पर चिपक जाए।'' बस, लकड़हारे की पत्नी के बोलने भर की देरी थी कि तुरंत सारा हलवा लकड़हारे की नाक पर चिपक गया।

लकड़हारा गुस्से से झल्लाकर बोला, ''अरे! मूर्ख औरत, यह तुमने क्या कर दिया!'' यह कहकर वह अपनी नाक से हलवा छुड़ाने लगा। बहुत कोशिश करने के बाद भी वह अपनी नाक से हलवा नहीं छुड़ा पाया। उसने अपनी पत्नी से चिल्लाते हुए कहा, ''यह सब तुम्हारी गलती की वज़ह से हुआ है। तुम्हारे कारण हमारा दूसरा वरदान भी व्यर्थ चला गया।'' उसकी पत्नी बोली, ''अभी हमारा तीसरा वरदान तो है न! उस वरदान को माँगकर हम धनी हो सकते हैं।''

लकड़हारा झुँझलाकर बोला, ''बेवकूफ़ दुष्ट औरत! मेरी नाक पर गरम हलवा चिपका हुआ है और तू धनी होने के सपने देख रही है।''

वह फिर खास अंदाज़ में बोला, ''मेरी इच्छा है कि मेरे नाक पर से हलवा छूट जाए।'' उसके ऐसा कहते ही उसकी नाक से हलवा गायब हो गया। लकड़हारे ने चैन की साँस ली।

उन दोनों ने अपनी बेवकूफ़ी की वज़ह से अपने तीनों वरदान बेकार कर दिए।

15

नीतिवचन

पाठ बोध 'रामचरितमानस' जैसे पवित्र महाकाव्य के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने अनेक सामाजिक सरोकारों से संबंधित दोहे-चौपाइयाँ रची हैं जिनसे पूरा मानव समाज ज्ञान के प्रकाश से अवलोकित होता है।

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरण इक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर।।

तुलसी इह संसार में, भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिल-मिल चालिए, नदी-नाव संजोग।।

का बरषा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने।।

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।

कायर मन कहुँ एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा।।

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

आपु आपु कहँ सब भलो, अपने कहँ कोइ कोइ।
तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ।।

सचिव, वैद्य, गुरु तीन जौ प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धरम, तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास।।

चरन चोंच लोचन रंग्यो, चलै मराली चाल।
क्षीर-नीर बिबरन समय, बक उघरत तेहि काल।।

– गोस्वामी तुलसीदास

शिक्षण संकेत- शिक्षिका बच्चों को तुलसीदास जी के विषय में विस्तृत जानकारी देकर उनका ज्ञानवर्धन करें।

जीवन परिचय

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन् 1511 में बाँदा ज़िले के राजापुर ग्राम में माना जाता है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनका जीवन काशी, अयोध्या और चित्रकूट में अधिक व्यतीत हुआ। इनके गुरु नरहर्यानंद थे। उन्हीं से इन्होंने रामायण की कथा सुनी थी। तुलसीदास राम के भक्त थे। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामचरितमानस' में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन है। विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रंथों में इसकी गणना की जाती है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त 'जानकीमंगल', 'पार्वतीमंगल', 'रामललानहछू', 'रामाज्ञा-प्रश्न', बरवै रामायण', 'दोहावली', 'कवितावली', 'श्रीराम गीतावली', 'वैराग्य संदीपनी', 'श्रीकृष्ण-गीतावली', 'विनय पत्रिका' आदि ग्रंथों की भी रचना की। इनकी मृत्यु सन् 1623 में काशी में असी घाट पर हुई।

शब्द बोध- REMEMBER

उपजत	–	उत्पन्न होना	बसीकरण	–	वश में कर लेना
सुमति	–	सुबुद्धि	सरिस	–	समान
सराहिय	–	सराहना, प्रशंसा	बेगिहीं	–	जल्दी से
मराली	–	राजहंस	बक	–	बगुला

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
मंत्र	मन्त्र	संपति	सम्पति

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) वर्षा का महत्व कब होता है?
(ख) सज्जन किसका भला चाहते हैं?
(ग) विपत्ति कहाँ वास करती है?
(घ) कायर के मन में हमेशा क्या रहता है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) वशीकरण मंत्र से क्या संभव है?

(ख) कुमति और सुमति व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं?

(ग) आलसी व्यक्ति दैव-दैव क्यों पुकारते हैं?

(घ) सबसे बड़ा धर्म कौन-सा है?

(ङ) सचिव, वैद्य और गुरु यदि भय से प्रिय वाक्य बोलने लगें, तब क्या होता है?

3. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"तुलसी इह संसार में, भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिल-मिल चालिए, नदी-नाव संजोग।।"

(क) तुलसीदास जी के अनुसार इस संसार में किस-किस प्रकार के व्यक्ति रहते हैं?

(ख) सबके मेल-मिलाप से क्यों चलना चाहिए?

(ग) शुद्ध रूप लिखिए- इह, सबसों, चालिए।

योग्यता विस्तार **ANALYZE**

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. दिए गए विषयों में से किसी एक पर लेख लिखिए-

(क) का बरषा जब कृषि सुखाने। (ख) परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

2. 'दैव-दैव आलसी पुकारा' पर कक्षा में दो-दो मिनट की समय सीमा पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

3. दोहा और चौपाई में क्या अंतर होता है? एक-एक उदाहरण भी लिखिए।

भाषा-बोध **APPLY**

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'सरिस' का पर्यायवाची होगा-

(अ) समान ☐ (ब) जल्दी ☐ (स) सबल ☐

(ख) 'परहित' का विलोम है-

(अ) उपकार ☐ (ब) निज हित ☐ (स) जनहित ☐

(ग) 'चरन चोंच लोचन रंग्यो' में 'लोचन' का अर्थ है-

(अ) आँख ☐ (ब) कान ☐ (स) मुख ☐

(घ) 'जहाँ सुमति तहाँ संपति नाना' में 'नाना' का अर्थ है-

(अ) माँ के पिताजी ☐ (ब) अनेक ☐ (स) दादाजी ☐

(ङ) 'तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे था', में कारक बताइए-

(अ) पिता, का ☐ (ब) के, का ☐ (स) नाम, था ☐

2. दिए गए शब्दों का खड़ी बोली रूप लिखिए-

उपजत - ____________ तहँ - ____________

इह - ____________ तीनि - ____________

संजोग - ____________ नास - ____________

वरषा - ____________ रंग्यो - ____________

3. दोहों और चौपाइयों में से तुकांत शब्द चुनकर लिखिए-

ओर - ____________ अधारा - ____________

लोग - ____________ भाई - ____________

सुखाने - ____________ आस - ____________

नाना - ____________ चाल - ____________

4. 'ता' या 'इक' प्रत्यय लगाकर नवीन शब्द बनाइए-

देव + ____________ = ____________

संसार + ____________ = ____________

धर्म + ____________ = ____________

कायर + ____________ = ____________

5. उत्पत्ति अर्थात् उद्गम, जन्म या स्रोत के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं- तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी।

- संस्कृत भाषा से लिए गए शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं, जिनका रूप नहीं बिगड़ा है; जैसे- दधि, कर्म, पत्र आदि।
- संस्कृत भाषा के वे शब्द जिनके मूल रूप में परिवर्तन आ गया है, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे- दही, कारज, पत्ता आदि।

निम्नलिखित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए-

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
पुनि	____________	घी	____________
मीठा	____________	खीर	____________
तजना	____________	खेत	____________
कोयल	____________	धरम	____________

16

हिम्मत और ज़िंदगी

पाठ बोध प्रस्तुत लेख में रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने बताया है कि जीवन में कठोर पक्षों को भोगनेवाला ही कोमल पक्षों का वास्तविक आनंद ले सकता है। हमें जीवन में मेहनत करते हुए ज़िंदगी के सभी सुखों का आनंद लेना चाहिए।

ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं हैं, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उनके लिए है, जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं; जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृतवाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है; वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं; फ़र्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं, उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भींगने के खौफ़ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

चाँदनी की ताज़गी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिनभर धूप में खटकर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की ज़रूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी भी है, जो दिनभर खिड़कियाँ बंद करके पंखों के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगायी गई है। भ्रम तो, शायद उसे भी होता होगा कि चाँदनी के मज़े ले रहा है; लेकिन सच तो यह है कि वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम, ये आराम के साधन नहीं हैं। भोजन का

असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। "त्यक्तेन भुजीथा:" जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिलता।

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं; बड़ी हस्तियाँ मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी।

महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, और वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है, आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

ज़िंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाकर और अगर सफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अंधियारी का जाल बुन रही हों तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

दूसरी सूरत यह है कि वह गरीब आत्माओं की हमजोली बन जाए, जो न बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि ये आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। इस गोधूलिवाली दुनिया के लोग बँधे हुए धार का पानी पीते हैं, वे ज़िंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते और कौन कहता है कि पूरी ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने का कोई आनंद नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखनेवाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाले आदमी में दुनिया की असली ताकत होती है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं। साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है, जिन सपनों के कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं हैं। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिलकुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सकता, ज़िंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सकता, वह सुखी

नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखानेवाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज़ सुनता रहता है, एक ऐसी आवाज़, जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है, 'तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।' सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं, उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी, कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर ज़िंदगी से भाग खड़े हुए।

ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम की हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और ज़िंदगी का कोई उसे मज़ा नहीं मिल पाता; क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में असल में उसने ज़िंदगी को ही आने से रोक रखा है।

ज़िंदगी से अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके पन्ने को उलट कर पढ़ना है, जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि ज़िंदगी कहीं भी खत्म होनेवाली चीज़ नहीं।

अरे! ओ जीवन के साधको! तुम निचली डाल का फूल तोड़कर ही लौटे जा रहे हो, तो फिर फुनगी पर का यह लाल-लाल आम्र किसके वास्ते है?

अरे! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की मरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा!

दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है, जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मानकर लौटे जा रहे हो।

कामना का दामन छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

शिक्षण संकेत– बच्चों को अपना आत्मबल बढ़ाने और दृढ़ निश्चयी बनने के लिए प्रोत्साहित करें।

जीवन परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, सन् 1908 में बिहार राज्य के बेगूसराय ज़िले के सिमरिया गाँव में हुआ था। 'दिनकर' जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही संपन्न हुई। सन् 1950 में बिहार सरकार ने इन्हें एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया। भारत सरकार द्वारा इन्हें सन् 1959 में 'पद्मभूषण' और 'साहित्य अकादमी' के पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। इनके काव्य 'उर्वशी' पर इन्हें सन् 1972 में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' भी प्रदान किया गया। वीर तथा रौद्र रसों की अभिव्यक्ति करनेवाले 'दिनकर' जी ने प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति करनेवाले गीत भी लिखे हैं। 24 अप्रैल, सन् 1974 को इनका स्वर्गवास हो गया।

शब्द बोध- REMEMBER

कंठ – गला
विपरीत – उलटा
उपवास – व्रत
संकटों – कठिनाइयों
अधिकांश – ज़्यादातर
मकसद – उद्देश्य
मगन – डूबा हुआ
श्रेष्ठ – अति उत्तम
आम्र – आम
कामना – इच्छा
खौफ़ – डर
भ्रम – संदेह
परमार्थ – दूसरों की भलाई
परास्त – हरा दिया
सिफ़त – विशेषता, गुण
मद्धिम – धीमा
चुनौती – ललकार
जोखिम – खतरा
अंतराल – बीच में
निर्झरी – झरना

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप
ज़िंदगी	ज़िन्दगी
आनंद	आनन्द
पांडवों	पाण्डवों
उददेश्य	उद्देश्य
झुंड	झुण्ड
कंठ	कण्ठ
बंद	बन्द
चिंता	चिन्ता
मद्धिम	मद्धिम
संतोष	सन्तोष

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) 'पानी अमृत है' यह कौन जानता है?
(ख) सुख का अधिक स्वाद किसे मिलता है?
(ग) चाँदनी की शीतलता का अनुभव कौन करता है?
(घ) श्री विंस्टन चर्चिल ने क्या कहा है?
(ङ) किस आदमी में दुनिया की असली ताकत होती है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) ज़िंदगी का असली मज़ा किसे प्राप्त होता है?
(ख) अकबर ने किस कारण से अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया?
(ग) महाभारत में पांडवों की जीत के पीछे क्या कारण था?
(घ) क्रांति करनेवाले लोगों की क्या विशेषता होती है?
(ङ) अर्नाल्ड बेनेट के अनुसार कौन से लोग सुखी नहीं होते?

3. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं।
(ख) झुंड में चलना भेड़ों का काम है, सिंह तो अकेला चलता है।
(ग) दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है, जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मानकर लौटे जा रहे हो।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं?"

(क) साहस की ज़िंदगी कैसी होती है?
(ख) साहसी मनुष्य की क्या पहचान है?
(ग) 'निडर' और 'बेखौफ़' में कौन-सा उपसर्ग लगा है?
(घ) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक का नाम बताइए।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. क्या कभी आपको ऐसा लगा कि आप यह कार्य नहीं कर सकते, यह असंभव है, अपने उस अनुभव पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती, किनारे पर बैठकर नैया पार नहीं होती,' इन पंक्तियों के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।
3. पिता और पुत्र के बीच परीक्षा में आने वाले अंकों पर बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'गोधूलि बेला' कौन-सी है-
(अ) सुबह का समय ☐ (ब) संध्या का समय ☐ (स) दोपहर का समय ☐

(ख) "जिंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है" किसके द्वारा कथित है?
(अ) विंस्टन चर्चिल ☐ (ब) अब्राहम लिंकन ☐ (स) एल्बर्ट आइंसटाइन ☐

(ग) 'शीतलता' का विलोम है-
(अ) ठंडक ☐ (ब) उष्णता ☐ (स) ठंड ☐

(घ) 'साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है', में 'साहसी' शब्द है-
(अ) क्रिया ☐ (ब) विशेषण ☐ (स) सर्वनाम ☐

(ङ) निम्नलिखित में कौन-सा वाक्य शुद्ध है-
(अ) साहस का जिंदग़ियाँ सबसे बड़ी होती है। ☐
(ब) साहसी का जिद़गी सबसे बड़ा जिदंगी होता है। ☐
(स) साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ☐

2. निम्न शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

फूल - ____________ ____________
दुनिया - ____________ ____________
समुद्र - ____________ ____________
आम्र - ____________ ____________
अमृत - ____________ ____________

3. दिए गए शब्दों में से मूलशब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए-

सांसारिक = ________ + ________

आनंदित = ________ + ________

व्यावहारिक = ________ + ________

सफलता = ________ + ________

शीतलता = ________ + ________

मानवता = ________ + ________

4. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए-

सुख - ________ हिम्मत - ________

उपेक्षा - ________ अपेक्षा - ________

कृपा - ________ संयम - ________

5. निर्देशानुसार प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए-

(क) असली मज़ा पाँव बढ़ाते जाने में ही है। (किसमें)

____

(ख) झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। (किसका)

____

(ग) लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएँगे। (कौन)

____

(घ) साहस की ज़िंदगी बिलकुल निडर और बेखौफ़ होती है। (कैसी)

____

6. उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाइए-

उपवास और संयम ये आराम के साधन नहीं हैं भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है त्यक्तेन भुजीथाः जीवन का भोग त्याग के साथ करो यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिलता।

17

फ़ुटबॉल का मैच

पाठ बोध इस पाठ में फ़ुटबॉल खेल को वार्तालाप शैली में प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने इस खेल के बारे में विशेष जानकारी देकर बच्चों की जिज्ञासा को शांत किया है।

मोहन – लीजिए, भाई साहब, जैसे-तैसे **टिकट** लेकर अंदर भी आए तो अब बैठने के लिए जगह नहीं। यहाँ तो बड़ी भीड़ है।

हनीफ – हाँ, भीड़ तो है! चलो, उस कोने में कुछ स्थान नज़र आता है। जल्दी आओ, नहीं तो फिर तिल रखने को भी जगह न मिलेगी।

मोहन – हमारे देश में यह खेल इतना लोकप्रिय है, यह मैं नहीं जानता था।

हनीफ – हमारे देश में ही नहीं, संसार के लगभग सभी देशों में यह खेल बहुत लोकप्रिय है। **इंग्लैंड** में तो कभी-कभी अंतरराष्ट्रीय **फ़ुटबॉल-मैच** देखने के लिए दो लाख दर्शकों तक की भीड़ इकट्ठी हो जाती है।

मोहन – दो लाख दर्शकों की भीड़! ऐसा मालूम पड़ता है, फ़ुटबॉल वहाँ का सबसे प्रिय खेल है। क्या इस खेल को जन्म देने का श्रेय इंग्लैंड को ही है?

हनीफ – यह तो नहीं कहा जा सकता कि इंग्लैंड का सर्वप्रिय खेल फ़ुटबॉल ही है। वहाँ के लोग बहुत-से खेलों में रुचि रखते हैं। इंग्लैंड के निवासी **हॉकी**, **टेनिस** और विशेषकर क्रिकेट के भी प्रेमी हैं। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि फ़ुटबॉल खेल को आधुनिक रूप इंग्लैंड ने ही दिया है।

मोहन – वह कैसे?

हनीफ – कहा जाता है कि बहुत पहले एक बार डेनमार्क ने इंग्लैंड पर आक्रमण किया।

अंग्रेज़ों ने आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया। युद्ध में अंग्रेज़ों की जीत हुई। लड़ाई में एक डेनमार्की जनरल का सिर कटकर अलग जा गिरा। विजय के उन्माद में और घृणा से भरकर अंग्रेज़ सिपाहियों ने उस **जनरल** की खोपड़ी को पैरों से ठोकर लगाई। उसी दिन की स्मृति में इंग्लैंड में यह खेल खेला जाने लगा। पहले खेल में चमड़े की गेंद का प्रयोग होता था। उसमें बाल और रुई जैसी चीज़ें भरी जाती थीं। बाद में रबड़ का आविष्कार होने पर **ब्लैडर** में हवा भरी जाने लगी। लो, वह सीटी बज रही है। रेफ़री मैदान के बीच में पहुँच गया। अब खेल प्रारंभ होने वाला है।

मोहन – हाँ, दोनों ओर के खिलाड़ी भी मैदान में पहुँच गए।

हनीफ – **रेफ़री** दोनों टोलियों के कप्तानों को बुला रहा है। अब दोनों एक-दूसरे से हाथ मिला रहे हैं। रेफ़री ने सिक्का उछालकर तय कर दिया कि किस **टीम** को मैदान के किस ओर खेलना है।

मोहन – खिलाड़ी तो खूब भड़कीली रंगीन वर्दी पहने हुए हैं। दोनों के लिए क्या यह अनिवार्य है कि अलग-अलग रंग की वर्दियाँ पहनें?

हनीफ – हाँ, रेफ़री की सुविधा के लिए यह बहुत ज़रूरी है, नहीं तो उसे कुछ पता नहीं लगेगा कि '**फ़ाउल**' करने वाला खिलाड़ी किस ओर का है!

मोहन – यह 'फ़ाउल' क्या बला है?

हनीफ – खेल के किसी नियम का भंग होना 'फ़ाउल' होता है। अच्छा, तुम्हें पता है, दोनों ओर से कितने-कितने खिलाड़ी खेल रहे हैं?

मोहन – हाँ, क्यों नहीं, दोनों ओर से ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी खेल रहे हैं और अब तो वे आमने-सामने ऐसे डट गए; जैसे दो सेनाओं ने एक-दूसरे के विरुद्ध मोर्चाबंदी कर ली हो।

हनीफ – हाँ मोहन, यह एक मोर्चाबंदी ही है। आगे के पाँच-पाँच खिलाड़ियों की अग्रिम पंक्ति विपक्षी **गोल** पर धावा बोलती है। मध्य पंक्ति बचाव करती है; अपनी ओर आने वाले विपक्ष के खिलाड़ियों को रोकने और उनसे गेंद छीनने का प्रयत्न करती है। मध्य पंक्ति में तीन खिलाड़ी होते हैं। उनके पीछे के दो खिलाड़ी बड़े सजग पहरेदार हैं। मध्य पंक्ति से गेंद के निकलते ही वे आगे बढ़ते हैं और ज़ोरदार ठोकर लगाकर उसे वापस करने का प्रयत्न करते हैं। यदि उनसे भी गेंद निकल जाती है, तो अंतिम खिलाड़ी, **गोलकीपर** गेंद को रोकता है। वह गेंद को हाथ से भी पकड़ सकता है। कोई और खिलाड़ी गेंद को हाथ से नहीं छू सकता। छू ले तो 'फाउल' माना जाता है।

मोहन – लो भाई साहब, खेल प्रारंभ हो गया।

हनीफ – हाँ, देखो, इस ओर से अग्रिम पंक्ति के बीच के खिलाड़ी ने अपने बाईं ओर के

खिलाड़ी को धीरे से गेंद खिसकाई, उसने अपने **'लेफ़्ट आउट'** को ज़ोर से गेंद मारी। उसने गेंद रोकी और देखो, गेंद लेकर वह हवा हो गया। 'लेफ़्ट आउट' खिलाड़ियों को बहुत तेज़ दौड़ने वाला होना चाहिए। दूसरी ओर की मध्य पंक्ति का रक्षक भी उसके साथ लगा जा रहा है। अब पहला खिलाड़ी गेंद मारना ही चाहता है। किंतु यह क्या उससे गेंद छिन गई। जानते हो मोहन, गेंद क्यों छिन गई?

मोहन – नहीं।

हनीफ – फ़ुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी को दोनों पैरों से खेलने में कुशल होना चाहिए। उसका 'लेफ़्ट आउट' का बायाँ पैर नहीं चलता, वह सीधे पैर से ही गेंद मार सकता है। गेंद को सीधे पैर पर लाने के लिए उसने गेंद को पीछे किया और उसे मारने के लिए वह मुड़ने ही वाला था कि विपक्षी ने गेंद छीन ली।

मोहन – अब वह विपक्षी गेंद लेकर आगे बढ़ रहा है। वाह! वह तो बहुत कुशल खिलाड़ी है। दो-दो खिलाड़ियों को छकाकर आगे बढ़ा जा रहा है। शाबाश, भाई शाबाश!

हनीफ – मोहन, बेशक यह अच्छा खिलाड़ी है, किंतु यह एक गलती कर रहा है। इसका काम खत्म हो गया। अब इसे अपने **'राइट आउट'** को गेंद दे देनी चाहिए, नहीं तो इसके परिश्रम पर पानी फिर जाएगा। लो, सीटी बज गई।

मोहन – यह सीटी क्यों बजी?

हनीफ – रेफ़री ने 'फाउल' दिया। उस ओर के **'सेंटर हाफ़'** ने अपने साथी को गेंद देने में देरी कर दी। नतीजा यह हुआ कि उसके साथी खिलाड़ी इतना आगे बढ़ गए कि इधर 'गोलकीपर' के सिवाय रक्षा करने के लिए और कोई खिलाड़ी न रहा। इसे **'ऑफ़ साइड'** कहते हैं।

मोहन – अब इस ओर का **बैक** गेंद को रखकर मार रहा है। इसने तो एक ठोकर में ही गेंद को आधे मैदान से आगे पहुँचा दिया। और उधर के खिलाड़ी ने इतनी ऊँची और तेज़ गेंद को सिर से ही वापस कर दिया। बाप रे बाप! इसका सिर क्या लोहे का बना है?

हनीफ – मोहन, इसमें संदेह नहीं कि फ़ुटबॉल शक्ति वालों का खेल है। कभी-कभी ये लोग आपस में टकरा भी जाते हैं और किसी खिलाड़ी को चोट भी आ जाती है। किंतु अच्छे खिलाड़ी ऐसा खेलते हैं कि शरीर से शरीर नहीं छूने देते। यदि कोई खिलाड़ी जान बूझकर किसी को चोट पहुँचाने की कोशिश करता है, तो रेफ़री उसे बाहर भी निकाल देता है। लो, रेफ़री की लंबी सीटी बज गई।

मोहन – क्या फिर फ़ाउल हो गया?

हनीफ – नहीं, यह मध्यांतर है। बातों में लगे होने से कुछ पता ही न चला कि इतना वक्त कब बीत गया।

मोहन – अब तो सभी खिलाड़ियों ने खेलना बंद कर दिया। क्या अब खेल कल होगा?

हनीफ – नहीं, कुछ ही देर बाद पुनः खेल शुरू होगा। पूरे खेल के बीच में दस **मिनट** का विश्राम होता है। उतनी देर में खिलाड़ी आराम कर लेते हैं।

मोहन – अरे, उधर का गोलकीपर इधर के गोल की ओर पहुँच गया!

हनीफ – हाँ, अब दोनों टीमें अपने-अपने गोल बदल लेंगी। इधर की टीम उधर और उधर की टीम इधर।

मोहन – हम लोग इतनी देर में कुछ मूँगफली ले आएँ या फिर कुछ खा-पी आएँ?

हनीफ – नहीं, अब कहाँ वक्त है। रेफ़री सीटी बजा रहा है। टीमें अपनी-अपनी जगह ले रही हैं। लो, खेल शुरू हो गया। खिलाड़ी दौड़-धूप करने लगे।

मोहन – लेकिन गोलकीपर चुपचाप खड़ा है। उसे तो मानो कोई काम ही नहीं करना पड़ता।

हनीफ – ऐसा नहीं है। कुछ देर में ही किसी गोलकीपर का करतब तुम देखोगे।

मोहन – मुझे इधर की अग्रिम पंक्ति के सेंटर के खिलाड़ी का खेल अच्छा लग रहा है। तेज़ी के साथ अकेला ही सब खिलाड़ियों को छकाकर आगे बढ़ रहा है। लो, उसने उधर के बैक को भी छका दिया और देखो, अब हुआ गोल।

हनीफ – नहीं हुआ गोल। देखा मोहन, गोलकीपर का कमाल! केंद्र के खिलाड़ी के पैरों से गेंद कुछ **मीटर** आगे बढ़ गई थी। गोलकीपर ने फ़ुर्ती-से फिसलकर गेंद को कब्ज़े में कर लिया। इस बार भी सेंटर के खिलाड़ी से भूल हो गई।

मोहन – भूल हो गई! कैसे? वह खिलाड़ी तो खूब बढ़िया खेल रहा है।

हनीफ – यह तो ठीक है किंतु, खेल का सिद्धांत है, खेलो और खेलाओ। इस खिलाड़ी ने

यदि अपने किसी साथी को गेंद दे दी होती, तो गोल अवश्य हो जाता। खेलते समय अपने लिए नहीं, टीम के लिए खेलना चाहिए।

मोहन – अब तो खेल समाप्त होने के करीब है। रेफ़री घड़ी देख रहा है।

हनीफ – हाँ, चलो अभी निकल चलें, नहीं तो बड़ी भीड़ हो जाएगी।

मोहन – भाई, हॉकी में तो हमारे देश ने बहुत नाम रोशन किया है। हमारे ध्यानचंद का नाम विश्वविख्यात है। क्रिकेट में भी भारत के कुछ महानतम खिलाड़ी हैं। फुटबॉल में अपने देश का क्या स्थान है?

हनीफ – संसार भर में तो फुटबॉल में कई देशों की टीमें बहुत अच्छी हैं। अर्जेंटीना, चिली, ब्राजील, इंग्लैंड, हंगरी, स्पेन और रूस की टीमें बहुत प्रसिद्ध हैं। उनके मुकाबले में भारत का स्तर अभी नहीं है, किंतु एशिया में भारत का स्थान इस खेल में भी ऊँचा है। भारत की प्रसिद्ध फुटबॉल टीम बंगाल की 'मोहन बागान' है, जिसने भारत को कई अच्छे खिलाड़ी दिए हैं। भारत की टीम को शक्तिशाली बनाने के लिए इस खेल के प्रशिक्षण केंद्र भी स्थापित किए गए हैं। प्रशिक्षण और परिश्रम का फल अवश्य अच्छा होता है। संभव है, निकट भविष्य में हमारे यहाँ इस खेल का भी स्तर ऊँचा हो जाए। चलो, अब देर न करो। यहाँ से निकल चलें ।

– संकलित

शिक्षण संकेत- छात्रों को बताएँ कि फुटबाल इंग्लैड का राष्ट्रीय खेल है। उन्हें फुटबाल खेलने के लाभ से अवगत कराएँ।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – टिकट, इंग्लैंड, फ़ुटबॉल, मैच, हॉकी, टेनिस, जनरल, ब्लैडर, रेफ़री, टीम, फ़ाउल, गोल, गोलकीपर, लेफ़्ट आउट, राइट, सेंटर, हॉफ़, ऑफ़ साइड, बैक, मिनट, मीटर

शब्द बोध- REMEMBER

लोकप्रिय	–	लोगों में प्रिय	दर्शक	–	देखने वाले
श्रेय	–	यश	उन्माद	–	असामान्य व्यवहार
स्मृति	–	याद	भड़कीली	–	चमकीली
अनिवार्य	–	ज़रूरी	अग्रिम	–	आगे
कुशल	–	योग्य	छकाकर	–	भ्रम में डालकर
मध्यांतर	–	बीच का समय	विश्राम	–	आराम का समय

करतब	–	कौशल	सिद्धांत	–	नियम
विश्वविख्यात	–	विश्व में प्रसिद्ध	प्रशिक्षण	–	व्यावहारिक शिक्षा
करतब	–	कौशल	सिद्धांत	–	नियम

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
अंदर	अन्दर	इकट्ठी	इकट्ठी
युद्ध	युद्ध	प्रारंभ	प्रारम्भ
विरुद्ध	विरुद्ध	किंतु	किन्तु
संदेह	सन्देह	लंबी	लम्बी
बंद	बन्द	सिद्धांत	सिद्धान्त
प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	केंद्र	केन्द्र
संभव	सम्भव		

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**
   (क) इंग्लैंड का सर्वप्रिय खेल कौन-सा है?
   (ख) इंग्लैंड पर किसने आक्रमण किया था?
   (ग) रेफ़री सिक्का क्यों उछालता है?
   (घ) रेफ़री लंबी सीटी क्यों बजाता है?

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**
   (क) फुटबॉल का खेल कैसे खेला जाता है?
   (ख) ऑफ़ साइड किसे कहते हैं?
   (ग) अच्छे खिलाड़ी कैसे खेलते हैं?
   (घ) रेफ़री ने फ़ाउल क्यों दिया?

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

करतब – ______________________

टीम – ______________________

प्रशिक्षण - ____________

विख्यात - ____________

परिश्रम - ____________

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

यह तो ठीक है किंतु, खेल का सिद्धांत है, खेलो और खेलाओ। इस खिलाड़ी ने यदि अपने किसी साथी को गेंद दे दी होती, तो गोल अवश्य हो जाता। खेलते समय अपने लिए नहीं, टीम के लिए खेलना चाहिए। अब तो खेल समाप्त होने के करीब है। रेफ़री खड़ा देख रहा है।

(क) खेल का सिद्धांत क्या होता है?

(ख) खिलाड़ी ने क्या गलती की?

(ग) किस भावना से खेलना चाहिए?

(घ) रेफ़री क्या कर रहा है?

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. खेल बच्चों के लिए मनोरंजन का सबसे प्रिय साधन होता है। आपका प्रिय खेल कौन-सा है? 'मेरा प्रिय खेल' विषय पर अपने विद्यालय में चर्चा कीजिए।
2. पहले समय में खेल केवल मनोरंजन का साधन थे। मगर आज जीविका का साधन भी हैं- 'खेल जीविका का साधन' विषय पर अपने विचार 150 शब्दों में लिखिए।
3. मैच समाप्त होने के बाद दो क्रिकेट प्रेमियों की बातचीत को एक संवाद के रूप में लिखिए।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'अनिवार्य' का पर्यायवाची है-

(अ) ऐच्छिक ☐ (ब) जरूरी ☐ (स) वैकल्पिक ☐

(ख) 'लो भाई साहब, खेल प्रारंभ हो गया' में 'प्रारंभ' शब्द है-

(अ) संज्ञा ☐ (ब) सर्वनाम ☐ (स) क्रिया विशेषण ☐

(ग) परिश्रम का फल ____________ होता है।

(अ) मीठा ☐ (ब) कड़वा ☐ (स) चटपटा ☐

(घ) 'कुशल' में 'ता' प्रत्यय लगाने से शब्द बनेगा-

(अ) कौशलता ☐ (ब) कुशलता ☐ (स) कुशलाता ☐

(ङ) निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है-

(अ) यह फ़ाउल क्या बला है? ☐ (ब) यह फ़ाउल कौन बला है? ☐

(स) वह फ़ाउल क्य बला है? ☐

2. दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तन कीजिए-

पंक्ति - ________ सिपाही - ________

दर्शक - ________ हवा - ________

गेंद - ________ टोली - ________

टीम - ________ घड़ी - ________

3. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

अंदर × ________ आधुनिक × ________

प्रिय × ________ जीत × ________

जन्म × ________ घृणा × ________

4. 'विपक्ष' शब्द 'वि' उपसर्ग लगने से बना है, इसी प्रकार 'अप' एवं 'अन' उपसर्ग से चार-चार शब्द बनाइए-

अप - ________ ________ ________ ________

अन - ________ ________ ________ ________

5. उसका बाँया पैर नहीं चलता - यहाँ 'बाँया' शब्द 'पैर' के बारे में बता रहा है। इसी प्रकार संज्ञा या सर्वनाम के बारे में विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनका भेद लिखिए-

(क) अच्छे खिलाड़ी टीम के लिए खेलते हैं। ________

(ख) खिलाड़ियों ने भड़कीली वरदी पहनी हुई थी। ________

(ग) पहला खिलाड़ी गेंद मारना चाहता था। ________

(घ) तभी रेफ़री की लंबी सीटी बज गई। ________

6. संज्ञा-सर्वनाम की विशेषता विशेषण शब्द बताते हैं, तो क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए-

(क) हम टिकट लेकर अंदर बैठ गए।

(ख) उस ओर बैठने का स्थान है।

(ग) खेल शाम को प्रारंभ होगा।

(घ) मैदान में अचानक भगदड़ मच गई।

18

कथक सम्राट बिरजू महाराज

पाठ बोध बिरजू महाराज का जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणाप्रद है कि कोई भी व्यक्ति अपने अथक प्रयास और लगन से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। यह पाठ सभी के लिए प्रेरणादायी है।

अपनी कला में सब कुछ समेट लेने वाले पंडित बिरजू महाराज ने न केवल कथक के भंडार को आमूलचूल बदला बल्कि उसका जीवन क्रम भी बढ़ाया।

बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी, 1938 को लखनऊ के कालका–बिंदादीन घराने में हुआ था। बिरजू महाराज का नाम पहले दुखहरण रखा गया था। यह बाद में बदल कर 'बृजमोहन नाथ मिश्रा' हुआ। इनके पिता का नाम जगन्नाथ महाराज था, जो लखनऊ घराने से थे और वे अच्छन महाराज के नाम से जाने जाते थे। अच्छन महाराज और चाचा शम्भू महाराज का नाम देश के प्रसिद्ध कलाकारों में था। बिरजू महाराज जिस अस्पताल में पैदा हुए, उस दिन वहाँ उनके अलावा बाकी सब लड़कियों का जन्म हुआ था, इसी वजह से उनका नाम बृजमोहन रख दिया गया। जो आगे चलकर बिरजू महाराज हो गया।

पिता अच्छन महाराज को अपनी गोद में महज तीन साल की उम्र में ही बिरजू की प्रतिभा दिखने लगी थी। इसी को देखते हुए पिता ने बचपन से ही अपने यशस्वी पुत्र को कला दीक्षा देनी शुरु कर दी। नौ वर्ष की आयु में पिता के गुजर जाने के बाद परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई फिर भी उन्होंने अपने चाचा से कथक नृत्य प्रशिक्षण लेना शुरु किया। कुछ अरसे बाद कपिला वात्स्यायन उन्हें दिल्ली ले आई। उन्होंने संगीत भारती (दिल्ली) में छोटे बच्चों को कथक सिखाना शुरु किया।

लखनऊ की बात में कथक शामिल न हो, ऐसा संभव नहीं और कथक का जिक्र पं० बिरजू महाराज के बिना अधूरा है। यही नाता था लखनऊ और पं० बिरजू महाराज का एक दूसरे के पूरक जैसा।

पं० बिरजू महाराज के लिए बनारस दूसरे घर जैसा था। गिरिजा देवी के गुरु पं० श्रीचंद मिश्र के परिवार में उनकी ससुराल है और पं० साजन मिश्र उनके दामाद हैं। ऐसे में ससुराल और समधियाना दोनों बनारस में होने के साथ उनके शिष्यों और प्रशंसकों की बड़ी तादाद बनारस में हैं। यही वजह है कि पं० बिरजू महाराज बनारस को दूसरा घर मानते थे। बिरजू महाराज ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। उसके बाद उन्होंने दिल्ली में ही भारतीय कला केंद्र में सिखाना आरंभ किया। कुछ समय बाद इन्होंने कत्थक केंद्र (संगीत नाटक **अकादमी** की एक इकाई) में शिक्षण कार्य आरंभ किया। यहाँ ये संकाय के अध्यक्ष थे तथा निदेशक भी रहे। तत्पश्चात 1998 में इन्होंने वहीं से सेवानिवृत्ति पाई। इसके बाद कलाश्रम नाम से दिल्ली में ही एक नाट्य विद्यालय खोला। इन्होंने सत्यजीत राय की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी की संगीत रचना की, तथा उसके दो गानों पर नृत्य के लिए गायन भी किया। इसके अलावा वर्ष 2002 में बनी हिंदी फिल्म देवदास में एक गाने 'काहे छेड़ छेड़ मोहे' का नृत्य संयोजन भी किया। इसके अलावा अन्य कई हिंदी फिल्मों जैसे– डेढ़ इश्किया, उमराव जान तथा संजय लीला भंसाली निर्देशित 'बाजी राव मस्तानी' में भी कत्थक नृत्य के संयोजन किए।

एक बार काशी के केदारखंड स्थित भूमानंद आश्रम की ओर से एक विराट धार्मिक आयोजन गंगा में विशाल बजड़े पर हुआ था। दिन में कथा होती थी और शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। आखिरी निशा में पं० बिरजू महाराज का नृत्य हो रहा था। पंडित जी उस रात जबरदस्त मूड में थे। वह लयकारी का काम दिखा रहे थे कि इसी बीच बोल पढंत करने वाले को खाँसी आने लगी। नाचते–नाचते पंडित जी रुके। उन्होंने हाथों के इशारे से उन्हें हटने को कहा और खुद हारमोनियम पर बैठ कर बोल पढंत करने लगे। बोल पूरे करने के बाद वह उठे। उठते–उठते उन्होंने तबला वादक को उठने का इशारा किया। फिर खुद तबला लेकर बैठ गए। जो बोल उन्होंने बोले थे उसे तबले पर बजाया और उसके बाद फिर नृत्य के लिए खड़े हुए और उन्हीं बोलों को अपने पाँव में बँधे घुघुरुओं से निकाल कर हजारों श्रोताओं को अपना मुरीद बना लिया था।

1986 में उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा गया। उन्हें मिले सम्मानों में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान प्रमुख हैं। इनके साथ ही इन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से **डॉक्टरेट** की उपाधि मानद रुप में मिली। 2016 में हिंदी फिल्म बाजीराव मस्तानी में 'मोहे रंग दो लाल' गाने पर नृत्य–निर्देशन के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। 2002 में उन्हें लता मंगेशकर पुरस्कार से नवाजा गया।

बचपन से मिली संगीत व नृत्य की घुट्टी के दम पर बिरजू महाराज ने विभिन्न प्रकार की नृत्यावलियों जैसे गोवर्धन लीला, माखन चोरी, मालती–माधव, कुमार संभव व फाग बहार इत्यादि की रचना की। सत्यजीत राय की फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' के लिए भी उन्होंने उच्चकोटि की दो नृत्य नाटिकाएँ रचीं। उन्हें ताल वाद्यों की विशिष्ट समझ थी। उन्होंने हजारों संगीत प्रस्तुतियाँ देश में और देश के बाहर दीं।

उनके आशियाने के करीब पहुँचते ही घुघुरुओं की खनक सुनाई देने लगती। एक ऊर्जा महसूस होती। यहाँ बिरजू महाराज के शिष्यों और प्रशंसकों का आना–जाना लगा रहता था। अगर कोई पंडित जी के घर के **ड्राइंग रूम** में पहुँचता था। वह गर्मजोशी से स्वागत करते। वह मेहमानों के लिए गुलाब जामुन, बर्फी, नमकीन, चाय पेश करते। जो भी उनसे मिलने आता, उसे मिठाई का भोग तो लगाना ही होता।

पंडित बिरजू महाराज ने न केवल कथक को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई बल्कि उसमें तमाम ऐसे प्रयोग भी किए जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। कौन सोचेगा कि मैदान पर खेले जाने वाले **क्रिकेट** को कथक के भावों में मंच पर पेश किया जा सकता है या खो–खो खेल को संगीत संरचनाओं के साथ कथक में प्रस्तुत किया जा सकता है मगर बिरजू महाराज ने यह करके दिखाया। वह केवल कलाकार नहीं थे बल्कि उत्तम लेखक, संगीतकार और गायक थे। पंडित बिरजू महाराज का कला व्यक्तित्व अतुलनीय था। उनकी छटा, उनकी अदाएँ और उनके तरीके अपने लखनऊ घराने को पूरा समेटे हुए थे। वह तबला भी बजाते थे, ढोलक भी और पखावज भी। सुस्वर में गाना भी गाते थे। और नृत्य के कहने ही क्या, बैठकर भी वह बखूबी भंगिमाएँ देते थे। जैसे ही वह कत्थक के लिए खड़े होते, यह दिख जाता कि कोई बहुत गुणी कलाकार प्रस्तुति देने जा रहे हैं। उनको हाथ उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

वह चित्र भी बेहतरीन बनाते थे। उनकी सोच का स्तर अद्भुत था। उन्होंने शिष्य–शिष्या नहीं, अपना परिवार बनाया। वह ऐसे गुरु नहीं थे कि शिष्य को सिखा दिया और वह चलते बना। शिष्य–शिष्याओं से वह आत्मीय संबंध रखते थे और उनके शिष्य भी अपने गुरु के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते थे।

वह 18-20 साल के रहे होंगे, जब उन्होंने दिल्ली में संगीत भारती में शिक्षा देना शुरु किया। उसके बाद उन्होंने भारतीय कला केंद्र में सिखाना शुरु किया। बाद में जब कत्थक केंद्र बना, तो उसमें चले गए। उन दिनों उनके विषय में एक बात काफी प्रचलित थी। तब कहा जाता था कि बिरजू महाराज

का घर कहाँ है, वह भले ही लोगों को पता न हो, लेकिन वह कहाँ (कत्थक केंद्र में) मिलेंगे, यह सबको मालूम होता था। कत्थक केंद्र में ही महाराज जी घंटों रियाज कराया करते थे। वहाँ अन्य शिक्षक भी थे, जो अपने–अपने तरीके से बेजोड़ थे। लेकिन महाराज जी का एक अलग कद था। एक तरीका था, सोच थी, सौंदर्यबोध था। कत्थक केंद्र में भी उन्होंने जितने शिष्य तैयार किए, सभी आगे चलकर एक से बढ़कर एक साबित हुए।

– संकलित

शिक्षण संकेत- अध्यापक/अध्यापिका बच्चों को कत्थक सम्राट बिरजू महाराज के व्यक्तित्व के विषय में जानकारी दें एवं बताएँ कि उनके अथक परिश्रम ने उन्हें ऊँचाई की सीढ़ियों पर पहुँचाया तथा पूरे विश्व में अपना नाम स्थापित किया।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – अकादमी, डॉक्टरेट, ड्राइंग रूम, क्रिकेट

शब्द बोध- REMEMBER

आमूल	–	एड़ी से चोटी तक	मुरीद	–	शिष्य, भक्त
यशस्वी	–	सुविख्यात	विशिष्ट	–	विशेष
प्रशिक्षण	–	नियमित रुप से दी जाने वाली शिक्षा	संरचना	–	बनावट
संकाय	–	विशेष विभाग	सौंदर्यबोध	–	सुंदरता का ज्ञान
संयोजन	–	जोड़ना, मिलान	आत्मीय	–	प्रिय, आत्म से संबंधित

वर्तनी बोध-

मानक रुप	प्रचलित रुप	मानक रुप	प्रचलित रुप
प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	संभव	सम्भव
केंद्र	केन्द्र	आरंभ	आरम्भ
भंसाली	भन्साली	खंड	खण्ड
हिंदू	हिन्दू	हिंदी	हिन्दी
घुट्टी	घुट्टी	अद्भुत	अद्भुत

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

(क) बालक दुखहरण का नाम बिरजू कैसे पड़ा?

(ख) बिरजू महाराज ने कत्थक का प्रशिक्षण किससे लिया?

(ग) उनके द्‌वारा रचित कुछ नृत्यावलियों के नाम बताइए?

(घ) बिरजू महाराज को पद्‌मविभूषण से किस वर्ष सम्मानित किया गया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) बिरजू महाराज किस घराने से संबंध रखते थे? उनके पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डालिए?

(ख) बिरजू महाराज ने कौन-सी प्रमुख फिल्मों के लिए संगीत नृत्य निर्देशन का कार्य किया?

(ग) पंडित जी अतिथियों का स्वागत कैसे करते थे?

(घ) पं० बिरजू महाराज को कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए?

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए गद्‌यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

वह लयकारी का काम दिखा रहे थे कि इसी बीच बोल पढंत करने वाले को खाँसी आने लगी। नाचते-नाचते पंडित जी रुके। उन्होंने हाथों के इशारे से उन्हें हटने को कहा और खुद हारमोनियम पर बैठ कर बोल पढंत करने लगे। बोल पूरे करने के बाद वह उठे। उठते-उठते उन्होंने तबला वादक को उठने का इशारा किया। फिर खुद तबला लेकर बैठ गए। जो बोल उन्होंने बोले थे उसे तबले पर बजाया और उसके बाद फिर नृत्य के लिए खड़े हुए और उन्हीं बोलों को अपने पाँव में बँधे घुघुरुओं से निकाल कर हजारों श्रोताओं को अपना मुरीद बना लिया था।

(क) यह प्रसंग किस कार्यक्रम से संबंधित है?

(ख) पंडित जी नाचते हुए क्यों रुक गए? उन्होंने किस कलाकार का स्थान ले लिया?

(ग) सभी श्रोता पंडित जी के मुरीद कैसे हो गए?

(घ) उपर्युक्त घटना से बिरजू महाराज के विषय में क्या पता चलता है?

योग्यता विस्तार **ANALYZE**

मानसिक बौद्‌धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. हम सभी को किसी न किसी कला में रुचि होती है। आपकी रुचि किस कला में है? कक्षा में बताइए।

2. हमारे देश के अन्य कत्थक नृत्य कलाकारों के विषय में पढ़िए।

भाषा-बोध **APPLY**

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द चिह्नित कीजिए-
(अ) जगन्नाथ ☐ (ब) महाराज ☐ (स) प्रतिभाशाली ☐

(ख) 'संभव' का विलोम शब्द है-
(अ) संभवहीन ☐ (ब) अनसंभव ☐ (स) असंभव ☐

(ग) 'श्रोता' का बहुवचन शब्द है-
(अ) श्रोताएँ ☐ (ब) श्रोताओं ☐ (स) श्रोतागण ☐

(घ) 'नृत्यावली' शब्द का संधि-विच्छेद है-
(अ) नृत्या + वली ☐ (ब) नृत्य + अवली ☐ (स) नृत्य + आवलि ☐

(ङ) आखिरी निशा में पं० बिरजू महाराज का नृत्य हो रहा था। 'निशा' का पर्यायवाची शब्द है-
(अ) रात्रि ☐ (ब) सायं ☐ (स) प्रभात ☐

2. निम्न शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

घर - ______ ______
जीवन - ______ ______
शंभु - ______ ______
पुत्र - ______ ______
विराट - ______ ______

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ का अंतर वाक्य द्वारा स्पष्ट कीजिए-

ताल - ______
ताल - ______
ऊर्जा - ______
ऊर्जा - ______

4. नीचे दिए शब्दों को विशेषण में बदलिए-

संगीत - ______ सेवा - ______
आत्मा - ______ कला - ______
संस्कृति - ______ पुरस्कार - ______

19

वीर बालक

पाठ बोध प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने शिवाजी की चतुरता और राणा प्रताप के कठिन संघर्षों आदि के द्वारा वीर पुत्र के गुणों का बखान किया है।

हम प्रभात की नई किरण हैं,
हम दिन के आलोक नवल।
हम नवीन भारत के सैनिक,
धीर, वीर, गंभीर, अचल।।

हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के,
सुरभि स्वर्ग की लेते हैं।
हम हैं शांति-दूत धरणी के,
छाँह सभी को देते हैं।।

वीर प्रसू माँ की आँखों के,
हम नवीन उजियाले हैं।
गंगा-यमुना, हिंद-महासागर,
के हम रखवाले हैं।।

हम हैं शिवा-प्रताप,
रोटियाँ भले घास की खाएँगे।
मगर किसी जुल्म के आगे,
मस्तक नहीं झुकाएँगे।।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

शिक्षण संकेत- छात्रों को कविता का भाव समझाते हुए कविता को कंठस्थ करने के लिए कहें।

जीवन परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, सन् 1908 में बिहार राज्य के बेगूसराय ज़िले के सिमरिया गाँव में हुआ था। 'दिनकर' जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही संपन्न हुई। सन् 1950 में बिहार सरकार ने इन्हें एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया। भारत सरकार द्वारा इन्हें सन् 1959 में 'पद्मभूषण' और 'साहित्य अकादमी' के पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। इनके काव्य 'उर्वशी' पर इन्हें सन् 1972 में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' भी प्रदान किया गया। वीर तथा रौद्र रसों की अभिव्यक्ति करने वाले 'दिनकर' जी ने प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति करनेवाले गीत भी लिखे हैं। 24 अप्रैल, सन् 1974 को इनका स्वर्गवास हो गया।

शब्द बोध- REMEMBER

प्रभात	–	सुबह, प्रातःकाल	आलोक	–	प्रकाश
नवल	–	नवीन, नया	अचल	–	अडिग
प्रहरी	–	रखवाले	हिमाद्रि	–	हिमालय, पहाड़
सुरभि	–	खुशबू	धरणी	–	धरती
प्रसू	–	जन्म देने वाली	जुल्म	–	अत्याचार

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
गंभीर	गम्भीर	शांति	शान्ति
गंगा	गङ्गा	हिंद	हिन्द

अभ्यास बोध

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

(क) कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?

(ख) कविता का क्या नाम है?

(ग) कविता में किस महासागर का ज़िक्र हुआ है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questions

(क) कवि भारतवासियों को प्रभात की किरण क्यों कह रहा है?
(ख) अच्छे संस्कार कैसे आते हैं? बच्चों में उन्हें कौन पैदा करता है?
(ग) भारत के रखवालों को किन गुणों से युक्त होना चाहिए?
(घ) शिवाजी और राणा प्रताप की कौन-सी विशेषता कवि ने बताई है?
(ङ) संपूर्ण कविता का सार लिखिए।

विषय-वस्तु का बोध

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के,
   सुरभि स्वर्ग की लेते हैं।
   हम हैं शांति-दूत धरणी के,
   छाँह सभी को देते हैं।।

   (क) वीर बालक स्वयं को किसका प्रहरी बताता है?
   (ख) शांति-दूत बनने से क्या आशय है?
   (ग) सभी को छाँह किस प्रकार मिल सकती है?
   (घ) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए- प्रहरी, हिमाद्रि, धरणी, सुरभि।

2. वीर प्रसू माँ की आँखों के,
   हम नवीन उजियाले हैं।
   गंगा-यमुना, हिंद-महासागर,
   के हम रखवाले हैं।।

   (क) हम किस माँ की संतान हैं?
   (ख) हम माँ के प्रति अपने कर्तव्यों को कैसे पूरा कर सकते हैं?
   (ग) इस कविता के रचयिता कौन हैं? कविता के माध्यम से वे क्या संदेश दे रहे हैं?
   (घ) गंगा, यमुना, हिंद महासागर क्या हैं? उनकी रक्षा हमें किस प्रकार करनी है?

योग्यता विस्तार

ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. विद्यार्थी कविता को कंठस्थ करें तथा भावपूर्ण पाठन करें।
2. कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हमारे राष्ट्रकवि थे। उन्होंने अनेक ओजमयी देशभक्ति की कविताएँ लिखी हैं। कवि के विषय में संक्षिप्त जानकारी हासिल कीजिए।
3. कवि की अन्य रचनाएँ भी पढ़िए। नीचे लिखी कविता को पढ़िए व याद करने का प्रयास कीजिए।

हिमालय के प्रति

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार दिव्य गौरव विराट,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति मेरे विशाल।
उस पुण्यभूमि में आज तपी।
रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
डँस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) 'धीर', 'वीर', 'अचल' सभी शब्द हैं-
(अ) क्रिया ☐ (ब) विशेषण ☐ (स) सर्वनाम ☐

(ख) 'गंभीर' का विलोम शब्द है-
(अ) चंचल ☐ (ब) अचल ☐ (स) धीर ☐

(ग) 'प्रभात' का पर्यायवाची शब्द है-
(अ) प्रभु ☐ (ब) प्रहरी ☐ (स) प्रातः ☐

(घ) 'उजियाला' का विलोम शब्द है-
(अ) अँधेरा ☐ (ब) प्रकाश ☐ (स) रोशनी ☐

(ङ) 'रोटियाँ' का एकवचन शब्द है-
(अ) रोटी ☐ (ब) रोटियों ☐ (स) रोटीयों ☐

2. नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी लिखिए-

आलोक - ____________ स्वर्ग - ____________

माँ - ____________ प्रभात - ____________

सुरभि - ____________ नवल - ____________

हिमाद्रि - ____________ प्रसू - ____________

3. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

नवीन - ____________ धीर - ____________

वीर - ____________ गंभीर - ____________

4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

प्रभात × ____________ वीर × ____________

नवीन × ____________ आलोक × ____________

स्वर्ग × ____________ ऊँचे × ____________

छाँह × ____________ शांति × ____________

5. (अ) "हम प्रभात की नई किरण हैं,
हम दिन के आलोक नवल।"

(ब) "हम हैं शिवा-प्रताप,
रोटियाँ भले घास की खाएँगे।
मगर किसी ज़ुल्म के आगे,
मस्तक नहीं झुकाएँगे।"

'अ' और 'ब' को ध्यानपूर्वक पढ़िए। दोनों में क्या खास अंतर दिखता है? 'अ' में दोनों पंक्तियाँ बता रही हैं कि कार्य 'वर्तमान काल' में हो रहा है और 'ब' में अगली चार पंक्तियाँ बता रही हैं कि 'भविष्य' में कार्य होगा। इस प्रकार वर्तमान काल, भविष्यत् काल, काल के दो रूप हैं। तीसरा रूप है- 'भूतकाल'। यहाँ यह कहा जाए कि 'हम प्रभात की नई किरण थे।' तो वक्ता के भूतकाल अर्थात् बीते हुए समय में कार्य करने की बात स्पष्ट होती है। भूतकाल के मुख्यतः छह भेद होते हैं। उनमें से कुछ निम्न हैं-

(क) सामान्य भूत- भूतकाल के सामान्य रूप को सामान्य भूतकाल कहते हैं;

जैसे- 1. राम वन गए।
2. शिवाजी ने वीरता दिखाई।

(ख) आसन्न भूत- जब यह पता चले कि कार्य अभी-अभी खत्म हुआ है, वहाँ आसन्न भूत होता है;

जैसे- 1. तुम आज ही आए हो।
2. मैंने पुस्तक पढ़ ली है।

कार्य- कविता की जो पंक्तियाँ वर्तमान व भविष्यत् काल में हैं, उन्हें सामान्य व आसन्न भूत में बदलिए।

20

काजीरंगा

पाठ बोध प्रस्तुत पाठ में पत्र के माध्यम से काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का चित्रण किया गया है जिससे बच्चे उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।

अलिशा कक्षा सात में पढ़ती है। वह पढ़ने में बहुत तेज़ है। वह कक्षा में अध्यापक/अध्यापिका की बातों को बड़े ध्यान से सुनती है। पशु-पक्षियों से उसे बहुत प्यार है। वह कक्षा में हमेशा फ़र्स्ट आती है। उसके मम्मी-पापा उसे बहुत प्यार करते हैं। इस बार उसके फ़र्स्ट आने की खुशी में उन्होंने उसे कंप्यूटर लाकर दिया। अलिशा कंप्यूटर देखकर बहुत खुश हुई। उसने अपनी दोस्त चिंकी को फ़ोन करके बताया कि "मेरे पापा ने मुझे कंप्यूटर लाकर दिया है।" चिंकी ने कहा, "ये तो बहुत अच्छी बात है। मैं भी मम्मी-पापा के साथ असम गई थी। मैंने वहाँ काजीरंगा राष्ट्रीय उदयान देखा। तुम्हें जानवरों से बहुत प्यार है न। मैं तुम्हें वहाँ की तसवीरें ई-मेल करती हूँ। तुम्हें बहुत अच्छी लगेंगी।" अलिशा ने उत्साहित होकर कहा, "ठीक है, जल्दी **ई-मेल** कर दो, मुझे देखने में बड़ा मज़ा आएगा।" तभी माँ की आवाज़ सुनाई दी, "अलिशा जल्दी हाथ-मुँह धोकर खाना खा लो।" "आ रही हूँ मम्मी।" अलिशा ने कहा।

अलिशा शाम को चिंकी दवारा भेजे गए काजीरंगा उदयान की तसवीरें कंप्यूटर पर देखती है। अपनी मम्मी को भी तसवीरें दिखाते हुए बोलती है, "देखो मम्मी, चिंकी अपने भाई के साथ हाथी पर बैठकर घूम रही है। कितना मज़ा आया होगा न!" "अच्छा, क्या तुम्हारी दोस्त चिंकी असम गई थी?" तसवीरें देखते हुए मम्मी ने पूछा। हाँ मम्मी, उसने तसवीरों के साथ काजीरंगा राष्ट्रीय उदयान के बारे में जानकारी भी भेजी है। ज़रा मैं पढ़कर देखती हूँ, चिंकी ने क्या लिखकर भेजा है।

अलिशा ने पढ़ना शुरू किया- यह एक राष्ट्रीय उदयान है। इस उदयान को सन् 1908 में सुरक्षित वन घोषित कर दिया गया था। 11 फरवरी 1974 को इसे काजीरंगा राष्ट्रीय उदयान का नाम दिया गया। यह प्राकृतिक दृष्टि से बहुत ही सुंदर

...ता है। यहाँ पर जहाँ भी हमारी नज़र जाती है, वहाँ हरियाली ही हरियाली देखने को मिलती है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान भारत के असम राज्य का एक राष्ट्रीय उद्यान है। यह उद्यान एक सींग वाले गैंडे (भारतीय गैंडा) के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। देश-विदेश से लोग यहाँ की हरियाली और जानवरों को देखने के लिए आते हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान देखने आए लोगों को हाथी या जीप पर बैठाकर सभी जगह घुमाया जाता है। हमने यहाँ गैंडों के समूह को घास चरते हुए देखा, गैंडे की चमड़ी बहुत सख्त होती है। जब इसको गुस्सा आता है तो बड़े से बड़े जानवरों को भी पटक देता है। इसका शरीर बहुत भारी होता है।

यहाँ तेंदुआ, जंगली भैंसा, सांभर, भालू आदि जानवर इधर-उधर घूमते दिखाई दिए। झीलों में तैरते दरियाई घोड़ों का नज़ारा देखते ही बनता है। यहाँ बहने वाली नदियाँ एवं झीलें इसके रूप की शोभा बढ़ाती हैं। इस उद्यान को देखकर ऐसा लगा कि जो पशु-पक्षी गायब व नष्ट हो रहे हैं, वे ऐसे सुरक्षित वनों के कारण फिर से दिखने लगेंगे। ऐसे खुशहाल प्राकृतिक वातावरण में रहकर सभी जीव-जंतु अपनी ज़िंदगी का भरपूर आनंद उठा रहे हैं।

अलिशा तुम भी अपने मम्मी-पापा के साथ वहाँ घूमने जाओ। वहाँ के जीव-जंतुओं तथा प्राकृतिक दृश्य को देखकर तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।

अलिशा काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की तसवीरों को देखकर और वहाँ के बारे में जानकारी पाकर बहुत खुश हुई। उसने अपने कंप्यूटर को बंद किया और अपनी मम्मी से कहा, "मुझे भी काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान देखना है। आप पापा से कहिए कि हम भी वहाँ घूमने जाएँगे"

हाँ, हाँ अलिशा हम थोड़े दिनों बाद घूमने चलेंगे।

— संकलित

शिक्षण संकेत- बच्चों को अन्य राष्ट्रीय उद्यानों के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करें। उन्हें उद्यानों के निर्माण की महत्ता समझाएँ।

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द – फ़र्स्ट, कंप्यूटर, फ़ोन, ई-मेल, जीप

शब्द बोध- REMEMBER

फ़र्स्ट	–	पहला
उद्यान	–	बगीचा
दृष्टि	–	नज़र
सख्त	–	कठोर/मज़बूत
दोस्त	–	मित्र
ज़रा	–	थोड़ा
जग	–	संसार
गायब	–	ओझल

वर्तनी बोध-

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
कंप्यूटर	कम्प्यूटर	उद्यान	उद्यान
दवारा	द्वारा	सुंदर	सुन्दर
ज़िंदगी	ज़िन्दगी	आनंद	आनन्द
जंतु	जन्तु	बंद	बन्द

अभ्यास बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए- **EVALUATE**

बुद्धिपरक मौखिक प्रश्न
Knowledge Based Oral Questio

(क) चिंकी कहाँ घूमने गई थी?
(ख) अलिशा के पापा ने उसे क्या लाकर दिया और क्यों?
(ग) चिंकी ने कहाँ की तसवीरें अलिशा को ई-मेल कीं?
(घ) काजीरंगा अभयारण्य को काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का नाम कब दिया गया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए- **UNDERSTAND**

समझदारी युक्त लिखित प्रश्न
Understanding Based Written Questi

(क) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में लोग क्या देखने आते हैं और उन्हें कैसे घुमाया जाता है?
(ख) अलिशा काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान जाने के लिए क्यों उत्सुक हो जाती है?
(ग) चिंकी ने अलिशा को गैंडे के बारे में क्या बताया?
(घ) पाठ के आधार पर काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

3. ऐसा क्यों कहा गया......

(क) जो पशु-पक्षी गायब व नष्ट हो रहे हैं, वे ऐसे सुरक्षित वनों के कारण फिर से पनपने लगेगें।

(ख) काजीरंगा में बहने वाली नदियाँ एवं झीलें दूसरे राष्ट्रीय उद्‌यान से अलग रूप प्रदान करती है।

योग्यता विस्तार ANALYZE

मानसिक बौद्धिकता आधारित प्रश्न
Critical Thinking Based Questions

1. 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्‌यान' से संबंधित कोई चित्र बनाइए तथा उस चित्र के बारे में अपने सहपाठियों को बताइए।
2. मसूरी एक पहाड़ी जगह है। आप मसूरी के बारे में जानकारी प्राप्त करके उसकी सुंदरता पर कुछ वाक्य लिखिए।
3. पढ़िए और बातचीत को आगे बढ़ाइए-

गौतम - मुझे घूमना बहुत अच्छा लगता है।

मानसी - मुझे भी पहाड़ों पर घूमना पसंद है। खासकर वहाँ, जहाँ हरियाली ही हरियाली हो।

गौतम - मुझे तो जानवरों से इतना प्यार है कि मन करता है, जानवरों के साथ खेलूँ, उनसे बातें करूँ।

मानसी - चलो, हम दोनों अपने मम्मी-पापा के साथ ऐसी ही जगह घूमने चलते हैं।

भाषा-बोध APPLY

भाषा एवं व्याकरण आधारित प्रश्न
Language & Grammar Based Questions

बहु विकल्पीय प्रश्न- (MCQ)

कौशल आधारित प्रश्न
Skill Based Questions

1. सही विकल्प चुनिए-

(क) हिंदी में अंग्रेजी भाषा के प्रचलित शब्द 'फ़र्स्ट' का हिंदी शब्द है-

(अ) अंतिम ☐ (ब) प्रथम ☐ (स) द्वितीय ☐

(ख) 'उत्साहित' का विलोम शब्द है-

(अ) उमंग ☐ (ब) निरुत्साहित ☐ (स) जोश ☐

(ग) 'उद्‌यान' का पर्यायवाची शब्द है-

(अ) बगीचा ☐ (ब) शहर ☐ (स) घर ☐

(घ) 'वह पढ़ने में बहुत तेज है' में 'तेज' शब्द है-

(अ) क्रिया ☐ (ब) संज्ञा ☐ (स) विशेषण ☐

(ङ) "मेरे पापा ने मुझे कंप्यूटर लाकर दिया है" में 'ने' कौन-सा कारक है-

(अ) कर्ता कारक ☐ (ब) संबोधन कारक ☐ (स) अपादान कारक ☐

2. नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों में संज्ञा के कौन-से भेद हैं? लिखिए-

(क) अलिशा और चिंकी दोनों मित्र है। ____________

(ख) लोग यहाँ हरियाली देखने आते है। ____________

(ग) पशु-पक्षी गायब हो रहे हैं। ____________

(घ) अलिशा तसवीरें देखने के लिए उत्साहित थी। ____________

3. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करके वाक्यों को पुनः लिखिए-

अलिशा आठवीं कक्षा में पढ़ती है। अलिशा बारह साल की है। अलिशा पढ़ने में बहुत तेज़ है। अलिशा टीचर की बातों को बड़े ध्यान से सुनती है। अलिशा को पशु-पक्षियों से प्यार है। आलिसा ने चिंकी को धन्यवाद दिया।

____

____

4. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द क्या अर्थ दे रहे है? लिखिए-

(क) पक्षियों के पर सुंदर हैं। (पंख)

मैं आपके साथ चलती हूँ पर वापस आ जाऊँगी। (लेकिन)

(ख) अलिशा अच्छी लड़की है। (____________)

अच्छा, कब गई थी। (____________)

(ग) माँ हम बस से जाएँगे। (____________)

माँ, अब बस करो, सो जाओ। (____________)

5. दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

हरियाली - ______________________________

असम - ______________________________

गायब - ______________________________

काजीरंगा - ______________________________

खुश - ______________________________

उद्यान - ______________________________

हिंदी शब्दकोश देखने की विधि

शब्दकोश का अर्थ है– शब्दों का खज़ाना।

जब हम किसी शब्द का अर्थ जानना चाहते हैं तो उसको तुरंत शब्दकोश से मालूम कर सकते हैं। अर्थ के साथ हम किसी शब्द की व्युत्पत्ति, वर्तनी, लिंग, शब्दार्थ तथा पर्याय की जानकारी भी शब्दकोश के माध्यम से कर सकते हैं। परंतु यह कार्य संपन्न करने के लिए, शब्दकोश कैसे देखें, यह जानना अत्यंत आवश्यक है। यह बहुत आसान कार्य है। इसके लिए हमें पूरी वर्णमाला क्रम से याद होनी चाहिए।

शब्दकोश में शब्दों का विशेष क्रम होता है जो स्वरों और व्यंजनों का क्रम है। जैसे–

स्वरों का क्रम – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजनों का क्रम –

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

इन वर्णों से प्रारंभ होने वाले शब्दों को इसी क्रम से देखना चाहिए। उस शब्द का दूसरा वर्ण भी इसी क्रम में आता है, यह जानकारी रहने पर शब्द खोजने में और भी सुविधा रहती है।

ध्यान दें – ङ, ञ, ण, ड़, ढ़ आदि शब्दों से कोई भी शब्द शुरू नहीं होते हैं।

क्ष = क् + ष, ज्ञ = ज् + ञ त्र = त् + र, तथा श्र = श् + र।

इन संयुक्ताक्षरों से प्रारंभ होने वाले शब्दों को ढूँढ़ने की विधि यह है कि जहाँ संयुक्ताक्षर के प्रथम वर्ण के 'अ' से 'औ' तक के स्वर वाले सभी शब्द समाप्त होते हैं और व्यंजन वर्ण के शब्द प्रारंभ होते हैं; जैसे– क्या, क्र, क्ल और क्व (सभी स्वरों सहित) के बाद 'क्ष' से प्रारंभ होने वाले शब्द मिलने लगेंगे। यही क्रम अन्य संयुक्ताक्षरों– ज्ञ, त्र और श्र के लिए रहेगा।

रेफ़ के लिए भी यही क्रम रहेगा; जैसे– 'तर्क' शब्द ढूँढ़ना है तो 'त' के बाद 'र' में जहाँ 'औ' लगना समाप्त हुआ, स्वर रहित 'र्' वर्ण अगले के ऊपर जाने लगेगा और 'तर्क' शब्द मिल जाएगा।

जिन शब्दों के प्रथम वर्ण के ऊपर अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु (ँ) होता है, वे शब्द उस वर्ण के प्रारंभ में ही होते हैं।

शब्दकोश में बारहखड़ी का क्रम – कं, कँ, क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ, क्

संकेत चिह्न –

संज्ञा	संo	विशेषण	विo	स्त्रीलिंग	स्त्रीo
सर्वनाम	सर्वo	क्रिया-विशेषण	क्रिo-विo	अव्यय	अo
क्रिया	क्रिo	पुल्लिंग	पुo	मुहावरा	मुo

हिंदी पाठ्यपुस्तक की मानक वर्तनी

इन शब्दों को इस तरह भी लिख सकते हैं।

मानक रूप	प्रचलित रूप
शांति	शान्ति
सत्यं	सत्यम्
शिवं	शिवम्
सुंदरं	सुन्दरम्
दवारा	द्वारा
लाभांवित	लाभान्वित
संपूर्ण	सम्पूर्ण
संबंध	सम्बन्ध
हड्डियों	हड्डियों
दंपति	दम्पति
संभवतः	सम्भवतः
आरंभ	आरम्भ
ज़िंदगी	ज़िन्दगी
शुदध	शुद्ध
मिट्टी	मिट्टी
प्रसिदध	प्रसिद्ध
सौंदर्य	सौन्दर्य
दवार	द्वार
मंदिर	मन्दिर
प्रबंध	प्रबन्ध

मानक रूप	प्रचलित रूप
संदेश	सन्देश
बंदी	बन्दी
किंतु	किन्तु
जन्मसिदध	जन्मसिद्ध
बंद	बन्द
संभव	सम्भव
मंत्र	मन्त्र
उददेश्य	उद्देश्य
युदध	युद्ध
वृदध	वृद्ध
वृदधा	वृद्धा
खंभे	खम्भे
अंदर	अन्दर
परंतु	परन्तु
पसंद	पसन्द
गड्ढे	गड्ढे
चिंता	चिन्ता
सिदध	सिद्ध
आनंद	आनन्द
अंत	अन्त

मानक रूप	प्रचलित रूप	मानक रूप	प्रचलित रूप
लंबा	लम्बा	पुष्पोद्यान	पुष्पोद्यान
छुट्टी	छुट्टी	सुगंध	सुगन्ध
सत्ताईस	सत्ताईस	यंत्रों	यन्त्रों
ठंडे	ठण्डे	ज़िंदा	ज़िन्दा
इनसान	इंसान	वृद्धि	वृद्धि
संदेशा	सन्देशा	उद्यान	उद्यान
खट्टे	खट्टे	तंबू	तम्बू
यद्यपि	यद्यपि	लोकांतर	लोकान्तर
उत्तर	उत्तर	विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय
वैद्य	वैद्य	यद्यपि	यद्यपि
दुपट्टे	दुपट्टे	किंतु	किन्तु
मंदिर	मन्दिर	घंटो	घण्टों
शांत	शान्त	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध
इकट्ठा	इकट्ठा	खंडों	खण्डों
प्रबंध	प्रबन्ध	द्वीप	द्वीप
हरिद्वार	हरिद्वार	चिह्न	चिह्न
संदूक	सन्दूक	प्रारंभिक	प्रारम्भिक
लंबे	लम्बे	इंजेक्शन	इन्जेक्शन
ब्रह्मा	ब्रह्मा	अंतरिक्ष	अन्तरिक्ष
पत्ते	पत्ते	खंडहर	खण्डहर
विद्या	विद्या	संभवतः	सम्भवतः
मंदिर	मन्दिर	संबंध	सम्बन्ध
कंधे	कन्धे		

मानक रूप	प्रचलित रूप
झुंड	झुण्ड
डंडा	डण्डा
विद्यार्थी	विद्यार्थी
गंभीरता	गम्भीरता
उद्विग्न	उद्विग्न
छुट्टियाँ	छुट्टियाँ
संपति	सम्पति
ज़िंदगी	ज़िन्दगी
कंठ	कण्ठ
आनंद	आनन्द
पांडवों	पाण्डवों
चिंता	चिन्ता
उद्देश्य	उद्देश्य
मद्धिम	मद्धिम
झुंड	झुण्ड
संतोष	सन्तोष
इकट्ठी	इकट्ठी
विरुद्ध	विरुद्ध
किंतु	किन्तु
संदेह	सन्देह
लंबी	लम्बी
सिद्धांत	सिद्धान्त

मानक रूप	प्रचलित रूप
केंद्र	केन्द्र
संभव	सम्भव
चट्टानों	चट्टानों
संदेश	सन्देश
विश्वप्रसिद्ध	विश्वप्रसिद्ध
दक्खिन	दक्षिण
खंभा	खम्भा
भंडार	भण्डार
बुद्ध	बुद्ध
बौद्धों	बौद्धों
संपन्न	सम्पन्न
अद्वितीय	अद्वितीय
गंभीर	गम्भीर
शांति	शान्ति
गंगा	गङ्गा
हिंद	हिन्द
कंप्यूटर	कम्प्यूटर
उद्यान	उद्यान
द्वारा	द्वारा
ज़िंदगी	ज़िन्दगी
जंतु	जन्तु
आनंद	आनन्द

हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी के कुछ प्रचलित शब्द

अंग्रेज़ी भाषा के नीचे दिए गए शब्द, हिंदी भाषा के प्रचलन में आकर हिंदी के हो गए हैं और उन शब्दों का प्रयोग बिना पढ़े-लिखे व्यक्ति भी स्वाभाविक रूप से करते हैं और समझते भी हैं। यही भाषा की गतिशीलता है।

1.	अंकल	Uncle
2.	ऑक्सीजन	Oxygen
3.	ऑटोमैटिक	Automatic
4.	ऑफ़िस	Office
5.	ऑमलेट	Omelette
6.	आर्मी	Army
7.	आइसक्रीम	Ice-cream
8.	आर्ट पेपर	Art paper
9.	आर्केस्ट्रा	Orchestra
10.	इंजन	Engine
11.	इंच	Inch
12.	इंस्पेक्टर	Inspector
13.	ई-मेल	E-mail
14.	एक्सीडेंट	Accident
15.	एलबम	Album
16.	एजेंट	Agent
17.	एम्बुलेंस	Ambulance
18.	एलोपैथी	Allopathy
19.	एक्स-रे	X-ray
20.	एकड़	Acre
21.	एजेंसी	Agency
22.	ऐंटेना	Antenna
23.	एलास्टिक	Elastic
24.	ओज़ोन	Ozone
25.	ओवरकोट	Overcoat
26.	कलर	Colour
27.	कंडक्टर	Conductor
28.	कंपनी	Company
29.	कंपास	Compass
30.	कंपाउंडर	Compounder
31.	कार्टून	Cartoon
32.	कार	Car
33.	कार्बन	Carbon
34.	कार्टूनिस्ट	Cartoonist
35.	कॉलोनी	Colony
36.	काउंटर	Counter
37.	कॉलेज	College
38.	कॉम्पलेक्स	Complex
39.	किलोग्राम	Kilogram
40.	किलोमीटर	Kilometre
41.	किलोवाट	Kilowatt
42.	क्रिकेट	Cricket
43.	क्लब	Club
44.	कुकर	Cooker
45.	कूपन	Coupon
46.	कूलर	Cooler
47.	केक	Cake
48.	कैरम बोर्ड	Carrom Board
49.	कैमरा	Camera
50.	कैरट	Carat
51.	कैंसर	Cancer
52.	कैलेंडर	Calendar

53.	कैल्क्यूलेटर	Calculator
54.	कोट	Coat
55.	कोरियर	Courier
56.	कोलतार	Coal Tar
57.	गार्ड	Guard
58.	गाइड	Guide
59.	गाउन	Gown
60.	ग्रामोफ़ोन	Gramophone
61.	ग्लास	Glass
62.	ग्लूकोस	Glucose
63.	गियर	Gear
64.	गिटार	Guitar
65.	गीजर	Geyser
66.	गैस	Gas
67.	गैरेज	Garage
68.	गैलन	Gallon
69.	गैलरी	Gallery
70.	चॉक	Chalk
71.	चॉकलेट	Chocolate
72.	चिप्स	Chips
73.	चिमनी	Chimney
74.	चीज़	Cheese
75.	चेक	Cheque
76.	जग	Jug
77.	जंक्शन	Junction
78.	जनरल	General
79.	जैकेट	Jacket
80.	जींस	Jeans
81.	जीप	Jeep
82.	जूस	Juice
83.	जेलर	Jailor
84.	जेट इंजन	Jet Engine
85.	जैम	Jam
86.	जोकर	Joker
87.	टब	Tub
88.	टायर	Tyre
89.	टॉर्च	Torch
90.	टाइप	Type
91.	टाई	Tie
92.	ट्रस्टी	Trustee
93.	ट्यूब	Tube
94.	ट्यूब लाइट	Tube Light
95.	ट्यूबवेल	Tubewell
96.	ट्रांजिस्टर	Transistor
97.	ट्रांसफ़ार्मर	Transformer
98.	टॉफ़ी	Toffee
99.	टिकट	Ticket
100.	टिन	Tin
101.	टेप	Tape
102.	टेलीग्राफ़	Telegraph
103.	टेलीप्रिंटर	Teleprinter
104.	टेपरिकॉर्डर	Tape-recorder
105.	टेलीविजन	Television
106.	टेम्पो	Tempo
107.	टेलीफ़ोन	Telephone
108.	ट्रेंड	Trend
109.	टेकनीक	Technique
110.	टैक्सी	Taxi
111.	टेलेक्स	Telex
112.	ट्रैक्टर	Tractor
113.	ड्रम	Drum
114.	डायल	Dial
115.	डायरी	Diary
116.	डॉक्टर	Doctor

117. ड्राइवर Driver
118. डिग्री Degree
119. डिज़ाइन Design
120. डिप्लोमा Diploma
121. डीज़ल Diesel
122. डुप्लीकेट Duplicate
123. डेल्टा Delta
124. डेरी Dairy
125. ड्रेस Dress
126. ट्रक Truck
127. ट्रस्ट Trust
128. थर्मामीटर Thermometer
129. थर्मस Thermos
130. थाइरॉइड Thyroid
131. नंबर Number
132. नर्स Nurse
133. न्यूज़ News
134. नाइलॉन Nylon
135. नाइट्रोजन Nitrogen
136. निब Nib
137. निगेटिव Negative
138. नेलपालिश Nail Polish
139. नोट Note
140. नोटिस Notice
141. पर्स Purse
142. पाउडर Powder
143. पॉलिश Polish
144. पाइप Pipe
145. पासपोर्ट Passport
146. पायलट Pilot
147. पिकनिक Picnic
148. पुलिस Police
149. पेंसिल Pencil
150. पेंशन Pension
151. पेलमेट Pelmet
152. प्रेस Press
153. पेन Pen
154. पेज Page
155. पैड Pad
156. पैडल Pedal
157. प्लेटफ़ार्म Platform
158. पोस्ट कार्ड Post Card
159. पोस्टमैन Postman
160. पोस्टल आर्डर Postal Order
161. पोस्टमास्टर Postmaster
162. फ़ाइल File
163. फ्रॉक Frock
164. फ्रिज Fridge
165. फुट Foot
166. फुटपाथ Footpath
167. फ़ोटोग्राफी Photography
168. फ़ोन Phone
169. बम Bomb
170. बल्ब Bulb
171. ब्रश Brush
172. बरामदा Verandah
173. बिस्कुट Biscuit
174. ब्रेक Brake
175. बेबी Baby
176. बैंक Bank
177. मग Mug
178. मनीऑर्डर Money Order

179.	मलेरिया	Malaria
180.	मानसून	Monsoon
181.	माइक	Mike
182.	मिनट	Minute
183.	मीटर	Metre
184.	मैडम	Madam
185.	मैच	Match
186.	रबर	Rubber
187.	रजिस्टर	Register
188.	राडार	Radar
189.	राड	Rod
190.	रिमोट	Remote
191.	रिपोर्ट	Report
192.	रिफ़िल	Refill
193.	रेग्युलेटर	Regulator
194.	रेडियो	Radio
195.	रेफ़री	Referee
196.	रोलर	Roller
197.	रोड	Road
198.	लाइटर	Lighter
199.	लॉक-अप	Lock-up
200.	लाउडस्पीकर	Loudspeaker
201.	लिफ़्ट	Lift
202.	लिपस्टिक	Lipstick
203.	लीटर	Litre
204.	लेंस	Lense
205.	लेमन	Lemon
206.	लेटर बॉक्स	Letter Box
207.	लेफ़्टीनेंट	Lieutenant
208.	लैपटॉप	Laptop
209.	वाशबेसिन	Wash Basin
210.	वारंट	Warrant
211.	वार्निश	Varnish
212.	वॉलीबाल	Volleyball
213.	विकेट	Wicket
214.	विटामिन	Vitamin
215.	वैसलीन	Vaseline
216.	वोल्ट	Volt
217.	वोल्टेज	Voltage
218.	शैम्पू	Shampoo
219.	स्कूटर	Scooter
220.	स्टेशन	Station
221.	स्लेट	Slate
222.	साइकिल	Cycle
223.	स्वेटर	Sweater
224.	स्केल	Scale
225.	स्टुडियो	Studio
226.	स्टूल	Stool
227.	स्विच	Switch
228.	सिग्नल	Signal
229.	सिगरेट	Cigarette
230.	सिलिंडर	Cylinder
231.	सीमेंट	Cement
232.	सूट	Suit
233.	सेफ़्टीपिन	Safety Pin
234.	सोडा	Soda
235.	हॉकी	Hockey
236.	हीटर	Heater
237.	हीरो	Hero
238.	हेलीकाप्टर	Helicopter
239.	हेलमेट	Helmet
240.	हैंडपाइप	Hand Pipe

हिंदी के कुछ शुद्ध-अशुद्ध शब्द

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
शृगार	शृंगार
संवारना	सँवारना
अलोकिक	अलौकिक
भूंचाल	भूचाल
धराषायी	धराशायी
वाल्मीकी	वाल्मीकि
सदृश	सदृश्य
स्त्रोत	स्त्रोत
ब्राम्हण	ब्राह्मण
पुज्य	पूज्य
पुरष्कार	पुरस्कार
निर्दिष्ठ	निर्दिष्ट
दंपत्ति	दंपति
तिलांजली	तिलांजलि
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
घनिष्ट	घनिष्ठ
गरीष्ट	गरिष्ठ
बिडम्बना	विडंबना
ललायित	लालायित
मूहुर्त	मुहूर्त
अध्यात्मिक	आध्यात्मिक
अनुत्तिर्ण	अनुत्तीर्ण
अनिष्ठ	अनिष्ट
सन्यासी	संन्यासी
अन्ताक्षरी	अन्त्याक्षरी
द्वन्द	द्वंद्व
उज्जवल	उज्ज्वल
भगीरथी	भागीरथी
समर्पन	समर्पण
अक्षोहिणी	अक्षौहिणी
इतिहासिक	ऐतिहासिक

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
जीजीवीषा	जिजीविषा
कुमुदनी	कुमुदिनी
प्रेमांजली	प्रेमांजलि
पूज्यनीय	पूजनीय
नीरोग	निरोग
दयामई	दयामयी
ज्येष्ट	ज्येष्ठ
ग्रहीत	गृहीत
कैलाश	कैलास
उर्मि	ऊर्मि
शुपन्खा	शूर्पणखा
यथेष्ठ	यथेष्ट
अविष्कार	आविष्कार
अनुशरण	अनुसरण
हिरण्यकशिपु	हिरण्यकश्यप
तदपरांत	तदोपरांत
विरहणी	विरहिणी
परलौकिक	पारलौकिक
आर्शीवाद	आशीर्वाद
भुख्खड़	भुक्खड़
कवियित्री	कवयित्री
द्वारिक	द्वारका
वांगमय	वाङ्मय
जागृत	जाग्रत
अध्यन	अध्ययन
मृत्यून्जय	मृत्युंजय
अपरान्ह	अपराह्न
निस्वार्थ	निःस्वार्थ
सदृश्य	सदृश
आधीन	अधीन
सिरोजनी	सरोजिनी

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
प्रदर्शनि	प्रदर्शनी
अजीवका	आजीविका
कृतिम	कृत्रिम
ऊंचाई	ऊँचाई
अनेकों	अनेक
सहिषणुता	सहिष्णुता
शुशूषा	शुश्रूषा
आहिल्या	अहिल्या
आरोक्ष	आरोग्य
रचयीता	रचयिता
उपरोक्त	उपर्युक्त
नुपुर	नूपुर
पृष्ट	पृष्ठ
तत्कालिक	तात्कालिक
पतीव्रता	पतिव्रता
अतिथी	अतिथि
कौसल्या	कौशल्या
सप्ताहिक	साप्ताहिक
पैत्रिक	पैतृक
अंतरधयान	अंतर्ध्यान
शक्तिमन	शक्तिमान
मनःकामना	मनोकामना
यद्यपि	यद्रपि
आपका भवदीय	भवदीय या आपका
गुप्तरहस्य	गुप्त या रहस्य
अधिकांश भाग	अधिकांश
नौजवान युवती	नवयुवती
अच्छा उपयोग	सदुपयोग
स्वयं/मैं	स्वयं या मैं

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

केंद्रीय हिंदी निदेशालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार

वर्तनी का मानकीकरण

1. परसर्ग शब्द

(i) संज्ञा और विशेषण शब्द के साथ ने, को, से, का, में आदि परसर्ग अलग लिखे जाएँ- गाँधी जी ने, बच्चों को, घर पर आदि।

(ii) क- सर्वनामों के साथ परसर्ग मिलाकर लिखे जाएँ- मैंने, आपको, उसपर, किससे आदि। सर्वनाम के बाद 'ही, तक' आएँ तो परसर्ग अलग लिखे जाएँ- आप ही को, उस तक को (ध्यान दें- 'मैंने ही') आदि।

ख- सर्वनाम के साथ यदि दो परसर्ग हों तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए- उसके लिए, इसमें से आदि।

2. क्रिया पद

क्रिया पद के भीतर आने वाले सारे शब्द अलग लिखे जाएँ-

जाता था, पढ़ा करता था, किया जा सकता है, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

3. योजक चिह्न (हाइफ़न)

(i) द्वंद्व समास वाले शब्दों के बीच योजक चिह्न अवश्य लगाया जाए- धीरे-धीरे, आटे-दाल का भाव, छोटे-बड़े, चाल-चलन, जाते-जाते, पढ़ना-लिखना आदि।

(ii) तुलना के लिए प्रयुक्त 'सा' के पहले योजक चिह्न का प्रयोग किया जाए- तुम-सा, चाँद-सा मुखड़ा, चाकू-से तीखे आदि।

(iii) तत्पुरुष समास के वे शब्द जो किसी एक संकल्पना के सूचक हों उन्हें मिलाकर लिखा जाए- ग्रामसभा, आत्महत्या, भाषाविज्ञान आदि।

(iv) कुछ समरूप शब्दों में अर्थ भ्रम दूर करने के लिए तत्पुरुष समास में भी योजक चिह्न का प्रयोग अवश्य किया जाए- भू-तत्व (भूमि के तत्व) - (समस्त पद है); भूतत्व (भूत होने का भाव) - (भूत के साथ प्रत्यय जुड़ा है)

(v) कठिन संधियों से बचने के लिए भी योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है:- द्वि-अक्षर (द्व्यक्षर), द्वि-अर्थक (द्व्यर्थक), त्रि- आक्षरिक (त्र्याक्षरिक) आदि।

4. अव्यय

(i) 'जी, श्री, भर, मात्र' शब्द से अलग लिखे जाएँ। जैसे- बाबू जी, पिता जी, श्री राजेंद्र, दिन भर की दौड़-धूप, इतना भर बता दो, पाँच रुपए मात्र, निमित्त मात्र।

(ii) समस्त पदों में प्रति, यथा आदि अव्यय पृथक न लिखे जाएँ- प्रतिशत, प्रतिदिन, यथासमय, यथोचित आदि।

5. श्रुतिमूलक 'य' और 'व' के शब्द

(i) श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग क्रिया रूपों में होता है। क्रिया रूप इस तरह से बनेंगे-

आया आए, आई आईं

(हुवा...) हुआ हुए हुई हुईं

(ii) जिन शब्दों में मूल रूप से 'य' और 'व' शब्द के अंग हों, तो वे छोड़े नहीं जा सकते। जैसे-

पराया	-	पराये	पहिया	-	पहिये	रुपया	-	रुपये
दायाँ	-	दायें	करुणामय	-	करुणामयी	उत्तरदायी	-	उत्तरदायित्व

स्थायी, अव्ययीभाव आदि।

अनुस्वार (बिंदी या शिरोबिंदु)

(i) 'य' से 'ह' तक कई शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग निम्न प्रकार से होगा। यहाँ अनुस्वार के स्थान पर व्यंजन न लिखे जाएँ। जैसे- संरचना, संताप, संवाद, संशय, दंष्ट्रा, संसार, संयम, संरक्षण, सिंह।

(ii) अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ संयुक्त व्यंजन के रूप इस प्रकार बनेंगे, जैसे- अन्वय, वाङ्मय, अन्य, ताम्र, काम्य, सम्हालना, अम्ल।

(iii) अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों में स, श, ज़, से पहले 'न' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखें। जैसे- पेंसिल, मुंशी, मंज़िल, पेंशन, मंज़ूरी।

(iv) पंचमाक्षर- संयुक्त व्यंजन के रूप में पंचम वर्ण (नासिक्य) उसी वर्ग के पहले चार वर्णों के साथ नासिक्य का उच्चारण देता है।

क - वर्ग अंक, शंख, जंग, संघ
च - वर्ग चंचल, पंछी, पंजा, झंझट
ट - वर्ग टंटा, कंठ, डंडा, षंढा
त - वर्ग अंत, पंथ, बंद, अंधा
प - वर्ग कंपन, गुंफन, संबल, संभव

(v) पंचम वर्णों का द्वित्व आधे व्यंजन से लिखा जाए। जैसे- विषण्ण, अन्न, सम्मान, सम्मेलन।

(vi) तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग 'म्' का सूचक है। जैसे- अहं (अहम्), एवं (एवम्), शिवं (शिवम्)

(vii) अंग्रेज़ी और उर्दू से गृहीत शब्दों में नासिक्य व्यंजन पूरा लिखा जाए। जैसे- लिमका, तनख्वाह, तिनका, तमगा, कमसिन, इनकार, इनसान।

7. अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु)ँ

(i) अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनि गुण है। इसमें स्वर के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नाक से भी हवा निकलती है- अँ, आँ, उँ, ऊँ, एँ। जैसे- हँसना, आँख, उँगली, ऊँट, जाऊँ, जाएँ।

(ii) वर्ण की शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो अनुनासिकता को मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए बिंदी से दिखाया जाता है।
जैसे- सिंचाई, नींद, गेंद, में, पैंतीस, हैं, गोंद, लोगों ने, औंधा। (वस्तुतः यहाँ बिंदी अनुनासिकता की ही सूचक है अनुस्वार की नहीं।

- **टिप्पणी-** बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में मोटे टाइप वाले अक्षरों में सही उच्चारण सिखाने के लिए नीँद, गोँद, आदि को चंद्रबिंदु से ही दिखाया जाए तो सुविधा होगी।

8. विसर्ग

(i) तत्सम शब्दों के अंत में जहाँ विसर्ग का प्रयोग होता है, वहाँ उनका लोप न किया जाए।
जैसे- पुनः, अतः, प्रातः, प्रायः। इन शब्दों से अंतःपुर, अंतःकरण, प्रातःकाल, स्वतः, अंततः, मूलतः, क्रमशः आदि शब्द बनते हैं।

(ii) कुछ शब्द संधि के नियमों से बनते हैं, इसलिए इनमें विसर्ग के स्थान पर व्यंजन आते हैं।
जैसे- निः + वचन = निर्वचन   निः + छल = निश्छल   दुः + साहस = दुस्साहस   निः + शब्द = निश्शब्द

9. हल चिह्न

(i) अगर व्यंजन को स्वर के बिना दिखाना हो तो उसमें हल् चिह्न लगता है। ऐसे वर्ण को हलंत व्यंजन कहा जाता है।

(ii) वर्णमाला में व्यंजनों को उच्चारण की सुविधा के लिए 'अ' स्वर से युक्त ही दिखाया जाए।

(iii) प्राग्दिशा, वाग्देवी, साक्षात्कार, जगन्नाथ आदि का समास विग्रह करें तो पहला शब्द हलंत होगा।

(iv) 'संसद', 'परिषद' के साथ हल् का प्रयोग वैकल्पिक है। तत्सम शब्द के रूप में यदि कोई इन शब्दों को हलंत लिखे तो उसे अशुद्ध न माना जाए।

(v) हे राजन्, भगवन् जैसे तत्सम संबोधन शब्दों में हल चिह्न का प्रयोग करें, अन्यथा हे राजा, हे भगवन् का प्रयोग किया जाए।

(vi) शिक्षण में संधि विच्छेद करने पर हल चिह्न ज़रूर दिखाएँ।
जैसे- उन्नयन = उत् + नयन,   उल्लास = उत् + लास   जगन्माता = जगत् + माता।

आगत ध्वनियों के वर्ण

स्वर	ॉ	(जैसे - कॉलेज)
व्यंजन	ख़	(जैसे - सख़्त)
	ज़	(जैसे - मेज़)
	फ़	(जैसे - साफ़)

अंक देवनागरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0

संयुक्त व्यंजन

हिंदी में संयुक्त व्यंजन निम्नलिखित चार प्रकार से बनते हैं।

(1) 'क' और 'फ' के हुक को हटाकर क् + त = क्त (मुक्त) फ़् + त = फ़्त (मुफ़्त)

(2) **खड़ी पाई वाले वर्ण** - पाई हटा कर बनते हैं:-

ख् + य = मुख्य
ज् + व = ज्वाला
ध् + व = ध्वज
भ् + य = सभ्य
व् + य = व्यापार
ख़् + त = सख़्त

ग् + न = लग्न
ण् + य = पुण्य
न् + म = जन्म
म् + म = सम्मान
श् + व = श्वास
ज़् + ब = जज़्बात
क्ष् + य = लक्ष्य

घ् + न = विघ्न
त् + त = कुत्ता
प् + य = प्यार
य् + य = शय्या
ष् + ट = कष्ट
ख़् + त = सख़्त
त्र् + य = त्र्यंबक

च् + च = उच्च
थ् + य = तथ्य
ब् + द = शब्द
ल् + क = शुल्क
स् + म = स्मरण
ज़् + म = नज़्म

तीन व्यंजन वाले त् + र् + य = स्वातंत्र्य/स्वास्थ्य

(3) **बिना खड़ी पाई वाले वर्ण** - वर्ण के नीचे हल् चिह्न लगा कर बनते हैं।

ङ् + म = वाङ्मय
ड् + य = ड्योढ़ी
ह् + म = ब्रह्म

छ् + व = उच्छ्वास
ढ् + य = धनाढ्य
ह् + न = चिह्न

ट् + ट = लट्टू
द् + व = विद्वान
ह् + व = जिह्वा

ठ् + य = पाठ्य
द् + य = विद्या

(4) **'र' के तीन रूप हैं** - (1) र् + क (र्क) = तर्क (2) क् + र (क्र) = क्रम (3) ट् + र (ट्र) = ट्राम, राष्ट्र

अन्य उदाहरण-

र् + र (र्र) = दर्रा द् + र (द्र) = द्रव ड् + र (ड्र) = ड्रामा ह् + र = (ह्र) = ह्रास

मानक हिंदी वर्णमाला और वर्तनी

भारत संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर, कंप्यूटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों आदि के साथ विचार विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक रूप निर्धारित किया, वह इस प्रकार है:-

हिंदी वर्णमाला

स्वर Vowels	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	-	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
उदाहरण	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ
ध्यान दें	र् + उ = रु			र् + ऊ = रू							

मूल व्यंजन Consonants –

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
ड़	ढ़			

संयुक्त व्यंजन Consonant Cluster क्ष त्र ज्ञ श्र

टिप्पणी : (क् + ष = क्ष) (त् + र = त्र) (ज् + ञ = ज्ञ) (श् + र = श्र) आधुनिक हिंदी में /ज्ञ/ का उच्चारण 'ग्य' होता है।

विशेषक चिह्न - **Diacritic Marks**

अनुस्वार ं (जैसे - हंस)
चंद्रबिंदु (अनुनासिक चिह्न) ँ (जैसे - साँस)
विसर्ग ः (जैसे - प्रातः)
हल् चिह्न ् (जैसे - वाक्)

(vii) जो शब्द संस्कृत के महत्, विद्वत् आदि से बने हैं, उनमें हल् चिह्न न लगाने का प्रयत्न किया जाए। उदाहरण दे दें।

10. तीन व्यंजनों के गुच्छ

निम्नलिखित शब्दों में तीन की जगह दो व्यंजनों वाले शब्दों का प्रयोग बेहतर होगा।

जैसे- महत्त्व - महत्व, तत्त्व - तत्व, अद्‌र्ध - अर्ध

टिप्पणी : तुलना के लिए उज्ज्वल (उत् + ज्वल), प्रज्वलित (प्र + ज्वलित) के वर्तनी रूपों पर विशेष ध्यान दें।

11. ऐ/औ के शब्द

(i) कौवा का उच्चारण 'कव्वा' जैसा है तथा भैया का 'भय्या'। उच्चारण को ध्यान में रखते हुए शब्दों की वर्तनी देखिए,
जैसे- कौवा, चौवन, पौवा, हौवा, गैया, सवैया, तैयार, ऐयाशी, रवैया।

(ii) संस्कृत शब्द शय्या 'शयन' से बना है। इसे शैया न लिखें।

12. पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर'

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए।

जैसे- खाकर, मिलाकर, रो-रोकर।

13. 'वाला' प्रत्यय

(i) जब 'वाला' प्रत्यय से दूसरा संज्ञा या विशेषण शब्द बने तो वह एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखा जाए।
जैसे- फूलवाली, टोपीवाली, गाँववाला, जानेवाले लोग।

(ii) अन्य स्थानों में 'वाला' को अलग करके लिखें।
हम वहाँ जाने ही वाले हैं।
वह पहला वाला मकान।

14. विदेशी ध्वनियाँ

(i) अरबी-फ़ारसी या अंग्रेज़ी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतरण हो चुका है, उनके लिए हिंदी रूप ही स्वीकार किए जाएँ।

जैसे- कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं); पर जहाँ उनका शुद्‌ध विदेशी रूप में प्रयोग दिखाना अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनमें यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ।

जैसे- खाना-दवा खाने जाना है :
ख़ाना-दवाखाने जाना है।
राज : राज़,
फन (साँप का) : फ़न

सारांश में यह कहा जा सकता है कि अरबी-फ़ारसी एवं अंग्रेज़ी की मुख्यतः क़, ग़, ख़, ज़, फ़ और ऑ ध्वनियाँ हिंदी में आई हैं जिनमें से दो 'क़ और ग़' तो हिंदी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं, एक 'ख़' लगभग हिंदी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो 'ज़, फ़' धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

(ii) अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्‌ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का (ऑ, ॉ) प्रयोग किया जाए।
जैसे- ऑक्सीजन, ऑर्डर, कॉफ़ी, कॉलेज, डॉक्टर, नॉलेज।

(iii) हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्‌वत्समाज में दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है। कुछ उदाहरण हैं- गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ़/बर्फ़, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, फुरसत/फुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, बरतन/बर्तन, दोबारा/दुबारा आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

15. विरामादि चिह्न

(i) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

(ii) फुलस्टाप को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं।
जैसे- - ' : ; , - . / " " ?
अल्पविराम (,), अर्धविराम (;), उपविराम (:), प्रश्नचिह्न (?), विस्मयसूचक चिह्न या संबोधनसूचक चिह्न (!), निर्देशक चिह्न (—), उद्‌धरण चिह्न ("-"), शब्द या अवतरण चिह्न ('-'), विवरण या आदेश चिह्न (:-), लोप चिह्न (........), संक्षेपसूचक चिह्न (०) संयोजक चिह्न (-), कोष्ठक [{(-)}], ऊर्ध्व अल्पविराम (;), तुल्यतासूचक चिह्न (=), हंसपद (‸)

(iii) फुलस्टॉप (पूर्णविराम) के लिए खड़ी पाई (।) का ही प्रयोग किया जाए।

CREATE

पाठ–1 : जय भारती !

आंतरिक गतिविधि (INDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "आपको अपने भारतीय होने पर गर्व क्यों है? एक अनुच्छेद लिखिए।"

उद्देश्य : बच्चों के अंदर हिंदी लेखन कला का विकास करना एवं मात्राओं की अशुद्धियाँ कम करना। नए-नए वाक्यों की रचना कर सकना तथा नए शब्दों के अर्थ जानना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों ने श्रवण, स्मरण एवं लेखन कौशल का विकास होना। इसके साथ ही उनके अंदर देशप्रेम की भावना जागृत होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक, स्पीकर, रंगीन पृष्ठ या आप अपनी इच्छानुसार सफ़ेद पृष्ठ भी ले सकते हैं। आप अपनी इच्छानुसार रंगीन कलम का प्रयोग कर सकते हैं।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो! कल की कक्षा में "आप सभी को अपने भारतीय होने पर गर्व है", इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखना होगा। इसके लिए आप इंटरनेट या पुस्तकालय की पुस्तकों की मदद से अपनी अच्छी तैयारी कर सकते हैं।

निर्देश :

बच्चो! 'जय भारती' पाठ के कवि रामकुमार वर्मा की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करते हुए आप सभी को अनुच्छेद-लेखन का कार्य करना होगा। अनुच्छेद-लेखन के लिए आप सभी एक सुंदर सा पृष्ठ और कलम लेकर आइएगा।

- अनुच्छेद लेखन में आप कविता भी लिख सकते हैं लेकिन कविता देशप्रेम से संबंधित होनी चाहिए।
- अनुच्छेद-लेखन में मात्राओं पर विशेष ध्यान दीजिएगा। वाक्य व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिए।
- जिस बच्चे का अनुच्छेद-लेखन हर तरह से शीर्षक के अनुकूल होगा, उसका पृष्ठ जमा कर लिया जाएगा और उस बच्चे को किसी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित भी किया जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आप सभी अनुच्छेद-लेखन का कार्य शुरू कीजिए। जिनका कार्य सबसे पहले पूर्ण होगा, वे आकर मुझसे जाँच करवा सकते हैं।
- (शिक्षिका या शिक्षक घूम-घूम करके सभी बच्चों का लेखन कार्य देखते हैं। एक बच्चे शुभम् से पूछते हैं।) शुभम्, आपको विषय अच्छी तरह से समझ में आ रहा है, आपने यहाँ पर क्या लिखा है? शुभम् कहता है कि मैंने अपने देश पर गर्व महसूस करते हुए एक कविता स्वयं से लिखी है।
- शुभम्, आप अपनी कॉपी लेकर आइए और अपना अनुच्छेद दिखाइए। वह अनुच्छेद दिखाता है। अनुच्छेद पढ़कर शिक्षिका मन ही मन प्रसन्न होती हैं और उसकी पेज पर स्माइल बना कर देती हैं, इसके साथ ही उसे एक्सीलेंट भी लिखती हैं। शिक्षिका शुभम् से अपना अनुच्छेद सभी बच्चों को सुनाने के लिए कहती हैं। शुभम् शिक्षिका की आज्ञा का पालन करते हुए अपना अनुच्छेद बच्चों को सुनाता है। बच्चे अनुच्छेद सुनकर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं और एक साथ ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाते हैं।
- शिक्षिका उसके पेज को लेकर कक्षा के ग्रीन बोर्ड पर लगा देती हैं जिससे अन्य बच्चों को लिखने की प्रेरणा मिले।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों को अपने देश पर गर्व महसूस होगा। वे देश के प्रति अपने भाव को व्यक्त कर सकेंगे एवं देश की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

पाठ-2 : काबुलीवाला

ाह्य गतिविधि (OUTDOOR ACTIVITY)

: "रवीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन दर्शन के संदर्भ में"

तिविधि : बच्चे रबीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं के विषय में जान सकेंगे।

द्देश्य

शल एवं मूल्यों का विकास :
- बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्ति के कौशल का विकास देखा जा सकता है।
- बच्चों में गरिमा, देश-प्रेम जैसे मूल्यों का विकास हो सकेगा।

: एक कालांश

मय : सामूहिक

णाली : सभागार

थान

वश्यक सामग्री : A4 शीट, माइक, चित्र, छोटी कैंची, छोटा फेविकोल आदि

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :
- बच्चो! 'काबुलीवाला' पाठ के लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं और उनके जीवन की विशेषताओं के विषय में जानेंगे।

निर्देश :
- बच्चो! रबीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं के नाम एवं उस रचना की विशेषताओं को A4 शीट पर लिखकर प्रस्तुत कीजिएगा।
- रबीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन-शैली के बारे में भी लिख सकते हैं।
- आपको उनकी रचनाओं के नाम एवं विशेषताओं को प्रस्तुत भी करना होगा।
- सभी बच्चे समूह में विभाजित होकर कार्य करेंगे।

प्रक्रिया :
- बच्चो! आज की इस गतिविधि हेतु आप अपनी ज़रूरत की वस्तुएँ लेकर पंक्ति में खड़े हो जाइए।
- अब आप मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ जाकर अपने-अपने समूह में बैठ जाइएगा।
- अब आप अपना कार्य शुरू कीजिए। जिनका पूरा होता जाएगा, वे मंच पर आकर A4 शीट दिखाएँगे एवं रचनाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे।
- समूह 'क' शाबाश, आपका तैयार हो गया है।
  (सभी बच्चे 'हाँ' बोलते हैं।)
  आइए और बताना शुरू कीजिए।
  (समूह 'क' के सभी बच्चे मंच पर आकर रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचना 'काबुलीवाला' का चित्र दिखाकर कहानी के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालते हैं। वे ये भी बताते हैं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ही राष्ट्रगान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे!' इसकी रचना की है जो हमारे देश का स्वाभिमान है।)
- शाबाश बच्चो! आपने सही कहा। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने भारतवासियों का सिर ऊँचा किया है।
- (शिक्षिका ताली बजाती हैं) शाबाश बच्चो! आप लोगों ने उनकी रचनाओं को बहुत ही अच्छी तरह से A4 शीट पर चिपकाया है। इसे पीछे तार में पिन की सहायता से लगा दीजिए।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं एवं उनकी विशेषताओं को जान सकेंगे। उन्हें देश के ऐसे कवि पर गर्व होगा और वे स्वयं को भी भारतवासी होने पर गर्व महसूस करेंगे।

पाठ-3 : पुरस्कार

आंतरिक गतिविधि (INDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "स्वयं शिक्षक विधि"

उद्देश्य : बच्चों को स्वयं शिक्षक विधि द्वारा पुरस्कार कहानी को समझा सकना एवं अपने सहयोगियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी बता पाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : प्रकृति द्वारा बच्चों में स्मरण, वाचन, दृश्य एवं लेखन कौशल का विकास होना, इसके साथ ही उनके अंदर आत्मविश्वास को बढ़ाना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : एक माइक, एक स्पीकर।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो, पुरस्कार पाठ की पुनरावृत्ति में आप सभी को सामूहिक रूप में पाठ की कहानी एवं नैतिक मूल्य समझाना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! आपको पुरस्कार कहानी को अच्छी तरह से पढ़कर उसकी नैतिक मूल्य एवं कहानी को संक्षिप्त रूप में बताना होगा।
- मैं आप सभी को 6 समूहों में विभाजित कर दे रही हूँ। आप सभी अपने समूह के मुखिया या हेड के निर्देशानुसार ही कार्य पूर्ण कीजिएगा। आपके समूह का कोई एक बच्चा शिक्षिका के पास आकर स्वयं शिक्षक विधि द्वारा पाठ को समझाएगा एवं बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी देगा।
- पाठ को पढ़ाने का कार्य बहुत ही अच्छी तरह कीजिएगा ताकि आपके मित्रों की समस्याओं का समाधान हो सके।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की इस गतिविधि हेतु आप सभी सामूहिक रूप से बैठ जाइए और आपस में विचार-विमर्श कीजिए कि कौन पाठ को अच्छी तरह समझा सकता है और प्रश्नों के उत्तर भी आसानी से दे सकता है जिस समूह की तैयारी सबसे पहले होगी, वह अपना हाथ खड़ा कर देंगे। 10 मिनट के बाद आप सभी को पढ़ाने का मौका मिलेगा। (समूह 'ग' के बच्चे हाथ खड़ा करते हैं।)
- शाबाश! बच्चो, लगता है आपने अच्छी तैयारी कर ली है। अब आप में से कौन सा बच्चा मेरे समक्ष आकर पाठ को समझाना चाहेगा। (शिवांश हाथ उठाता है।)
- शाबाश! शिवांश, आइए और पाठ को सरलतापूर्वक समझाना शुरू कीजिए।
- शिवांश शिक्षिका के समक्ष आकर ब्लैक बोर्ड पर लिखकर बच्चों को पाठ समझाता है एवं उसके नैतिक मूल्यों से प्रश्न बनाकर बच्चों से उत्तर भी पूछता है जिससे नैतिक मूल्यों के प्रश्न एवं उसके उत्तर भी बच्चों को समझ में आ जाते हैं।
- शिक्षिका- बहुत अच्छा शिवांश! आपने बहुत अच्छी तरह से पाठ को समझाया। आपने अपने मित्रों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर भी बहुत ही अच्छे ढंग से दिया। मैं आपके इस कार्य से अतिप्रसन्न हूँ। (सभी बच्चे ताली बजाते हैं।)

  नोट : इसी प्रकार सभी बच्चे शिक्षिका के समक्ष आकर पाठ को अलग-अलग तरीके से समझाते हैं, जो बच्चों को बहुत ही अच्छी तरह से समझ में आ जाता है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे पाठ को भली प्रकार समझ सकेंगे एवं उनके अंदर शिक्षिका के समक्ष खड़े होकर पाठ को समझाने का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। उनमें हिंदी के प्रति लगाव भी उत्पन्न होगा।

पाठ–4 : मैंने तैरना सीखा

(OUTDOOR ACTIVITY)

ाह्य गतिविधि

ातिविधि : "हास्यपूर्ण नाटक का मंचन (साइकिल की सवारी)"

द्देश्य : बच्चों को हास्यपूर्ण नाटक द्वारा पात्रों के संवाद, भाव एवं सामाजिक परिस्थिति से अवगत कराना।

ौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, दृश्य एवं वाचन कौशल के विकास के साथ आपसी सहयोग, एकता एवं आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों का भी विकास करना/होना।

मय : एक कालांश

णाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-4, स्पीकर-1, मेज-1, टेबल-4।

िक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आप सभी को एकजुट हो 'साइकिल की सवारी' हास्य नाटक प्रस्तुत करना होगा।
- सभी बच्चों की उपस्थिति अनिवार्य है।

निर्देश :

- बच्चो! आपको 'साइकिल की सवारी' नाटक प्रस्तुत करना है।
- उस नाटक के लेखक की संक्षिप्त जीवनी भी होनी चाहिए।
- पात्रों के संवाद कंठस्थ कर उसी भाव में प्रस्तुत करना होगा।
- बच्चे अपनी इच्छानुसार वेशभूषा भी धारण कर सकते हैं। (जिस पात्र का अभिनय प्रस्तुत कर रहे हैं।)

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी यदि साधारण तैयारी करना चाहते हैं तो मैं पाँच मिनट दे रही हूँ। शेष बच्चे पंक्तिबद्ध हो जाएँ। (पाँच मिनट के बाद सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप सभी मेरे पीछे प्रार्थना प्रांगण तक चलिए। वहाँ पहुँचकर मंच के दोनों तरफ़ आधे-आधे बच्चे बैठ जाइएगा। (सभी बच्चे शिक्षिका की आज्ञा का अनुसरण करते हैं।)
- अब नाटक के लेखक मंच पर उपस्थित होकर उनकी विशेषताएँ एवं रचनाओं को बताइए। (सुमित मंच पर लेखक पंडित सुदर्शन के विषय में संक्षिप्त जानकारी देता है।)
- शाबाश सुमित! नाटक शुरू किया जाए। (नाटक के नाटककार मंच पर अपने-अपने हास्यास्पद संवाद को अतिसुंदर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं।)
- बच्चो! नाटक के पात्रों का अभिनय आप सभी ने सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। सभी बच्चे हास्य नाटक को समझ सके।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे हास्य नाटक के पात्र एवं सामाजिक परिस्थिति को जान सकेंगे एवं हास्यास्पद संवादों से आनंदित हो सकेंगे।

पाठ–5 : पिता का पत्र

आंतरिक गतिविधि (INDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : 'प्रतियोगिता द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति'

उद्देश्य : बच्चे पाठ में निहित कठिन शब्द, व्याकरणिक शब्द, स्वयं द्वारा निर्मित प्रश्न जैसे प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास :

- बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यात्मक कौशल का विकास होना।
- बच्चों के अंदर आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, अभ्यास पुस्तिका, कलम या पेंसिल।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो! 'पिता का पत्र' पाठ की पुनरावृत्ति में आप सभी को पाठ के बीच से या पाठ के आधार पर स्वयं से प्रश्न निर्माण कर उत्
बताना होगा। कठिन शब्दों के अर्थ एवं व्याकरणिक शब्दों को छाँटकर समझाना होगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी अपनी-अपनी अभ्यास पुस्तिका निकालकर समूह में बैठ जाइए। जिस समूह को कार्य पहले से बताया गया है, उस कार्य को करना शुरू कीजिए।
- जिस समूह के बच्चों का कार्य सबसे पहले पूर्ण होगा, वह अपना हाथ उठाकर खड़े हो जाएँगे। शिक्षिका की आज्ञा मिलने सामने आकर अपने पृष्ठ पर लिखे गए कार्य को बताएँगे।
- (स्वयं से प्रश्न बनाने वाले बच्चे हाथ ऊपर करते हैं और शिक्षिका का आदेश मिलते ही सामने आकर बच्चों से प्रश्नों उत्तर जानना चाहते हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर मिलने पर यह प्रसन्न होते हैं। जिन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलता, वे स्वय उसका उत्तर देकर अपने सहपाठियों को समझाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आप लोगों ने बहुत अच्छा प्रश्न बनाया और उसका उत्तर भी बच्चों को समझाया है। आप लोगों ने अ सहपाठियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी बहुत ही समझदारी से दिए है। शाबाश! मैं आपके इस कार्य से अति प्रसन्न
- कठिन शब्दों का चयन करने वाले बच्चे भी हाथ खड़ा करते हैं और शिक्षिका के आदेशानुसार सामने आकर कठिन शब्दों पढ़कर बताते हैं। उसी समूह के दूसरे बच्चे कठिन शब्दों से वाक्य बनाकर अंतर को स्पष्ट करते हैं।

  नोट : इसी तरह और भी समूह के बच्चे शिक्षिका के समक्ष आकर पूर्व निर्धारित कार्य को पूर्ण करते हैं एवं बच विचार-विमर्श कर समस्याओं का समाधान निकालते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे पाठ को भली प्रकार समझ सकेंगे एवं स्वयं से प्रश्न बनाकर, कठिन शब्दों के अर्थ जानकर, वाक्य का निर्माण करके, व्याकरणिक शब्दों का चयन कर पाठ को अच्छी तरह से समझ सकेंगे। इस तरह बच्चों का पाठ स पूर्वक तैयार हो सकेगा।

पाठ-6 : अन्याय के विरोध में

...हय गतिविधि

(OUTDOOR ACTIVITY)

... : "यदि आप लेखक बन जाए तो..."

...य : बच्चों को अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर वाक्य निर्माण कर कहानी लिखना।

...ल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक कौशल के विकास के साथ आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों का विकास होना।

... : एक कालांश

... : एकल

...श्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, पृष्ठ-1।

...का/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आपको एक अनुच्छेद लिखना है जिसका विषय होगा- "यदि आप लेखक बन जाएँ तो..."

...श :

- बच्चो! आपको अपने पृष्ठ पर एक अनुच्छेद लिखना होगा।
- जिस बच्चे का अनुच्छेद अति सुंदर होगा, उसे कक्षा के बोर्ड पर लगा दिया जाएगा।

...िया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी अपनी ज़रूरत की वस्तुओं को लेकर पंक्ति में खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप सभी मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर अपना-अपना विषय लिखना शुरू कर दीजिए।
- (सभागार में सभी बच्चे लेखन कार्य में जुट जाते हैं।) शिक्षिका घूम-घूमकर सभी बच्चों का कार्य देखती हैं। किसी-किसी बच्चे से प्रश्न भी पूछती हैं। एक बच्चा खड़ा होकर बोलता है, मेरा कार्य पूर्ण हो गया।
- सौरभ आइए और अपना अनुच्छेद पढ़कर बताइए। शाबाश बेटा! आपने साहित्यिक शब्दों का प्रयोग कर वाक्य को सरल एवं स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत किया है। आपका अनुच्छेद मुझे पसंद आया। आप अपनी कक्षा के बोर्ड पर इसे लगा दीजिएगा।
- अब और किसका हो गया है? आइए और सुनाइए। (कंचन, रीना, सुमित के अतिरिक्त अन्य सभी बच्चे अपना अनुच्छेद सुनाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आप सभी ने अच्छे शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग किया हैं। वाक्य सरल एवं स्पष्ट है। अति सुंदर।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि से बच्चे लेखन कार्य कर सकेंगे। वे शुद्ध एवं साहित्यिक शब्दों का प्रयोग कर हिंदी भाषा के प्रति अपनी इच्छाशक्ति जाहिर कर सकेंगे।

पाठ–10 : मज़दूरी और प्रेम

बाह्य गतिविधि (OUTDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "21वीं शताब्दी में गाँव एवं किसानों का जीवन (कल्पना के आधार पर चर्चा)"

उद्देश्य : बच्चों द्वारा गाँवों एवं किसानों के जीवन के 21वीं सदी की कल्पना के आधार पर सुधार करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण एवं वाचन कौशल के विकास के साथ भारतीय किसानों की गरिमा को विकसित करना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-3, स्पीकर-1, कुर्सी (बच्चों की उपस्थितिनुसार), मेज, चटाई-2

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आपको 21वीं सदी के गावों एवं किसानों के विषय में कल्पना कर कहानी बतानी होगी।

निर्देश :

- बच्चों, 21वीं सदी में भारतीय गाँव एवं वहाँ के किसानों का जीवन कैसा होगा? इस विषय पर चर्चा होगी।
- प्रत्येक समूह को एक निश्चित समय में समाप्त करना होगा।
- ग्रामीण जीवन से संबंधित कल्पना की उड़ान बिना सिर-पैर की नहीं होनी चाहिए।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्ति में खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप मेरे पीछे पार्क तक चलिए। वहाँ पहले से ही चटाई बिछाई जा चुकी है। उसपर अपने सहयोगियों के साथ बैठ जाइएगा (सभी बच्चे शिक्षिका के आदेश का पालन करते हैं।)
- अब चर्चा हेतु पहले समूह के बच्चे कुर्सी पर बैठिए। सभी बच्चे सामने आकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं) अब चर्चा शुरू की जाए। (सभी बच्चे अपनी-अपनी कल्पना की उड़ान द्वारा ग्रामीण जीवन को स्वर्ण से सुंदर बना देने का विचार देते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आपके विचार मुझे अतिउत्तम लगे। आपके अनुसार किसान अन्नदाता हैं इसलिए उसे सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराना हमारा कर्तव्य है। आप सभी के विचार बिंदु सराहनीय थे।

नोट : इसी प्रकार सभी समूह के बच्चे अपनी कल्पना से वहाँ उपस्थित अपने मित्रों एवं शिक्षिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे भारत के किसान के महत्व को समझ सकेंगे।

पाठ-11 : एक कुत्ता एक मैना

...तरिक गतिविधि

(INDOOR ACTIVITY)

: "साबरमती आश्रम के संदर्भ में जानकारी"

...धि : बच्चे गांधी जी के जीवन से संबंधित साबरमती आश्रम के संदर्भ में विस्तृत रूप से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

...एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्ति के कौशल का विकास हो सकेगा। बच्चे शांति, अहिंसा, प्रेम, देशभक्ति, शिष्टाचार जैसे मूल्यों को समझ सकेंगे।

: एक कालांश

: सामूहिक

...यक सामग्री : माइक-2, A-4 शीट (अपनी इच्छानुसार)

...का/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! साबरमती आश्रम के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिएगा।

...र्देश :

- बच्चो! कक्षा में सामूहिक रूप में साबरमती आश्रम के विषय में बोलना एवं चित्र दिखाना होगा।
- आज मैं आपको सामूहिक रूप में विभाजित कर दे रही हूँ। आप सभी समूह के मुखिया के दिशा-निर्देशन में कार्य पूर्ण कीजिएगा।
- समूह में विभाजित बच्चे अपने सहपाठियों संग गांधी जी एवं उनके आश्रम से संबंधित चित्र भी A-4 शीट पर चिपकाकर दिखाएँगे।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि की आप सभी तैयारी कर चुके होंगे। आज की प्रक्रिया शुरू की जाए। कौन सा समूह पहले आकर अपनी प्रस्तुति देना चाहता है? (नेहरू समूह के बच्चे हाथ उठाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आइए गांधी जी और उनके आश्रम के विषय में हम लोगों के महत्वपूर्ण जानकारी दीजिए।

  (नेहरू समूह के बच्चे गांधी जी का चित्र, गुजरात के महत्वपूर्ण स्थलों का चित्र एवं गांधी जी के जीवन की महत्वपूर्ण जानकारियों से हमें अवगत कराते हैं।) सभी बच्चे तालियाँ बजाते हैं।
- शाबाश बच्चो! आप सभी की प्रस्तुति अतिसुंदर थी।
- अब कौन सा समूह आना चाहता है। (गांधी समूह के बच्चों में से एक बच्चा गांधी जी बनकर उनके संवाद का नाटक करता है। ऋषि के (गांधी जी) नाटक से सभी बच्चे प्रसन्न होकर तालियाँ बजाते हैं।

  नोट : इसी तरह सभी समूह के बच्चे अपनी-अपनी प्रस्तुति द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियाँ देते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे गांधी जी एवं गुजरात के विषय में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ–12 : साहसी पुत्र

बाह्य गतिविधि (OUTDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : ''भारतीय सैनिकों के जीवन पर आधारित कविता वाचन''

उद्देश्य : बच्चों को भारतीय सैनिकों की साहस भरी कविता का गायन कर उनके जीवन से अवगत होना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण एवं वाचन कौशल के साथ देशप्रेम की भावना एवं व्यक्ति का सम्मान जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : दो कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1 ।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आपको देश के सैनिकों पर कविता कंठस्थ कर लयात्मक ढंग से प्रस्तुत करना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! भारतीय सैनिकों की कविताओं को कंठस्थ कर लयात्मक ढंग से प्रस्तुत करना होगा।
- प्रत्येक बच्चे की कविता अलग होनी चाहिए। अर्थात् एक कविता दोबारा नहीं होनी चाहिए।
- कविताओं की प्रस्तुति के समय शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देना होगा।
- आप सैनिकों की वेश-भूषा भी धारण कर सकते हैं लेकिन इसकी जिम्मेदारी आपकी होगी।
- प्रत्येक बच्चे को 2 मिनट या उससे भी कम समय दिया जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्ति में खड़े हो जाइए। (जिन बच्चों को सैनिक का वेश धारण करना है, वे जल्द से जल्द तैयारी करें और पंक्ति में खड़े हो जाएँ।) सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप सभी मेरे पीछे शांतिपूर्वक सभागार तक चलिए और वहाँ शांतिपूर्वक पंक्ति में बैठ जाइए। (सभी बच्चे शिक्षिका के आदेश का पालन करते हैं।)
- अब सबसे पहले कौन सा बच्चा अपनी कविता सुनाना चाहता है। (संचित हाथ खड़ा करता है। शिक्षिका की आज्ञा मिलने के बाद वह मंच पर आकर कविता वाचन करता है। उसकी कविता सुनकर सभी बच्चे भावुक हो उठते हैं।)
- शाबाश संचित! आपकी कविता और आपकी प्रस्तुति बहुत सराहनीय थी। अब दूसरा बच्चा मंच पर आए और कविता प्रस्तुत करें।

  नोट : इसी प्रकार सभी बच्चे अपनी कविता प्रस्तुत करते हैं जिनका आज नहीं हो सका, वे कल की कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे भारतीय सैनिकों के विषय में जानेंगे। वे सैनिकों के निःस्वार्थ भाव और देशप्रेम को भी समझेंगे।

पाठ-13 : घीसा

बाह्य गतिविधि (OUTDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "बच्चों द्वारा अशिक्षित लोगों को शिक्षित करने का प्रयास"

उद्देश्य : बच्चों द्वारा अशिक्षित व्यक्तियों को शिक्षित कर अपनी शिक्षा का उपयोग एवं खाली समय का सदुपयोग करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन, श्रवण एवं लेखन कौशल के विकास के साथ आपसी प्रेम, एकता, सद्भावना जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चों दो दिन आपको सामूहिक रूप में विद्यालय की चपरासी या माली को शिक्षित करने का संकल्प लेना होगा।

निर्देश :

- मैं आपको चार समूहों में विभाजित कर रही हूँ। आप सभी इनको सरलतापूर्वक शिक्षित करने की विधि ढूँढ़िएगा।
- आप अपने घर से कॉपी, पेंसिल, स्लेट, रबर, कहानी की पुस्तक इत्यादि भी इन्हें दे सकते हैं।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी अपने-अपने समूहों में विभाजित होकर विद्यालय के सहायक कर्मचारियों को सम्मान पूर्वक सभागार में बिठाए एवं उनकी शिक्षा की विधि शुरू कीजिए। (सभी बच्चे सहायक कर्मचारियों के लिए ज़रूरत की वस्तुओं को लेकर उन्हें सम्मानपूर्वक बुलाकर सभागार में पंक्ति से बिठाते हैं।)
- अब आप अपना कार्य शुरू कीजिए। (सभी बच्चे सामूहिक रूप में सहायक कर्मचारियों को शिक्षित करने जुट गए। उन्होंने जिन्हें कुछ भी आता था, उन्हें चॉक से स्लेट पर लिखना शुरू किया, जिन्हें कुछ पढ़ना आता था, उन्हें कहानी की पुस्तक देकर कहानी पढ़ाई और उसका उद्देश्य समझाया।)
- शाबाश बच्चो! आप सभी ने बड़ी तल्लीनता से अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण किया। आप ऐसे व्यक्तियों को शिक्षित कर रहे हैं जिनके बिना हमारा जीवन अधूरा है।
- बच्चो! आपको अपने घर की काम करने वाली दाईयों के बच्चों को भी खाली समय में शिक्षित करना चाहिए ताकि वे अपना नाम लिख सकें। अपने भविष्य को सुंदर बनाने के विषय में सोच सकें (सभी बच्चे खुशी-खुशी 'जी हाँ' कहते हैं।)

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे सहायक कर्मचारियों के महत्व को समझते हुए उन्हें भी अपने अधिकार के प्रति जागरूक कर सकेंगे।

पाठ–16 : हिम्मत और जिंदगी

आंतरिक गतिविधि (INDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती- इस पंक्ति की व्याख्या करके समझाना"

उद्देश्य : बच्चों को परिश्रम के महत्व को समझाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक कौशल का विकास होना। इसके साथ ही उनके अंदर मानव सहयोग, आपसी प्रेम, परिश्रम जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-4, स्पीकर-1, इच्छा अनुसार A4 शीट एवं कलम।

शिक्षिका/शिक्षक के दुवारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! कल की कक्षा में आप सभी को 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' इस पंक्ति की व्याख्या करके बताना है।

निर्देश :

- बच्चो! सर्वप्रथम मैं आप सभी को चार समूहों में विभाजित कर रही हूँ। आप सभी समूह का प्रतिनिधित्व करते हुए कार्य को पूर्ण कीजिएगा।
- व्याख्या करते समय प्रत्येक बच्चे की उपस्थिति अनिवार्य है। समूह का प्रत्येक बच्चा अपने-अपने विचार प्रकट कर सकता है। इसमें आप कविता के माध्यम से भी अपने विचार प्रकट कर सकते हैं।
- व्याख्या का लेखन एवं वाचन A4 शीट पर भी लिखकर किया जा सकता है।
- एक समूह का बच्चा कवि-परिचय प्रस्तुत करेगा। वह स्वयं कवि बनकर भी अपनी आत्मकथा के रूप में कवि परिचय दे सकता है।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि के लिए आप सभी अपने सहपाठियों के साथ अपने-अपने समूहों में बैठकर विचार-विमर्श कीजिए। आप सभी को 10 मिनट का समय दिया जाएगा। 10 मिनट के पश्चात् जिस समूह का कार्य पूर्ण हो जाएगा, वह हाथ खड़ा करके अपने कार्य पूर्ण होने की जानकारी देगा।
- सर्वप्रथम मैं कवि परिचय प्रस्तुत करने हेतु अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' समूह के बच्चों को अपने समक्ष उपस्थित होने के लिए कहूँगी। (इस समूह के सभी बच्चे आज्ञा मिलते ही मेरे समक्ष आकर कवि परिचय देना शुरू करते हैं। अयोध्या सिंह उपाध्याय की वेशभूषा में 1 बच्चा अपना परिचय देता है। बच्चे उनकी रचनाओं एवं पुरस्कार के संदर्भ में बताते हैं। कुछ बच्चे उनकी रचनाओं की छाया प्रति लेकर कक्षा में दिखाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! अतिउत्तम, आप लोगों ने बहुत अच्छे ढंग से कवि परिचय प्रस्तुत किया। इस तरह से आप सभी को उनकी रचनाओं एवं पुरस्कारों के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो गई।
- अब 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' इस पंक्ति की व्याख्या करने के लिए "हिम्मत" समूह के बच्चे मेरे समक्ष आए और इन दो पंक्तियों की व्याख्या करें।
- शाबाश बच्चो! आप लोगों ने इन दोनों पंक्तियों की व्याख्या अतिउत्तम ढंग से प्रस्तुत की। आप लोगों का कार्य प्रशंसनीय था आप सभी ने आपसी सहयोग एवं एकता का परिचय दिया है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि दवारा बच्चे हिंदी के कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे औ हिम्मत एवं साहस का जीवन में क्या लाभ होगा, इसे भी समझ सकेंगे।

पाठ-19 : वीर बालक

आंतरिक गतिविधि (INDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "शिवाजी और राणा प्रताप की वीरता एवं महानता का वर्णन"

उद्देश्य : बच्चों को भारत के वीर योद्धा महाराणा प्रताप एवं चतुर शिवाजी के संदर्भ में जानकारी उपलब्ध कराना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास होना। उनमें भारत के वीर सैनिकों के प्रति सम्मान एवं देश प्रेम की भावना उत्पन्न होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-4, स्पीकर-1, एक चार्ट एवं बच्चों के बैठने के लिए कुर्सियाँ (उनकी उपस्थिति के अनुसार)।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आप सभी को छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप के संदर्भ में पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी है।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आप सभी को दो समूहों में विभाजित कर दे रही हूँ। एक समूह छत्रपति शिवाजी की विशेषताओं पर प्रकाश डालेगा और दूसरा समूह महाराणा प्रताप पर।
- दोनों समूहों का नाम भी महाराणा प्रताप एवं छत्रपति शिवाजी होगा। दोनों समूह अपना अच्छा प्रदर्शन देने हेतु पात्र के अनुसार पोशाक भी धारण कर सकते हैं। (यह आपकी इच्छा पर निर्भर करेगा।)
- प्रत्येक बच्चे की उपस्थिति अनिवार्य है।
- आप चार्ट या छाया चित्र के माध्यम से भी अपने समूह को दिखा सकते हैं।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि के लिए सर्वप्रथम महाराणा प्रताप समूह के बच्चे मेरे समक्ष आइए और अपना-अपना स्थान ग्रहण कीजिए। (सभी बच्चे महाराणा प्रताप की वेशभूषा में बड़े ही जोश से शिक्षिका के समक्ष आकर कुरसी पर बैठ जाते हैं।
- अपनी प्रस्तुति शुरू कीजिए। (शिक्षिका की आज्ञा मिलने के पश्चात् बच्चे महाराणा प्रताप की जीवन की सच्चाई पर प्रकाश डालना शुरू करते हैं। प्रत्येक बच्चा उनकी महानता के विषय में एक पंक्ति बोलता है। इस समूह का प्रत्येक बच्चा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है शिक्षिका उन लोगों के इस प्रदर्शन से अत्यधिक प्रसन्न होती हैं और सबके लिए तालियाँ बजाती हैं।)
- अब शिवाजी समूह के बच्चे मेरे समक्ष आए और अपनी प्रस्तुति दें। (समूह के बच्चे भी बिना समय व्यतीत किए शिक्षिका के समक्ष आकर स्थान ग्रहण करते हैं और आज्ञा मिलने पर अपनी अपनी प्रस्तुति देते हैं। ये बच्चे शिवाजी की चतुरता को संक्षिप्त नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं जो अत्यंत सराहनीय होता है। ये शिवाजी का छायाचित्र भी दिखाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! दोनों समूहों ने कठिन परिश्रम किया है। आपकी प्रस्तुति से सभी बच्चे भारत के महान योद्धा की महानता से अवगत हुए है। बच्चो! आज आप लोगों ने ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे भारत के वीर योद्धाओं एवं उनकी महानता को समझ सकेंगे।

पाठ-20 : काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

बाह्य गतिविधि (OUTDOOR ACTIVITY)

गतिविधि : "पहाड़ी स्थलों की प्रस्तुति स्वरचित कविताओं द्वारा"

उद्देश्य : बच्चे स्वयं कविता की रचना कर सकेंगे।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक कौशल का विकास होना।

समय : दो कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माईक-1, स्पीकर-1, सुंदर पृष्ठ-1, कलम या स्केच।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :
- बच्चो! आप सभी को किसी पहाड़ी स्थल के सौंदर्य का वर्णन कविता के माध्यम से करना होगा।
- इंटरनेट या पुस्तकों की सहायता ले सकते हैं।

निर्देश :

- बच्चो! आपको किसी पहाड़ी स्थल के सौंदर्य का वर्णन कविता के द्वारा करना होगा।
- कविता स्वरचित होनी चाहिए।
- कविता को सुंदर पृष्ठ पर लिखकर प्रस्तुत कीजिएगा।
- जिन बच्चों का पहले दिन कार्य न हो सके, वे दूसरे दिन सुना सकते हैं।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्तिबद्ध हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब मेरे पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर सभी बच्चे पंक्ति में बैठ जाएँगे। (सभी बच्चे शिक्षिका की आज्ञा का पालन करते हैं।)
- बच्चो! आप अपनी स्वरचित कविता सुनाने मंच पर आइए। (रोहन कविता सुनाने मंच पर आता है।)

  बहुत हो गई थी मनमानी,

  सिखाऊँ सबक प्रकृति ने ठानी.....
- शाबाश रोहन! क्या आपने स्वयं कविता की रचना की है या इसे बनाने में किसी की मदद ली है। (रोहन कहता है, हाँ मैम, मैंने अपनी दीदी की सहायता से लय बनाना सीखा है।)
- शाबाश रोहन! आपकी कविता अतिसुंदर थी। (शिक्षिका ताली बजाकर उसके शर्ट पर स्टीकर लगा देती हैं।)

नोट : इसी तरह सभी बच्चे अपनी रचना प्रस्तुत कर शिक्षिका से स्टीकर ग्रहण करते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा। वे स्वयं से कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे।

कक्षा ______ दिनांक ______

1. जय भारती!

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित तालिका 'अ' में दिए हुए विशेषण शब्दों का तालिका 'ब' में दिए हुए विशेष्य शब्दों से मिलान कीजिए-

तालिका 'अ'	तालिका 'ब'
(क) नई	गाथा
(ख) पुण्य	भक्ति
(ग) गौरव	शक्ति
(घ) सुंदर	स्वर
(ङ) अभिनव	भूमि

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थों के सामने लिखिए-

जग, मधुमय, अभिनव, पुण्य, मानस, जन-जन

(क) प्रत्येक मनुष्य को ______
(ख) पवित्र कार्य ______
(ग) नया ______
(घ) मन ______
(ङ) संसार ______
(च) मधुरता से युक्त ______

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए-

(क) अभिनव ______ (ख) शक्ति ______
(ग) गौरव ______ (घ) जग ______
(ङ) गाथाएँ ______ (च) पुण्य ______

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

(क) गाय ______ (ख) काम ______
(ग) घर ______ (घ) सूरज ______
(ङ) रात ______ (च) पत्ता ______

5. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए-

(क) अप - ______ (ख) भर - ______

Hello.

कार्यपत्रक एवं गतिविधियाँ

कार्यपत्रक एवं गतिविधियाँ

नाम ________________ कक्षा __________ दिनांक __________

1. जय भारती!

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित तालिका 'अ' में दिए हुए विशेषण शब्दों का तालिका 'ब' में दिए हुए विशेष्य शब्दों से मिलान कीजिए-

तालिका 'अ'	तालिका 'ब'
(क) नई	गाथा
(ख) पुण्य	भक्ति
(ग) गौरव	शक्ति
(घ) सुंदर	स्वर
(ङ) अभिनव	भूमि

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थों के सामने लिखिए-

जग, मधुमय, अभिनव, पुण्य, मानस, जन-जन

(क) प्रत्येक मनुष्य को ____________

(ख) पवित्र कार्य ____________

(ग) नया ____________

(घ) मन ____________

(ङ) संसार ____________

(च) मधुरता से युक्त ____________

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए-

(क) अभिनव ____________ (ख) शक्ति ____________

(ग) गौरव ____________ (घ) जग ____________

(ङ) गाथाएँ ____________ (च) पुण्य ____________

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

(क) गाय ____________ (ख) काम ____________

(ग) घर ____________ (घ) सूरज ____________

(ङ) रात ____________ (च) पत्ता ____________

5. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए-

(क) अप - ____________ (ख) भर - ____________

(ग) बे - ____________ (घ) प्र - ____________

(ङ) सम् - ____________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "भारत के वर्तमान पाँच देशभक्तों के नाम सचित्र A4-शीट पर चिपकाकर उनके संदर्भ में बताएँ"

उद्देश्य : बच्चों को भारत में देश की सुरक्षा हेतु अपना सर्वस्व बलिदान करनेवालों की जान-पहचान कराना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यात्मक कौशल के विकास के साथ-साथ देशप्रेम की भावना जाग्रत होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक, स्पीकर, A4-शीट, देशभक्तों के चित्र।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो! 'जय भारती' कविता के पठन-पाठन से पूर्व आपको, भारतीय देशभक्तों के चित्र एवं उनके संदर्भ में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करनी होगी।

निर्देश :

- बच्चो! 'जय भारती' पाठ के कवि रामकुमार वर्मा की संक्षिप्त जानकारी देनी है।
- मैं आपको सामूहिक रूप से विभाजित कर दे रही हूँ। आप सभी समूह के निर्देशानुसार कार्य कीजिएगा।
- सभी समूह के बच्चों को वर्तमान के पाँच देशभक्तों की जानकारी एवं चित्र A4-शीट प्रस्तुत करना होगा।
- प्रत्येक समूह कवि परिचय देने के उपरांत देशभक्तों के संदर्भ में बताएगा। आपके समूह का मुख्य बच्चा या प्रत्येक बच्चा भी अपनी-अपनी प्रस्तुति दे सकते हैं।
- सभी समूह में अलग-अलग देशभक्तों के चित्र होंगे।

प्रक्रिया :

- आज की गतिविधि की प्रस्तुति हेतु आप सभी अपनी वस्तुओं को लेकर पंक्तिबध होकर शांतिपूर्वक खड़े हो जाएँ। (सभी बच्चे शांतिपूर्वक पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर प्रत्येक समूह के बच्चे अपने समूह में बैठकर विचार-विर्मश शुरू कीजिएगा। (सभी बच्चे शिक्षिका के आदेश का पालन करते हैं।)
- गतिविधि शुरू की जाए। कौन-सा समूह सर्वप्रथम आना चाहेगा? (चंद्रशेखर समूह के बच्चे मंच पर आकर अपनी A4-शीट दिखाते हैं एवं पाँचों देशभक्तों के चित्र एवं उनके संदर्भ में संक्षिप्त जानकारी देते हैं।)
- शाबाश, चंद्रशेखर समूह के बच्चों आपने मंच पर आकर सर्वप्रथम देशभक्ति की जिस कविता का समूह में गायन किया, वह सराहनीय था। कवि का संक्षिप्त परिचय भी अच्छा था। देशभक्तों के चित्र को दिखाकर एवं उनकी जानकारी बताकर हमें उनके देशभक्ति से अवगत कराया है।

  शाबाश बच्चो! (सभी बच्चे तेज स्वर में करतल ध्वनि करते हैं।)

  नोट : इसी प्रकार प्रत्येक समूह के बच्चे अपनी-अपनी प्रस्तुति देते हैं। सभी का कार्य देखकर शिक्षिका सभी बच्चों की प्रशंसा करती हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे भारतीय क्रांतिकारियों को जान एवं पहचान सकेंगे। उन्हें स्वयं के भारतीय होने पर गर्व होगा। वे भी देशभक्ति से ओतप्रोत हो सकेंगे।

नाम ______________ कक्षा ________ दिनांक ________

2. काबुलीवाला

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए-

(क) उपद्रव - ____________ (ख) उद्विग्न - ____________

(ग) चद्दर - ____________ (घ) हास्यालाप - ____________

2. इन शब्दों के लिंग लिखिए-

(क) वेदना - ____________ (ख) परिचय - ____________

(ग) अधिकार - ____________ (घ) ससुराल - ____________

3. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) काबुलीवाले से मिनी की दोस्ती किस प्रकार हुई थी?

____

(ख) काबुलीवाला मिनी को बहुत चाहता था। इसके पीछे क्या कारण था?

____

(ग) काबुलीवाले को जेल क्यों जाना पड़ा था?

____

4. जो उत्तर सही हो, उसके सामने सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) 'दुहिता' का समानार्थी शब्द हैं-

(i) लड़की, बेटी ☐ (ii) तनया, आत्मजा ☐

(iii) बालिका, पुत्री ☐ (iv) बेटी, पुत्री ☐

(ख) इनमें से शुद्ध वाक्य है-

(i) रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दी। ☐ (ii) रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दिया। ☐

(iii) रहमत ने छुरा निकालकर भोंकी। ☐ (iv) रहमत ने छुरा निकालकर भोंक दिए। ☐

(ग) इस शब्द में द्वित्व व्यंजन नहीं आया है-

(i) पक्की ☐ (ii) उद्विग्न ☐

(iii) उत्तर ☐ (iv) अठन्नी ☐

5. इन शब्दों से वाक्य बनाइए-

(क) शुभ - ______________________________

(ख) काबुलीवाला - ______________________________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "पाठ के संदर्भ में प्रश्नोत्तर चर्चा"

उद्देश्य : बच्चे पाठ से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

कौशल एवं मूल्यों का विकास :

- बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्ति के मूल्यों का विकास हो सकेगा।
- बच्चों में, व्यक्ति की गरिमा, सहयोग, प्रेम, लगाव जैसे मूल्यों का विकास देखा जा सकता है।

समय : एक कालांश

प्रणाली : व्यक्तिगत

आवश्यक सामग्री : माइक - 1, चार्ट पेपर - 1 (किसी भी रंग का)

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो, पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिएगा।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आप सभी को चार समूहों में विभाजित करके सभी समूहों को 1 चार्ट को चार भागों में विभाजित कर हर समूह को एक भाग दूँगी।
- प्रत्येक समूह चार्ट के शीर्ष पर अपने समूह के बच्चों का नाम या समूह का नाम लिखकर मेरे द्वारा दिए गए निर्देशानुसार कार्य करेंगे।

प्रक्रिया :

- शिक्षिका- बच्चो! आप सभी अपने-अपने समूह में बैठ जाइए। (सभी बच्चे कलम लेकर समूह में बैठ जाते हैं।) शिक्षिका चारों समूहों को (चार्ट के चार भागों में से) एक-एक भाग देती हैं।
- समूह 1. आप पाठ में आए व्याकरणिक शब्दों का चयन कर चार्ट पेपर पर लिखिए।

  समूह 2. आप सभी स्वयं से अति लघु प्रश्न बनाइए।

  समूह 3. आप सभी पाठ के नैतिक मूल्य से संबंधित प्रश्नों को लिखिए।

  समूह 4. भाषा अभ्यास के प्रश्नों को कीजिए।

  अब आप सभी कार्य करना शुरू कीजिए। (सभी बच्चे अपने कार्य में जुट जाते हैं।) शिक्षिका घूम-घूम कर सभी समूहों का कार्य जाँचती एवं राय देती हैं। सभी के कार्य पूर्ण होने पर समूह 1 आकर सामने खड़ा होकर उसे पढ़कर सुनाता है।
- शिक्षिका- बच्चो! इससे हमने पाठ के व्याकरणिक शब्दों को जान लिया है और पाठ का सार भी समझ लिया।
- समूह 2 के बच्चे भी पाठ के बीच से 1 शब्द के बारे में पूछते हैं जिसका उत्तर सभी बच्चे प्रसन्नता पूर्वक देते हैं।

  नोट : इसी तरह सभी समूह के बच्चे अपने दायित्व को गंभीरता पूर्वक पूर्ण करते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों को पाठ का संपूर्ण ज्ञान हो सकेगा।

नाम ________________ कक्षा ________ दिनांक ________

3. पुरस्कार

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. **दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए-**

(क) विसर्जित - ________ (ख) आश्रय - ________

(ग) अनुग्रह - ________ (घ) पुरस्कार - ________

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

(क) कोशल का कौन-सा उत्सव प्रसिद्ध था?

____

(ख) मधूलिका ने उन स्वर्ण मुद्राओं का क्या किया?

____

(ग) मधूलिका ने राजकुमार अरुण की मदद क्यों की?

____

(घ) मधूलिका ने पुरस्कार में क्या माँगा?

____

3. **दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-**

(क) दंड × ________ (ख) सुख × ________

(ग) रात्रि × ________ (घ) आदेश × ________

(ङ) समाप्त × ________ (च) स्वीकार × ________

4. **दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-**

(क) उत्सव - ________ ________

(ख) पथिक - ________ ________

(ग) रात्रि - ________ ________

(घ) नरेश - ________ ________

5. **पाठ में आए शब्दों के लिंग बदलिए-**

(क) राजकुमार - ________ (ख) कुमार - ________

(ग) मालिक - ________ (घ) राजा - ________

(ङ) युवक - ________ (च) दास - ________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "राजा विक्रमादित्य एवं राजा चंद्रगुप्त का संवाद वाचन"

उद्देश्य : बच्चों को दोनों न्यायप्रिय राजा की न्यायप्रियता पूर्ण बातों को जान एवं समझ सकना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन एवं दृश्य कौशल के विकास के साथ न्यायप्रियता एवं सहनशीलता जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : दो कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक, स्पीकर।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आप सभी को 2 मिनट का संवाद याद करके मंच पर बोलना होगा।
- आपको दोनों राजा (राजा चंद्रगुप्त और राजा विक्रमादित्य) में से किसी का भी संवाद उन्हीं के भाव में प्रस्तुत करना होगा।
- आप पुस्तक या इंटरनेट की सहायता से भी तैयारी कर सकते हैं।

निर्देश :

- बच्चो! हमारे देश में दो न्यायप्रिय राजा थे। आपको उनके संवाद उन्हीं के भाव में मंच पर प्रस्तुत करना होगा।
- आप राजा की वेश-भूषा भी धारण कर सकते हैं। लेकिन वस्त्र धारण करने का समय आपको विद्यालय में नहीं मिल पाएगा। इसलिए घर से ही पूरी तैयारी करके आइएगा।
- प्रत्येक बच्चे को दो मिनट का समय दिया जाएगा। जिसका एक दिन में नहीं होगा, उसकी प्रस्तुति अगले दिन होगी।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की प्रक्रिया हेतु जिन बच्चों को थोड़ी-बहुत तैयारी करनी है, उन्हें पाँच मिनट का समय देती हूँ। जल्द से जल्द तैयार होकर पंक्ति में खड़े हो जाइए। (5 मिनट के बाद) आप सभी पंक्ति में खड़े हो जाइए। (सभी बच्चों के खड़े होने के पश्चात) अब आप सभी मेरे पीछे शांतिपूर्वक सभागार में चलिए और वहाँ मंच के दोनों तरफ़ बैठ जाइए। (जैसे- एक तरफ़ राजा विक्रमादित्य और दूसरी तरफ़ राजा चंद्रगुप्त।)
- अब प्रक्रिया शुरू की जाए। (राजा विक्रमादित्य की वेशभूषा में तैयार कपिल मंच पर आकर उनकी न्यायप्रियता का अतिसुंदर संवाद प्रस्तुत करता है। संवाद सुनकर समस्त बच्चे ताली बजाते हैं।)
- शाबाश, कपिल! आपका संवाद और आपके भाव अतिसुंदर थे।
- अब राजा चंद्रगुप्त के पक्ष का बच्चा मंच पर आए और अपना संवाद सुनाए। (चंद्रगुप्त समूह से प्रकृति मंच पर उपस्थित होकर राजा की न्यायप्रियता का एक संवाद प्रस्तुत करता है। संवाद वाचन मर्मस्पर्शी होता है।)

  नोट : इसी प्रकार दोनों समूह के बच्चे अपने-अपने संवाद सुंदर ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे राजा चंद्रगुप्त एवं राजा विक्रमादित्य के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। उनके अंदर भी न्यायप्रियता की भावना ले सकेगी। अब वे न्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने में अपने को सक्षम अनुभव कर सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

4. मैंने तैरना सीखा

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और दिए गए शब्दों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
(क) पाणि-पल्लव -	____________	____________
(ख) उस्ताद -	____________	____________
(ग) जलसा -	____________	____________

2. निम्नलिखित वाक्यों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) यमुना नदी के किनारे रहने वाले करते हैं-
(अ) रामलीला ☐ (ब) कृष्णलीला ☐ (स) रासलीला ☐

(ख) कवि न होकर भी किस कला का ज्ञान आपको हो सकता है-
(अ) लेखन कला ☐ (ब) काव्यकला ☐ (स) वाचन कला ☐

(ग) गंगा-यमुना नदी के किनारे रहने वालों का जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता है-
(अ) तैरना ☐ (ब) रासलीला करना ☐ (स) पूजा करन ☐

3. तालिका 'अ' में दिए गए विशेषणों के लिए तालिका 'ब' में दिए गए उचित विशेष्य चुनिए-

तालिका 'अ'	तालिका 'ब'
(क) परम पावनी	पर्दा
(ख) जन्मसिद्ध	लोग
(ग) विशाल	गंगा
(घ) साधारण	अधिकार
(ङ) मंद	पत्थर
(च) पारदर्शी	गति

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

(क) कंगन ____________ (ख) रात ____________
(ग) मोर ____________ (घ) गाँव ____________
(ङ) नाक ____________

5. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(क) पल्लव = ____________ (ख) संगीत = ____________
(ग) चमन = ____________ (घ) प्रेम = ____________
(ङ) ध्यान = ____________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होती नदियों का चित्र एवं जनमानस और जीव-जंतुओं पर प्रभाव का चित्रण"

उद्देश्य : नदियों के प्रदूषित होने के कारण एवं जीव-जंतुओं पर उसके होने वाले असर को समझ सकना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास :
- बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यात्मक कौशल का विकास होना।
- बच्चों में जीव-जंतुओं और मानव प्रेम जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक एक, स्पीकर एक, चार्ट पेपर एवं रंगीन पेन रंग या मोम रंग।

निर्देश :

- बच्चो! आपको प्रदूषित होती नदियों को चित्र के माध्यम से दर्शाना होगा। इसके साथ ही जनजीवन एवं जीव जंतुओं पर होने वाले प्रभाव को भी आप रंगीन चित्रों के माध्यम से दर्शाइएगा।
- शिक्षिका द्वारा 2 दिन पूर्व सूचना-बच्चों आप सभी को नदियों के प्रदूषण एवं उससे होने वाले प्रभाव के वर्णन को चित्र के माध्यम से दर्शाना होगा। इसके लिए आप इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की सहायता ले सकते हैं।
- यह गतिविधि आपको सामूहिक रूप में करना है। इसके लिए मैं आप सभी को समूह में विभाजित कर दे रही हूँ। आप सभी समूह के बच्चों के साथ मिलकर कार्य को सुंदर ढंग से पूर्ण करेंगे।
- आप अपने समूह का नाम अपनी इच्छा अनुसार रख सकते हैं।
- चित्र बनाने के लिए चार्ट पेपर आपको स्वयं ही लाना होगा। समूह में विचार-विमर्श कर चार्ट एवं रंगीन पेन या रंग और ब्रश ला सकते हैं।
- जिस-जिस समूह का चित्र सबसे सुंदर होगा, उसे कक्षा के बोर्ड पर लगा दिया जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की इस गतिविधि हेतु आप सभी अपने समूह में अपनी सारी सामग्रियों के साथ बैठ जाइए एवं कार्य शुरू कीजिए।
- जिस समूह का कार्य सबसे पहले पूर्ण होगा, वे मेरे पास आकर अपने चार्ट को दिखाएँगे एवं उसमें चित्रित चित्र के विषय में संक्षिप्त जानकारी भी देंगे।
- (समूह के सभी बच्चे हाथ उठाते हैं और शिक्षिका के कहने पर वे चार्ट पेपर को लेकर सामने आते हैं और उस उस चार्ट में चित्रित प्रदूषित नदियों एवं उसके प्रभाव को समझाते भी हैं। सभी बच्चे अपना कुछ ना कुछ सहयोग देते हैं।) (शिक्षिका को समूह ग के चित्र एवं उनके द्वारा चित्र का वर्णन अति सुंदर लगा। शिक्षिका उनके आत्मविश्वास को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई एवं शाबाशी दी।)
- (समूह ग के चित्र को कक्षा के सॉफ्ट बोर्ड पर लगा दिया गया। कक्षा के सभी बच्चे उसके चित्र को देखकर तालियाँ बजाने लगे।)
- शिक्षिका शाबाश बच्चो! आप लोगों ने बहुत ही सुंदर ढंग से प्रदूषित होने वाली नदियों के विषय में बताया है एवं जनजीवन पर होने वाले उनके प्रभाव को भी बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे प्रदूषित होती नदियों के विषय में जानकारी एवं जीव-जंतु के प्रति अपनी भावनाओं को भी चित्रों के माध्यम से व्यक्त कर सकेंगे। इस तरह उनके अंदर मानव एवं जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम एवं दया की भावना उत्पन्न हो सकेगी।

नाम ________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

5. पिता का पत्र

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) ________________ में घास और गड्ढे खोदने में पूरा समय देना। (घर/खेत)

(ख) अपने परिवार में तुम एक योग्य ________________ बनो। (किसान/पिता)

(ग) रामदास और ________________ को भी तुम सँभाल रहे हो। (लक्ष्मणदास/देवदास)

(घ) अच्छी तरह समझ लेने के बाद मुझे ________________ देना। (किताब/जवाब)

(ङ) 'बा' और तुम लोग सवेरे दूध के साथ ________________ ले रहे होगे। (साबूदाना/दलिया)

2. नीचे दिए हुए शब्दों में 'अन' उपसर्ग लगाकर विलोम शब्द बनाइए-

(क) सुना - ________________ (ख) पढ़ - ________________

(ग) देखा - ________________ (घ) जान - ________________

(ङ) उपयोगी - ________________

3. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए।

(क) संतोषी - ________________ (ख) चिंतित - ________________

(ग) योग्य - ________________ (घ) शांत - ________________

(ङ) उदार - ________________ (च) आनन्दित - ________________

4. निम्नलिखित शब्दों का उनके सही अर्थों से मिलान कीजिए-

शब्द	अर्थ
(क) ब्रह्मचर्य	ठीक ढंग से
(ख) मूल्यवान	गुण दोषों की विवेचना
(ग) समालोचना	नकली
(घ) सुव्यवस्थित	इंद्रियों पर संयम की अवस्था
(ङ) कृत्रिम	कीमती

5. निम्नलिखित शब्द समूहों से समस्त पद की रचना कीजिए-

शब्द समूह	समस्त पद
(क) प्रत्येक मास	________________
(ख) जल का प्रवाह	________________
(ब) पीत हैं अंबर जिसके	________________
(घ) गज के समान आनन	________________
(ङ) शोक से आकुल	________________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "गाँधी जी के आंदोलन का संक्षिप्त वर्णन"

उद्देश्य : बच्चे को गाँधी जी के विभिन्न आंदोलन को चार्ट पर चित्र एवं कारणों द्वारा प्रस्तुत कर समझाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास :

- बच्चों में अभिव्यक्तात्मक एवं ग्रहणात्मक कौशल का विकास होना।
- बच्चों में व्यक्ति की गरिमा, आपसी सहयोग एवं आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, चार्ट पेपर।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो! आप सभी को गांधी जी एवं उनके आंदोलन को चार्ट पेपर पर चित्र के द्वारा प्रस्तुत करना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! आपको मैं चार समूहों में विभाजित कर रही हूँ। प्रत्येक समूह गांधी जी के एक आंदोलन के विषय में संक्षिप्त जानकारी एवं चित्र बनाकर प्रस्तुत करेगा।
- प्रत्येक समूह अपने आंदोलन के विषय में दूसरे समूह को बता देंगे। एक ही आंदोलन दो समूहों द्वारा प्रस्तुत नहीं होना चाहिए।
- चार्ट पेपर समूह के सहपाठी आपसी सहयोग से लेंगे और उस पर चित्र स्वयं से बना सकते हैं या छाया चित्र भी चिपका सकते हैं।
- प्रत्येक समूह चार्ट पेपर दिखाकर आंदोलन के विषय में जानकारी देंगे।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप अपनी वस्तुओं को साथ में लेकर पंक्ति में खड़े हो जाएँ। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप सभी मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर समूह में बैठ जाइएगा। (सभी बच्चे शिक्षिका के निर्देश का पालन करते हैं।)
- अब कौन-सा समूह सर्वप्रथम अपनी प्रस्तुति देना चाहता है। (असहयोग आंदोलन समूह के बच्चे समूह के साथ मंच पर आकर चार्ट पेपर पर सुंदर सा चित्र दिखाकर गांधी जी एवं असहयोग आंदोलन के कारण का संक्षिप्त परिचय देते हैं। सभी बच्चे इस समूह की प्रस्तुति से प्रसन्न होकर ताली बजाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आपका चार्ट अतिसुंदर है। आप सभी ने सुंदर तरीके से अपनी प्रस्तुति भी दी है।

  नोट : इसी प्रकार सभी समूह के बच्चे अपना चार्ट दिखाकर अपने सहयोगियों संग प्रस्तुति देते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे गांधी जी और उनसे संबंधित आंदोलन के विषय में जान सकेंगे। वे देश की स्थिति से पूर्णतः अवगत हो सकेंगे। देश की सुरक्षा एवं स्वतंत्रता में अपना पूर्ण योगदान दे सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

6. अन्याय के विरोध में

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग, प्रत्यय व मूल शब्द अलग करके लिखिए-

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
(क) मालकिन	______	______	______
(ख) टटोलकर	______	______	______
(ग) दोपहर	______	______	______
(घ) अन्याय	______	______	______

2. अन्याय के विरोध पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) जूलिया तुम्हारी तनख्वाह ______________ महीना तय हुई थी ना।

(ख) मैंने ______________ में नोट कर रखा है।

(ग) तुमने इतवार को ______________ मनाई है।

(घ) उसकी आँखें ______________ से भर उठीं।

3. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण और विशेष्य छाँटकर लिखिए-

वाक्य	विशेषण	विशेष्य
(क) जूलिया ने दबी जबान से कहना चाहा।	______	______
(ख) जूलिया ने काँपते हाथों से पैसे लिए।	______	______
(ग) मैंने ऊँचे स्वर में चिल्लाते हुए कहा।	______	______
(घ) उस दिन तुमने काम नहीं किया था।	______	______

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उन्हें स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करें।

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
(क) भीरू -	______	______
(ख) गवर्नेस -	______	______
(ग) खामोश -	______	______
(घ) आग-बबूला -	______	______

5. पाठ से कोई तीन विशेषण और उनके विशेष्य छाँटकर लिखिए

	विशेषण	विशेष्य
(क)	______	______
(ख)	______	______
(ग)	______	______

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "अपने घर की सेवक या सेविका से साक्षात्कार कर एक पृष्ठ में लिखना एवं कक्षा में प्रस्तुत करना।"

उद्देश्य : बच्चे अपने घर के सेवकों-सेविकाओं की भावनाओं को समझ कर उनका सम्मान करना सीख सकेंगे एवं उनके कार्य में भी सहयोग कर सकेंगे।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास होना। इसके साथ ही उनके अंदर प्रेम, सहयोग एवं गरीबों का सम्मान जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, पृष्ठ-1।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

बच्चो! आपको अपने घर में काम करने वाली या अपने आसपास के किसी गरीब का साक्षात्कार कर एक पृष्ठ में लिखकर कक्षा में प्रस्तुत करना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! कल की कक्षा में आप सभी को अपने घर की सेविका या अपने घर के आस-पास सफ़ाई करने वाले किसी कर्मचारी का साक्षात्कार करके एक पृष्ठ पर लिखना होगा एवं उनकी मदद आप किस प्रकार कर सकते हैं, इसे भी बताना होगा।
- बच्चो! यह कार्य आपको स्वयं से करना होगा ताकि आप उनकी भावनाओं को समझकर उनके कष्टों का निवारण करने में अपना सहयोग दे सकें।
- प्रत्येक बच्चे को 2 मिनट का समय दिया जाएगा। जिन बच्चों का प्रथम कालांश में समाप्त नहीं हो पाएगा, उन्हें दूसरे कालांश में अपना साक्षात्कार प्रस्तुत करने का मौका मिलेगा।
- जिन बच्चों का कार्य सराहनीय होगा, उन्हें विद्यालय की तरफ से पुरस्कृत भी किया जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि शुरू करने हेतु आप सभी क्रमबद्ध तरीके से बैठ जाएँ एवं अनुक्रमांक के अनुसार आप लोग अपने द्वारा लिए गए साक्षात्कार को प्रस्तुत कीजिए।
- सर्वप्रथम अनुक्रमांक एक मेरे पास आइए और अपना साक्षात्कार पढ़कर बच्चों को सुनाइए एवं उनकी समस्याओं का निदान करने के लिए आप किस प्रकार उनका सहयोग करेंगे या आप किस तरह से उनकी मदद कर सकते हैं। बताएँ।

  (अनुक्रमांक एक का बच्चा शिक्षिका के समक्ष आकर अपने घर की सेविका का साक्षात्कार पढ़कर सुनाता है एवं बताता है कि मैं उनके अनपढ़ बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने घर में बुला लूँगा और एक घंटा समय देकर उनके बच्चों को पढ़ाने की कोशिश करूँगा। शिक्षिका शुभम् के प्रयास को सुनकर अति प्रसन्न होती हैं और शाबाशी देते हुए अगले समूह के बच्चे को सामने आने की आज्ञा देती हैं।)

  नोट : इसी प्रकार समस्त बच्चे अपने साक्षात्कार का वाचन कर सभी बच्चों को उनकी समस्याओं से अवगत कराते हैं और उनका समूह उनके सहयोग में मिलकर कदम उठाते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों गरीबों का सम्मान कर उनके प्रति प्रेम की भावना रख सकेंगे एवं उनकी समस्याओं का निदान करने में एकजुट होकर सहयोग कर सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ______________ दिनांक ______________

8. कोयल

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित वाक्यों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) कोयल की बोली में मिठास है क्योंकि उसने
(अ) माँ की सीख मानी है। ☐ (ब) मिठाई खाई है। ☐

(ख) कोयल ने कूक-कूक कर-
(अ) आमों में मिसरी घोली है। ☐ (ब) आम का रस मीठा किया है। ☐

(ग) कोयल को चिड़ियों की रानी इसलिए कहते हैं क्योंकि
(अ) वह सभी चिड़ियों से सुंदर व बड़ी है। ☐ (ब) उसने अपनी माँ की सीख सदैव मानी है। ☐

2. कविता के अनुसार निम्नलिखित विशेषणों में उचित विशेष्य पर (घेरा) लगाइए-

(क) प्यासी - (अ) लकड़ी (ब) धरती (स) नदी
(ख) मीठी - (अ) मिठाई (ब) खीर (स) बोली
(ग) खट्टे - (अ) आम (ब) नींबू (स) आँवला
(घ) भरे-भरे - (अ) डिब्बे (ब) रस (स) कमरे

3. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो नवीन शब्दों की रचना कीजिए-

उपसर्ग	शब्द	शब्द
(क) पुनर्	______	______
(ख) कु	______	______
(ग) बिन	______	______
(घ) सम्	______	______

4. निम्नलिखित विशेष्यों के लिए कविता में प्रयुक्त उचित विशेषण उनके सामने लिखिए-

(क) कोयल - ______ (ख) आम - ______
(ग) धरती - ______ (घ) बोली - ______

5. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में शब्दों के क्रम उलट-पलट गए हैं। उन्हें सही करके लिखिए-

(क) कूक इसने कूक तो कर ही
____

(ख) हो संदेशा क्या लाई?
____

(ग) अभी आज लगे जो यहीं थे
____

(घ) पड़ेंगे हमें देखकर टपक
____

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : 'कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो बसंत', जैसी अन्य कविताओं की प्रस्तुति'

उद्देश्य : बच्चे सुभद्राकुमारी चौहान की कविता को लयात्मक ढंग से प्रस्तुत कर कविता के भाव को समझ सकेंगे।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन कौशल का विकास होना। उनमें प्रकृति प्रेम, वीरों का सम्मान एवं देश-प्रेम जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-2, स्पीकर-1, चटाई-2।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आपको सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता सामूहिक रूप से कंठस्थ करके प्रस्तुत करना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आप लोगों को छह समूहों में विभाजित कर रही हूँ। आप सभी कवयित्री की अलग-अलग रचनाओं की प्रस्तुति देंगे।
- मैं आपके समूह का नाम उनकी रचना के नाम पर रख रही हूँ ताकि आप उसी रचना की कविता पेश कर सकें। जैसे- समूह- 'झाँसी की रानी', समूह- 'वीरों का कैसा हो बसंत'।
- समस्त समूह के बच्चे लयात्मक ढंग से शुद्ध उच्चारण में कविता की प्रस्तुति करेंगे।
- सचित्र कवयित्री के जीवन की संक्षिप्त जानकारी देंगी।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की प्रक्रिया हेतु आप सभी बच्चे पंक्तिबद्ध होकर खड़े जो जाइए। (सभी बच्चे शिक्षिका के आदेशानुसार पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप मेरे पीछे-पीछे पार्क तक चलिए। वहाँ पहले से चटाई बिछाई जा चुकी है। आप समूह में बैठ जाइए। (सभी बच्चे पार्क में चटाई पर समूह में बैठ जाते हैं।)
- अब आज की गतिविधि शुरू की जाए। झाँसी की रानी समूह के बच्चे सामने आइए। सबसे पहले कवयित्री का परिचय दीजिए। (सभी बच्चे शिक्षिका के पास आकर सामूहिक रूप में कविता प्रस्तुत करते हैं।)
- बच्चो! आप (सुचित्रा) ने कवयित्री का सुंदर ढंग से परिचय दिया है। झाँसी समूह के बच्चों की प्रस्तुति अति सुंदर थी। ज़ोशपूर्ण ढंग से उन्होंने कविता प्रस्तुत की है। कविता के उच्चारण में भी कोई त्रुटि नज़र नहीं आई। शाबाश बच्चो! सुंदर प्रदर्शन।

  नोट : इसी तरह सभी समूह के बच्चे अपनी-अपनी रचनाओं की कविता प्रस्तुत करते हैं। सभी की प्रस्तुति सराहनीय होती है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे हिंदी कविताओं को कंठस्थ कर शुद्ध उच्चारण के साथ प्रस्तुत कर हिंदी के प्रति अपने अनुराग को दिखा सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

9. तीर्थयात्रा

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए-

(क) आक्रमण- ____________ (ख) ऋतु - ____________

(ग) बेसुध - ____________ (घ) सिरहाना - ____________

(ङ) कल्पित - ____________ (च) सख़्त - ____________

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) लाजवंती किसको छिपाकर रखती थी और क्यों?

____

(ख) बेटे के उदास होते ही लाजवंती क्यों चिंतित हो उठी?

____

(ग) बेटे के ठीक न होने पर लाजवंती ने किसकी प्रार्थना की?

____

(घ) तीर्थयात्रा के लिए रखे पैसे का क्या उपयोग हुआ? यदि तुम लाजवंती के स्थान पर होते तो क्या करते?

____

3. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

(क) नारी - ____________ (ख) सफल - ____________

(ग) अधीर - ____________ (घ) प्रसन्न - ____________

4. इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(क) उत्तर × ____________ (ख) सावधानी × ____________

(ग) परिश्रम × ____________ (घ) पूर्व × ____________

5. नीचे दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

(क) गऊ - ____________ (ख) माता - ____________

(ग) मुँह - ____________ (घ) जेठ - ____________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "परोपकार (अपने जीवन में किसी पर परोपकार किया हो और उससे आपको कैसा अनुभव हुआ हो।)"

उद्देश्य : बच्चों में परोपकार के महत्व को समझाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण एवं वाचन कौशल के विकास के साथ परोपकार जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : दो कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आज सभी को आपके द्वारा होने वाले उपकार की कहानी एवं उनका चित्र दिखाना।

निर्देश :

- बच्चों की कक्षा में आपको परोपकार की कोई कहानी बतानी है।
- उस परोपकार संबंधी कार्य का चित्र भी दिखाना होगा।
- परोपकार के पश्चात् आपको कैसा अनुभव हुआ यह भी बताना है।

प्रक्रिया :

- बच्चो, आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्ति में खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप सभी मेरे पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर पंक्ति में बैठ जाइएगा।
- अब कौन-सा बच्चा सर्वप्रथम अपनी कहानी सुनाना चाहता है? मंच पर आए। (कौशल हाथ उठाता है। शिक्षिका की आज्ञा मिलते ही मंच पर आकर अपनी कहानी सुनाता है।)
- कौशल आपने जिस बुजुर्ग की सेवा की, उसने आपको दिल से आशीर्वाद दिया होगा। शाबाश कौशल! आपने अतिसुंदर एवं मर्मस्पर्शी कहानी बताई है।

  नोट : इसी प्रकार सभी बच्चे अपनी-अपनी कहानी सुनाते हैं। सबकी कहानी एक से बढ़कर एक थी। जिन बच्चों का एक कालांश में नहीं हुआ, वे दूसरे कालांश में अपनी कहानी सुनाएँ।

सीखने के परिणाम :

स्वयं के इस गतिविधि द्वारा बच्चों में इंसानियत की भावना जाग्रत हो सकेगी।

नाम ______________ कक्षा ______________ दिनांक ______________

10. मज़दूरी और प्रेम

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. पाठ के आधार पर नीचे लिखे वाक्यों को सही विकल्प से पूर्ण कीजिए-

(क) हल चलाने वाले प्रायः स्वभाव से ______________ होते हैं।

(अ) कृषक (ब) साधु (स) हलवाहे

(ख) खेत उनकी ______________ है।

(अ) हवनशाला (ब) जमीन (स) जायदाद

(ग) सच्चा आनंद तो मुझे ______________ से मिलता है।

(अ) मेरे काम (ब) मेरे घर (स) मेरे दोस्त

2. निम्नलिखित वाक्यों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) 'प्राकृतिक' शब्द में मूलशब्द और उपसर्ग हैं-

(अ) प्राकृ + तिक ☐ (ब) प्रा + कृतिक ☐ (स) प्रकृति + इक ☐

(ख) 'संध्या-वंदन' में समास है-

(अ) द्विगु समास ☐ (ब) द्वंद्व समास ☐ (स) तत्पुरुष समास ☐

(ग) 'पुष्पोद्यान' का विच्छेद होगा-

(अ) पुष्पो + द्यान ☐ (ब) पुष्पोद्य + आन ☐ (स) पुष्प + उद्यान ☐

(घ) 'डालियाँ शब्द बहुवचन है-

(अ) डलिया का ☐ (ब) डाली का ☐ (स) डालने का ☐

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(क) तृप्त ______________ (ख) मौन ______________

(ग) मृदु ______________ (घ) पवित्र ______________

4. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर भेद बताइए-

(क) स्वाति, तुम कहाँ जा रही हो? ______________

(ख) एक गिलास पानी लाओ। ______________

(ग) ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे। ______________

(घ) वाह! कितना सुंदर, दृश्य है। ______________

5. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण शब्द छाँटिए

(क) गेहूँ के लाल-लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियों की डालियाँ सी हैं। ______________

(ख) खेती उसके ईश्वरी प्रेम का केंद्र है। ______________

(ग) सच्चा आनंद तो मुझे मेरे काम से मिलता है। ______________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन में अंतर तर्क-वितर्क द्वारा"

उद्देश्य : बच्चों को ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के बीच के अंतर को समझाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण एवं वाचन कौशल के विकास के साथ ही उनमें मनुष्यों के प्रति सम्मान एवं सहयोग की भावना होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आप सभी को ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के बीच के अंतर को स्पष्ट करना होगा और यह भी बताना होगा कौन-सा जीवन व्यक्ति के लिए लाभदायक है।

निर्देश :

- बच्चो! आप सभी को मैं 6 समूहों में विभाजित कर रही हूँ। आप सभी समूह के मुखिया के निर्देशानुसार कार्य संपन्न कीजिएगा।
- इस गतिविधि में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी अति आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे को अपनी राय बतानी होगी।
- दो समूहों के बच्चे पक्ष में और दो समूह के बच्चे विपक्ष में अपनी राय देंगे। जैसे राम और श्याम समूह के बच्चे पक्ष मे कृष्ण और राधा समूह के बच्चे विपक्ष में अपनी राय प्रस्तुत करेंगे।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी अपने समूह में बैठ जाइए और आपस में विचार-विमर्श कर लीजिए। 5 मिनट के बाद पक्ष और विपक्ष के बच्चों को मेरे समक्ष आकर शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन के अंतर को स्पष्ट करना होगा।
- राम और राधा समूह के बच्चे मेरे समक्ष आकर आमने-सामने खड़े हो जाइए और अपनी-अपनी राय पर तर्क-वितर्क शुरू कीजिए (दोनों पक्षों की बातों को सुनकर के शिक्षिका प्रसन्न होती हैं। कहीं-कहीं बीच में वह अपनी राय भी बताती हैं और बच्चों से प्रश्न भी पूछती हैं। कक्षा में बैठे अन्य दो समूहों के बच्चे भी इन बच्चों से प्रश्न पूछते हैं जिसका उत्तर राम और राधा समूह के बच्चे बड़ी सरलता से देते हैं। कक्षा के अन्य बच्चे इनके उत्तर को सुनकर अति प्रसन्न होते हैं और तालियाँ बजाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आपकी प्रस्तुति अति प्रशंसनीय है। आप लोगों ने अभी अत्यधिक परिश्रम किया जिसका साक्षात् उदाहरण हम लोग देख चुके हैं। बहुत अच्छा बच्चो! अब आप लोग अपने स्थान पर जाकर बैठ जाइए। दूसरे समूह के बच्चे मेरे समक्ष आएँ और अपनी-अपनी राय प्रस्तुत करें। दूसरे समूह के बच्चे शिक्षिका की आज्ञा अनुसार सामने आकर अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। शिक्षिका उनके विचारों से भी प्रसन्न होकर उनके लिए तालियाँ बजाती हैं।

नोट : इसी प्रकार अन्य समूह के बच्चे भी शिक्षिका के समक्ष आकर अपनी राय प्रस्तुत करते हैं। उसकी राय सुनकर सभी बच्चे प्रसन्नचित होकर तालियाँ बजाकर उनका स्वागत करते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के अंतर को समझ सकेंगे। अब उनके अंदर मनुष्य के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न हो सकेगी। वे दोनों के परिश्रम के महत्व को समझ सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ______________ दिनांक ______________

11. एक कुत्ता एक मैना

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए-

(क) अस्ताचल - ______________ (ख) स्नेहदाता - ______________

(ग) निहारना - ______________ (घ) चिता भस्म - ______________

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) श्री निकेतन में कितनी मंज़िलें बनी थीं?

____

(ख) गुरुदेव लेखक को क्या कहकर संबोधित किया करते थे?

____

(ग) गुरुदेव का पालतू कुत्ता उनके पास पहुँचकर क्या करने लगा?

____

3. जो उत्तर सही हो, उसके सामने सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) इसमें से स्त्रीलिंग शब्द है-

(i) नृत्य ☐ (ii) स्नेह ☐

(iii) दर्शन ☐ (iv) छेड़-छाड़ ☐

(ख) इनमें संज्ञा शब्द है-

(i) दूर ☐ (ii) दूरी ☐

(iii) दूरस्थ ☐ (iv) सुदूर ☐

4. इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(क) स्पष्ट × ______________ (ख) सहज × ______________

(ग) सद्बुद्धि × ______________ (घ) उपयोग × ______________

5. निर्देशानुसार शब्द चुनिए-

(क) वह चुपचाप अंतिम विदा देने आया। (विशेषण)

(ख) गुरुदेव ने बच्चों से ज़रा सी छेड़-छाड़ की। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

(ग) हमलोग कुत्ते के आनंद को देखने लगे। (भाववाचक संज्ञा)

(घ) आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। (क्रिया-विशेषण)

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "स्वरचित कविता पाठ"

उद्देश्य : बच्चे स्वयं से कविता की संरचना कर सकेंगे।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एव अभिव्यक्ति के कौशल के साथ-साथ सोचने की क्षमता का भी विकास हो सकेगा। बच्चों में स्वसम्मान, आत्मनियंत्रण जैसे मूल्यों का विकास देखा जा सकता है।

समय : एक कालांश

प्रणाली : व्यक्तिगत

आवश्यक सामग्री : रफ़ कॉपी का साफ़ पृष्ठ या A-4 sheet, कलम, माइक-1

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! कल की गतिविधि में आपको स्वयं से कविता की रचना करनी है। रचना (अपनी) रफ़ कॉपी या A-4 sheet पर लिख सकते हैं।

निर्देश :

- बच्चो! कल की गतिविधि में किसी भी विषय से संबंधित कविता की रचना करनी होगी।
- कविता A4 sheet या रफ़ कॉपी के साफ़ पृष्ठ में भी कर सकते हैं।
- रचना की Sheet जमा कर ली जाएगी और जिसकी सबसे अच्छी होगी, उसे सभागार में लगा दिया जाएगा।
- रचना को मंच पर आकर सुनाना भी होगा।

प्रक्रिया :

- आज की गतिविधि हेतु अपनी ज़रूरत की वस्तुएँ लेकर पंक्ति में खड़े हो जाइए।
  (सभी बच्चे शिक्षिका के निर्देशानुसार पंक्ति में खड़े हो गए।)
- अब मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए और वहाँ पहुँचकर शांतिपूर्वक बैठ जाइएगा।
  (सभागार में सभी बच्चे शांतिपूर्वक बैठ जाते हैं।)
- अब कविता की रचना शुरू कीजिए। जिस बच्चे का रचना कार्य पूरा हो जाएगा, वे मंच पर आकर अपनी कविता सुना देंगे। (सभी बच्चे अपनी सहमति देते हैं) (निखिल हाथ उठाता है)
- शाबाश! निखिल, आपकी कविता पूर्ण हो गई तो आकर सुनाइए। (निखिल कविता सुनाता है। उसकी कविता हास्यप्रद होती है इसलिए उपस्थित बच्चे हँसते-हंसते लोट-पोट हो जाते हैं।)

  नोट : इसी तरह सभी बच्चे अपनी कविता का वाचन करते हैं। किसी की कविता देशप्रेम की तो किसी की चिड़ियों, फूलों, जानवरों से संबंधित होती हैं। अच्छी कविताओं की Sheet लेकर सभागार में लगा दिया जाता है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न होगा। वे आत्मनिर्भर होकर कार्य कर सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा __________ दिनांक ______________

12. साहसी पुत्र

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

शब्द		अर्थ	वाक्य प्रयोग
(क) सहसा	-	______________	______________________
			______________________
(ख) परिश्रम	-	______________	______________________
			______________________

2. निम्नलिखित वाक्यों को उनके सही विकल्पों से पूरा कीजिए-

(क) जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी ______________ करते हैं।
(अ) सहायता (ब) रक्षा (स) मदद

(ख) भैया बहुत ______________ हैं, हर काम में आगे रहते हैं।
(अ) बुरे (ब) बड़े (स) अच्छे

(ग) चिंता न कीजिए कोई ______________ बात नहीं है।
(अ) बड़ी (ब) बुरी (स) विशेष

3. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों के लिए उचित विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) <u>दोनों</u> भाइयों में से कोई नहीं आया-
(अ) संज्ञा ☐ (ब) विशेषण ☐ (स) क्रिया-विशेषण ☐

(ख) माँ बड़े <u>जोर से</u> तूफान आया है।
(अ) विशेषण ☐ (ब) संबंधबोधक ☐ (स) क्रिया विशेषण ☐

(ग) दूसरे लोगों ने उन्हें <u>बचा लिया</u>।
(अ) क्रिया ☐ (ब) क्रिया विशेषण ☐ (स) सर्वनाम ☐

4. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए-

(क) सूत्र - ______________ (ख) लक्ष - ______________
(ग) कर्ण - ______________ (घ) अग्र - ______________
(ङ) मस्तक - ______________ (च) वार्ता - ______________

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(क) कठिन × ______________ (ख) बहादुर × ______________
(ग) स्मरण × ______________ (घ) परिश्रमी × ______________
(ङ) नुकसान × ______________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "बाढ़ के समय आपका योगदान"

उद्देश्य : बच्चों को बाढ़ के समय लोगों की मदद करने के लिए स्वयं तत्पर करना और एनजीओ के द्वारा भी उनकी मदद करवाना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन एवं श्रवण कौशल जैसे मूल्यों के विकास के साथ ही उनके अंदर मानव प्रेम एवं उनके प्रति सम्मान, सहयोग व दया जैसे मूल्यों का विकास करना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-4, स्पीकर-1 ।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आप सभी को सामूहिक रूप से बताना होगा कि बाढ़ की स्थिति के समय आप उन लोगों की मदद किस प्रकार कर सकेंगे।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आपको सामूहिक रूप में विभाजित कर दूँगी। आप सभी अपने-अपने समूह में विचार-विमर्श कीजिएगा कि किस तरह बाढ़ में फँसे लोगों की आप मदद कर सकते हैं।
- सभी समूहों को अपने सहयोगियों के साथ मेरे समक्ष आकर उनकी मदद के तरीकों को बताना होगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि के लिए आप सभी अपने समूह में बैठ जाइए और विचार-विमर्श कर हाथ उठाइए कि कौन सबसे पहले मेरे समक्ष आकर अपनी राय प्रस्तुत करना चाहता है। हर समूह को सिर्फ 5 मिनट का समय दिया जाएगा। जिसका पहले कालांश में पूर्ण नहीं हो पाएगा, उसे अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए दूसरे कालांश में समय दिया जा सकता है। (5 मिनट के बाद सुरक्षा समूह के बच्चे हाथ खड़ा करते हैं और शिक्षिका की आज्ञा मिलने पर वह सामने आकर अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। उस समूह का प्रत्येक बच्चा कुछ-ना-कुछ बोलता है। कुछ बच्चे अपना सुझाव भी देते हैं जो सराहनीय होता है। बच्चे बड़े ही उत्सुक दिखते हैं, उनके अंदर मदद की भावना साफ़ दिखाई दे रही होती है। शिक्षिका उनके द्वारा प्रस्तुत विचार को सुनकर प्रसन्न होती हैं और इस समूह के बच्चों की प्रशंसा करती हैं।)
- शाबाश बच्चो! आप लोगों के विचार बड़े ही सराहनीय है। आप लोगों ने सोच-समझकर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। आपके विचारों से मैं अति प्रसन्न हूँ कि बाढ़ की स्थिति के समय आप लोग चुप नहीं बैठेंगे। उनकी मदद के लिए हाथ में हाथ मिलाकर जरूर आगे बढ़ेंगे। बाढ़ के पश्चात् होने वाली बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए भी आपका पूर्ण सहयोग समझ में आया है। शाबाश बच्चो! आपसे यही उम्मीद थी।

  नोट : किसी तरह अन्य समूह के बच्चे भी अपने समूह के द्वारा अपनी राय प्रस्तुत करने शिक्षिका के समक्ष आते हैं। उनकी राय को सुनकर भी शिक्षिका एवं अन्य बच्चे प्रसन्न होकर तालियाँ बजाते हैं। उनकी राय की भी सराहना की जाती है। शिक्षिका सभी बच्चों को शाबाशी देती हैं और सबके लिए ताली बजाते हैं। सबके कार्य की सराहना भी करती हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों में मानव के प्रति दया एवं प्रेम की भावना का विकास हो सकेगा। वह मानव की सुरक्षा एवं उसकी सहायता के लिए हाथ में हाथ मिला कर आगे बढ़ सकेंगे।

नाम ________________ कक्षा ________ दिनांक ________

13. घीसा

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए-**

(क) प्रातःकाल के समय घूमना चाहिए।

____

(ख) दाल में कौन गिर गया है?

____

2. **निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह करके समास का नाम लिखिए-**

	समस्त पद	समास विग्रह	समास का नाम
(क)	अकारण	________	________
(ख)	त्रिलोचन	________	________
(ग)	नीलकमल	________	________

3. **निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए सही विकल्प चुनिए-**

(क) ग्वालों के बालक गाय-भैसों को बहकते देखकर ________ लेकर दौड़ते हैं।

(अ) लाठी (ब) लवुरी (स) डंडा

(ख) महादेवी जी के विद्यार्थी ________ की घनी छाया में उनके साथ बैठते।

(अ) पीपल (ब) बरगद (स) आम

(ग) घीसा दो सप्ताह से ________ में पड़ा था।

(अ) ज्वर (ब) अंधकार (स) कोठरी

4. **निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए-**

(क) जया अपनी सखियों के साथ मेला देखने गई। (संकेतवाचक)

____

(ख) राधा ने भोजन नहीं किया है। (प्रश्नवाचक)

____

(ग) वह कक्षा में प्रथम आया है। (विस्मयादिबोधक)

____

5. **निम्नलिखित वर्ण-विच्छेद से बनने वाले सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-**

(क) द् + ओ + ह् + अ + र् + आ + त् + आ

(अ) दओरहाता ☐ (ब) दोहराता ☐ (स) द्ओर्आताआ ☐

(ख) ड् + अ + ग् + अ + म् + अ + ग् + आ + त् + ए

(अ) डगमगाते ☐ (ब) डगामगाते ☐ (स) डागा मगाते ☐

(ग) न् + अ + ह् + आ + क् + अ + र् + अ

(अ) नाहकर ☐ (ब) नाहाकर ☐ (स) नहाकर ☐

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "चित्र आधारित काल्पनिक कहानी का वर्णन"

उद्देश्य : चित्र देखकर स्वयं से काल्पनिक कहानी की रचना करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, श्रवण, वाचन कौशल का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1, पृष्ठ एवं कलम।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी :

- बच्चो! आपको चित्र देखकर कहानी की रचना करनी है।
- कहानी का शीर्षक बताकर उससे संबंधित स्वयं से प्रेरणादायक कहानी की रचना करेंगे।

निर्देश :

- बच्चो! कक्षा में आपको एक चित्र दिखाया जाएगा जिसे देखकर आपको स्वयं से कहानी की रचना करनी है।
- प्रत्येक बच्चे को अपनी काल्पनिक कहानी का वर्णन मेरे समक्ष आकर करना होगा। प्रत्येक बच्चे की उपस्थिति एवं काल्पनिक कहानी का वर्णन अनिवार्य है।
- जिस बच्चे की कहानी सराहनीय होगी या अन्य बच्चों से बेहतर होगी, उस बच्चे की कहानी को कक्षा के बोर्ड पर लगा दिया जाएगा एवं उसे स्टीकर भी दिया जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आपको श्यामपट्ट पर एक चित्र दिखाया जाएगा। आप उस चित्र को देखकर स्वयं से कहानी रचना कीजिए। कोई भी बच्चा अपनी सीट से उठकर यहाँ-वहाँ नहीं जाएगा।
- जिस बच्चे की कहानी सबसे पहले पूर्ण होगी, वह उठकर मेरे पास आएगा और अपनी कहानी सुनाएगा।
- बच्चो! अब अपना कार्य शुरू कीजिए। (सभी बच्चे चित्र देखकर स्वयं से कहानी रचना के विषय में सोचने लगते हैं और कल्पना के आधार पर सुंदर-सुंदर कहानी की रचना करने लगते हैं। शिक्षिका बच्चों के पास जाकर उनकी रचना को देखकर उनसे कहानी से संबंधित प्रश्न भी पूछती हैं। बच्चे सोच-समझकर प्रश्न का जवाब देते हैं। जिसे सुनकर शिक्षिका अतिप्रसन्न होती हैं। मनीष नाम का बच्चा हाथ खड़ा करता है। शिक्षिका उसे सामने आकर कहानी सुनाने के लिए कहती हैं।)
- शाबाश मनीष! अपनी कहानी सुनाइए। मनीष कहानी 'संता' सुनाता है। मनीष की कहानी सुनकर सारे बच्चे आश्चर्यचकित हो जाते हैं क्योंकि उसकी काल्पनिक कहानी बड़ी ही रोचक थी।
  (शिक्षिका उस बच्चे को अपनी काल्पनिक कहानी कागज़ पर लिखने के लिए कहती हैं कुछ समय बाद वह बच्चा अपनी कहानी को कागज़ पर लिखकर शिक्षिका को दिखाता है। शिक्षिका उस कहानी पर स्टीकर लगाती हैं और उसे कक्षा में सॉफ्ट बोर्ड में टाँग देती हैं। मनीष अपनी कहानी को सॉफ्टबोर्ड में टँगा देखकर और उसमें लगे स्टिकर को देखकर बहुत प्रसन्न होता है। सारे बच्चे उसके लिए ताली बजाते हैं।)

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे चित्र देखकर कल्पना के आधार पर रोचक एवं स्वयं की कहानी लिखने में सक्षम हो सकेंगे। उनके अंदर लेखन कला का विकास हो सकेगा। वे धीरे-धीरे नए-नए शब्दों को समझकर उससे वाक्य भी बनाना सीख सकेंगे।

नाम ____________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

15. नीतिवचन

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित अवधी भाषा में शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखिए-

	अवधी भाषा	खड़ी भाषा		अवधी भाषा	खड़ी भाषा
(क)	उपजत	________	(ख)	अधारा	________
(ग)	इह	________	(घ)	चालिए	________
(ङ)	तीनि	________	(च)	बिबरन	________

2. नीचे लिखे शब्दों के सही विकल्प चुनिए-

(क) 'चरन' का अर्थ ________ है।
(अ) चरना (ब) चढ़ना (स) पैर

(ख) 'दैव-दैव' पुकारता है- ________
(अ) भक्त (ब) आलसी (स) कायर

(ग) लोचन का पर्यायवाची ________ नहीं है-
(अ) नेत्र (ब) आँख (स) लचीला

(घ) 'तन' का अर्थ है- ________
(अ) तनना (ब) तना (स) शरीर

3. निम्नलिखित वाक्यों में सही कथन पर सही (✓) तथा गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

(क) परोपकार के समान कोई दूसरा धर्म नहीं होता। ☐
(ख) मीठे वचनों से कोई वश में नहीं होता। ☐
(ग) आलसी व्यक्ति भगवान को ही याद करता है। ☐
(घ) कृषि सूखने के बाद भी यदि वर्षा हो जाए तो फसल को नुकसान नहीं होता। ☐

4. नीचे लिखे सही वाक्यों पर सही (✓) तथा गलत वाक्यों पर गलत (✗) का चिह्न अंकित कीजिए-

वाक्य	सही	गलत
(क) सबसे मिलजुलकर रहना चाहिए।	☐	☐
(ख) आलसी व्यक्ति का काम स्वयं हो जाता है।	☐	☐
(ग) जो सबका भला चाहता है सज्जन उसी की प्रशंसा करते हैं।	☐	☐
(घ) परोपकार सबसे बड़ा पाप है।	☐	☐

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए-

(अ) लोचन - ________ (ब) क्षीर - ________
(स) मराली - ________ (द) बक - ________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "तुलसीदास की दोहा, चौपाई का सस्वर वाचन"

उद्देश्य : बच्चे सुप्रसिद्ध ग्रंथ रामचरित मानस के दोहे एवं चौपाई का स्पष्ट रूप में वाचन कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के साथ सीता माता के गुणों से परिचित होना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन, श्रवण कौशल के विकास के साथ उनमें मर्यादा, मान-सम्मान जैसे मूल्यों का विकास भी करना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आप सभी को रामायण की कोई भी चौपाई या दोहा कंठस्थ कर लयात्मक ढंग में प्रस्तुत करना होगा।

निर्देश :

- बच्चो! आपको रामचरित मानस में से एक दोहा या चौपाई कंठस्थ कर प्रस्तुत करना होगा।
- सभी बच्चों की प्रस्तुति आवश्यक है।
- आप पात्र के अनुरूप पोशाक भी धारण कर सकते हैं। यह आपकी अपनी मर्ज़ी है। आप घर से तैयार होकर आएँगे।
- सभी बच्चे अलग-अलग दोहा या चौपाई प्रस्तुत करेंगे।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्तिबद्ध तरीके से खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में शांतिपूर्वक खड़े हो जाते हैं।)
- प्रार्थना सभा प्रांगण में पंक्ति से बैठे जाइएगा। अब आप मेरे पीछे प्रार्थना सभा प्रांगण तक चलिए। (सभी बच्चे शिक्षिका/शिक्षक के प्रार्थना सभा प्रांगण तक जाकर पंक्ति में बैठ जाते हैं।)
- अब आप सभी में सर्वप्रथम कौन आकर वाचन करना चाहेगा। (तुलसीदास बने सौरभ ने हाथ उठाया और आज्ञा मिलने पर तुलसीदास जी के जीवन एवं कृतित्व का संक्षिप्त वर्णन दिया।)
- शाबाश सौरभ! अति सुंदर प्रदर्शन रहा। अब सर्वप्रथम राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न मंच पर आकर दोहा या चौपाई का वाचन करें। (चारों बच्चे आकर अपने स्वभाव के अनुकूल दोहा सुनाते हैं। दोहा रामायण के लय में होने के कारण मर्मस्पर्शी होता है।)

  शाबाश बच्चो! अब आप में से कौन-सा बच्चा मंच पर आना चाहेगा। (दशरथ, कौशल्या, कैकई और सुमित्रा का अनुसरण करने वाले बच्चे मंच पर आकर कविता वाचन करें।)

  नोट : इसी तरह सभी बच्चों ने अपने-अपने पात्र के स्वभाव के अनुरूप दोहे का वाचन कर वहाँ उपस्थिति जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सीखने के परिणाम :

स्वयं के द्वारा किए गए इस गतिविधि से बच्चों में अपनो के प्रति प्रेम, मर्यादा, सम्मान जैसे भाव उत्पन्न हो सकेंगे। वे जनता एवं उनके अधिकार को भी समान अधिकार दे सकेंगे।

नाम ______________ कक्षा ______________ दिनांक ______________

16. हिम्मत और ज़िंदगी

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने सही (✓) और गलत के सामने गलत (✗) का चिह्न अंकित कीजिए-
   (क) साहस की जिंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी नहीं होती है। ☐
   (ख) कामना का दामन छोटा मत करो। ☐
   (ग) महाभारत में जीत पांडवों की हुई। ☐
   (घ) लहरों में तैरने का अभ्यास जिन्हें नहीं है, वे ही मोती लेकर बाहर आएँगे। ☐

2. नीचे लिखे वाक्यों को पूर्ण करने के लिए सही विकल्प चुनिए-
   (क) दुनिया में जितने भी ______________ बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है।
   (अ) मज़े (ब) फूल (स) सुख
   (ख) महाभारत में 'देश के अधिकांश वीर ______________ के पक्ष में थे।
   (अ) कृष्ण (ब) पाण्डवों (स) कौरवों

3. निम्नलिखित शब्दों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-
   (क) 'मद्धिम' शब्द का अर्थ है-
   (अ) मंदाध ☐ (ब) मद से युक्त ☐ (स) धीरे ☐
   (ख) निर्झरी का समानार्थी है-
   (अ) रसभरी ☐ (ब) झरना ☐ (स) झटका ☐
   (ग) 'सिफ़त' शब्द भाषा का है-
   (अ) पंजाबी ☐ (ब) मराठी ☐ (स) उर्दू ☐

4. निम्नलिखित वाक्यों को उचित सर्वनाम शब्द भरकर पूरा कीजिए-
   (क) बाहर जाने को ______________ मन नहीं कर रहा है।
   (ख) तुम्हें अपना काम ______________ करना चाहिए।
   (ग) ______________ लाठी ______________ भैंस
   (घ) कल तुम्हारे घर ______________ आया था?

5. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए-

समस्त पद	समास विग्रह	समास का नाम
(क) वनवास	______________	______________
(ख) सुख-दुख	______________	______________
(ग) कमलनयन	______________	______________
(घ) हस्तलिखित	______________	______________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "संवाद (पिता-पुत्र, चॉक-डस्टर, सब्ज़ीवाला-ग्राहक, चिड़ा-चिड़िया, पुत्र-पुत्री, सूर्य और मनुष्य, पिज़्ज़ा-बर्गर इत्यादि के बीच)"

उद्‌देश्य : बच्चों द्‌वारा संवाद के माध्यम से शुद्‌ध शब्दों का उच्चारण एवं नए शब्दों का प्रयोग करना। मन के भाव को समझना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन, कौशल के साथ दूसरों के प्रति प्रेम एवं समझदारी जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-4, स्पीकर-1, चटाई-2।

शिक्षिका/शिक्षक के दूवारा की गई पूर्व तैयारी : कल की कक्षा में सभी बच्चों की उपस्थिति अनिवार्य है।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आपको सात समूहों में विभाजित कर दे रही हूँ। प्रत्येक समूह को मैं एक नाम भी दे रही हूँ। जैसे- 1. पिता-पुत्र-संवाद समूह, 2. चॉक-डस्टर-संवाद समूह, 3. सब्जीवाला-ग्राहक-संवाद समूह, 4. चिड़ा-चिड़िया-संवाद समूह, 5. पुत्र-पुत्री-संवाद समूह, 6. सूर्य-मनुष्य-संवाद समूह, 7. पिज्जा-बर्गर-संवाद समूह।
- सभी समूह के बच्चे आधे-आधे में बँटकर संवाद करेंगे। संवाद के समय आप उसी चरित्र को पूर्णरूपेण निभाने का प्रयास कीजिएगा।
- आप अपनी इच्छानुसार पात्रों के अनुरूप पोशाक भी धारण कर सकते हैं किंतु इसकी ज़िम्मेदारी, आपकी (स्वयं की) होगी। सारी तैयारी घर से करके आइएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि के अनुसार आप सभी पंक्ति में शांतिपूर्वक खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब मेरे पीछे-पीछे पार्क तक चलिए और वहाँ समूह में बैठ जाइए। (सभी बच्चे शिक्षिका की आज्ञा का पालन करते हैं।)
- सर्वप्रथम चिड़ा और चिड़िया संवाद हेतु सभी बच्चे सामने आइए। (चिड़ा और चिड़िया के पोशाक में बच्चे बड़े ही सुंदर दिख रहे थे। उन्होंने छोटे-छोटे पंख और प्यारी सी चोंच भी बना ली थी। सामने आकर के आपस में चींची करके बातें करने लगें। वह दृश्य बड़ा ही मनमोहक था। संवाद समाप्त होने पर वे बच्चे चटाई पर बैठने चले गए।)
- बच्चो, चिड़ा-चिड़िया का संवाद बहुत ही मनभावना था। शाबाश बच्चो! आप सभी ने पोशाक पहन कर साक्षात् चिड़ा-चिड़िया का संवाद प्रस्तुत कर दिया। बहुत आनंद आया।
- अब कौन-सा समूह .... है। (पिज्जा-बर्गर समूह ने बच्चे सामने आए और उन्होंने भी अपने संवाद से अन्य बच्चों को हँसने पर मजबूर कर दिया।)
- शाबाश पिज्जा-बर्गर समूह! आज मज़ा आ गया। आप सभी का संवाद बड़ा ही मज़ेदार था।

  नोट : इसी प्रकार सभी समूह के बच्चों अपने-अपने संवाद को बोलकर लोगों का मनोरंजन किया।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्‌वारा बच्चे नए-नए और शुद्‌ध वाक्यों का स्वेच्छा से प्रयोग कर सकेंगे। इस तरह हिंदी एवं हिंदी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न हो सकेगा।

नाम ______________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

17. फुटबाल का मैच

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित वाक्यों में से जातिवाचक संज्ञा शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) फुटबॉल इंग्लैंड का सबसे प्रिय खेल है।
(अ) फुटबॉल ☐ (ब) इंग्लैंड ☐ (स) खेल ☐

(ख) इंग्लैंड के लोग हॉकी, टेनिस और क्रिकेट के भी प्रेमी हैं।
(अ) लोग ☐ (ब) हॉकी ☐ (स) टेनिस ☐

2. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए सही विकल्प चुनिए-

(क) फुटबॉल की प्रत्येक टीम में ____________ खिलाड़ी होते हैं।
(अ) 11 (ब) 15 (स) 13

(ख) हॉकी में हमारे देश के ____________ का नाम विश्वविख्यात है।
(अ) ध्यानचंद (ब) मैरी कॉम (स) कपिल देव

(ग) फुटबॉल के खिलाड़ी को ____________ से खेलने में कुशल होना चाहिए।
(अ) दाहिने पैर (ब) बायें पैर (स) दोनों पैरों से

3. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनका भेद पहचानकर लिखिए-

(क) यह मैं नहीं जानता। सर्वनाम का भेद - ____________
(ख) वे आमने-सामने उठ गए। सर्वनाम का भेद - ____________
(ग) आप अपना काम स्वयं कीजिए। सर्वनाम का भेद - ____________
(घ) मुझे बाजार जाना है। सर्वनाम का भेद - ____________

4. निम्नलिखित शब्दों के सही अर्थ पर (घेरा) लगाइए-

(क) आकार - (अ) भंडार (ब) शक्ल
(ख) क्रम - (अ) कार्य (ब) सिलसिला
(ग) दीन - (अ) दिवस (ब) गरीब
(घ) शोक - (अ) रुचि (ब) दुख

5. निम्नलिखित वाक्यों के काल निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए-

(क) विभा ने गाना गाया। (भविष्यकाल)
____

(ख) लड़कियाँ नृत्य कर रही थीं। (वर्तमानकाल)
____

(ग) क्या तुम दिल्ली जाओगे? (भूतकाल)
____

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "कमेंट्री"

उद्देश्य : बच्चों को नाट्य मंचन द्वारा पात्रों के भावों को समझकर व्यक्त करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण, वाचन, कौशल के साथ दूसरों के प्रति प्रेम एवं समझदारी जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-5 (बच्चों के अनुसार), स्पीकर-1।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आप सभी कमेंट्री सुनिए और वाचन विधि का अभ्यास कीजिए।

निर्देश :

- बच्चो! आपको फुटबॉल मैच, क्रिकेट मैच या आप अपनी इच्छानुसार किसी भी मैच की कमेंट्री करनी है।
- समूह के प्रत्येक बच्चे के सहयोग से कमेंट्री होगी।
- वाचन विधि का अभ्यास आप अपने खाली समय में करेंगे।
- प्रत्येक समूह को सिर्फ़ 3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- समूह का विभाजन मैं कर दे रही हूँ। (शिक्षिका समूह का विभाजन करेंगी)

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्तिबद्ध तरीके से मेरे पीछे सभागार तक चलिए। वहाँ पहुँचकर समूह में बैठ जाइएगा। (सभी बच्चे शिक्षिका की आज्ञा का पालन करते हैं।)
- अब समूह 'क' के बच्चे मंच पर आइए और कमेंट्री शुरू कीजिए। (समूह 'क' के बच्चे मंच पर आकर क्रिकेट मैच की कमेंट्री करते हैं। सभी बच्चे उस समूह के बच्चों के वाचन कौशल को देखकर और सुनकर दंग रह जाते हैं।)
- शाबाश बच्चो! आप सभी ने क्रिकेट की कमेंट्री अतिसुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। आपकी एकता, समझदारी, वाचन कौशल एवं सहयोग को देखकर मैं अति प्रसन्न हूँ। बेटा, अगर आप सभी इसी तरह से एक होकर समझदारी से कार्य करेंगे तो कोई भी कार्य असंभव नहीं होगा।

  नोट : इसी तरह किसी ने लूडो की कमेंट्री, किसी ने चेस, तो कोई फुटबॉल की कमेंट्री प्रस्तुत करता है। प्रत्येक समूह के सदस्यों ने अपना पूर्ण सहयोग कर कमेंट्री किया।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों में आत्मनिर्भरता के साथ वाचन कौशल का भी विकास हो सकेगा। वे शुद्ध एवं नए शब्दों का प्रयोग कर सकेंगे।

नाम ________________ कक्षा ________ दिनांक ________

18. कथक सम्राट बिरजू महाराज

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए-

(क) घराने - ________ (ख) प्रतिमा - ________

(ग) शामिल - ________ (घ) बचपन - ________

(ङ) उम्र - ________ (च) नाता - ________

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) बिरजू महाराज का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

____

(ख) बिरजू महाराज का नाम पहले क्या रखा गया था?

____

(ग) बिरजू महाराज के पिता कौन थे और उनका संबंध किस घराने से था?

____

3. दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) यशस्वी - ________________

(ख) परिवार - ________________

(ग) खिलाड़ी - ________________

(घ) भारतीय - ________________

4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(क) प्रसिद्ध × ________ (ख) जन्म × ________

(ग) देश × ________ (घ) प्रशंसक × ________

(ङ) आरंभ × ________ (च) धार्मिक × ________

5. दिए गए शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए-

(क) भारतीय - ________________

(ख) पुरस्कार - ________________

(ग) संयोजन - ________________

(घ) आनंद - ________________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "कथक सम्राट के जीवनकाल का वर्णन चित्र एवं वाचन कौशल द्वारा"

उद्देश्य : बच्चे कथक सम्राट बिरजू महाराज के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

कौशल एवं मूल्यों का विकास :

1. बच्चों में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं अभिव्यक्ति के कौशल का विकास हो सकेगा।
2. बच्चों में व्यक्ति की गरिमा, ज्ञान का विकास, आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों का विकास होगा।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

स्थान : सभागार

आवश्यक सामग्री : माइक, स्पीकर, चार्ट पेपर, छोटी (कैंची), फेविकोल, बिरजू महाराज का चित्र आदि।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! कथक सम्राट बिरजू महाराज के पठन-पाठन से पूर्व आपको उनके विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी होगी। बिरजू महाराज के विषय में जानकारी Internet या पुस्तकों की मदद से प्राप्त कर सकते हैं।

निर्देश :

1. बच्चो! बिरजू महाराज को कथक महाराज भी कहा जाता है। इसलिए आप उनका चित्र एवं उनके जीवन की पूर्ण जानकारी प्राप्त कीजिएगा।
2. चार्ट पेपर पर कथक सम्राट के चित्र आपको लगाने होंगे। उनके जीवन की घटनाओं को समूह के विभिन्न बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। मैं सभी बच्चों को चार समूहों में विभाजित कर दे रही हूँ।

प्रक्रिया :

1. शिक्षिका- बच्चो! आज की गतिविधि में 'बिरजू महाराज' के विषय में जानने हेतु सभागार में चलिए। आप अपनी ज़रूरत की वस्तुएँ लेकर पंक्ति में शांतिपूर्वक खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
2. अब सभी बच्चे मेरे पीछे-पीछे सभागार तक चलिए और वहाँ पहुँचकर अपने समूह में बैठ जाइए।
3. अब आप लोग अपना कार्य शुरू कीजिए। जिनका कार्य पूर्ण हो जाएगा, वे मंच पर आकर अपने सहयोगियों के साथ कथक सम्राट बिरजू महाराज के विषय में बताना शुरू करेंगे। (सभी बच्चे 'हाँ' में सिर हिलाते हैं।)
4. वाह! टैगोर समूह के बच्चों ने सबसे पहले अपना कार्य पूर्ण किया है। शाबाश बच्चो! आइए, चित्र दिखाइए।
5. वाह! कितना सुंदर चित्र है। आप इस चित्र को सभागार में टाँग दीजिए, और उनके विषय में बताना शुरू कीजिए।
6. शाबाश बच्चो! आप लोगों ने काफ़ी जानकारी प्राप्त की है। (शिक्षिका और सभी बच्चे ताली बजाते हैं।)

   नोट : इसी प्रकार सभी समूह के बच्चे मंच पर आकर अपनी प्रस्तुति सुंदर तरीके से देते हैं।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे कथक सम्राट बिरजू महाराज के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर गौरवांवित महसूस करेंगे। उनके कई नामों एवं कार्यों से भी वे अवगत हो सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ____________ दिनांक ____________

19. वीर बालक

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए सही विकल्प चुनिए-

(क) हम प्रभात की नई ____________ हैं।

(अ) कलियाँ (ब) तारे (स) किरण

(ख) हम नवीन भारत के ____________ हैं।

(अ) बच्चे (ब) सैनिक (स) पुष्प

(ग) हम ____________ के रखवाले हैं।

(अ) गंगा-जमुना (ब) नगर-गाँव (स) गली-मोहल्ले

2. निम्नलिखित शब्दों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) 'नवीन' शब्द की भाववाचक संज्ञा होगी-

(अ) नवीनीकरण ☐ (ब) नवीनता ☐ (स) नवीनतम ☐

(ख) 'धीर' शब्द का विपरीतार्थी है-

(अ) अधीर ☐ (ब) सुधीर ☐ (स) अतिधीर ☐

(ग) 'नवल' का समानार्थी शब्द है-

(अ) नवीन ☐ (ब) धवल ☐ (स) उज्ज्वल ☐

3. निम्नलिखित वाक्यों में 'उपसर्ग' व 'प्रत्यय' युक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए-

वाक्य	उपसर्ग	प्रत्यय
(क) दूधवाला अत्यधिक देर से आया।	____________	____________
(ख) बेईमान व्यक्ति सदैव चतुराई से काम करता है।	____________	____________
(ग) उपर्युक्त वाक्य में खिलौना शब्द संज्ञा है।	____________	____________
(घ) तुम बहुत भुलक्कड़ हो।	____________	____________

4. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) सप्ताह में एक बार होने वाला ____________

(ख) नभ में उड़ने वाला ____________

(ग) जिसकी उपमा न हो ____________

(घ) जो वीरों की जन्मदात्री हो ____________

5. अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्य किस प्रकार के हैं-

वाक्य	अर्थ के आधार पर भेद
(क) मैं आज घूमने नहीं जाऊँगा।	____________
(ख) यदि तुम कहोगे तो मैं तुम्हारे साथ चल दूँगा।	____________
(ग) शायद पिताजी को मेरी बात न समझ में आए।	____________

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता का लयात्मक गायन (जैसे- प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, रसवंती द्वंद्वगीत)"

उद्देश्य : बच्चों का 'दिनकर' जी की रचनाओं को समझकर उनकी कविताओं को लयात्मक तरीके से गायन करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक कौशल का विकास होना। उनमें व्यक्ति की गरिमा, सम्मान जैसे मूल्यों का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : सामूहिक

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो! आपको रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं का वाचन लयात्मक ढंग से करना होगा। कविताओं को कंठस्थ करके एवं कॉपी में लिखने का कार्य इंटरनेट की सहायता से शुरू कर दीजिए।

निर्देश :

- बच्चो! मैं आप सभी को रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की रचनाओं के नाम के आधार पर विभाजन कर रही हूँ। जैसे-पहला समूह- 'प्रणभंग'। आप इस रचना की कविता का वाचन करेंगे। इसी प्रकार उपर्युक्त लिखित रचनाओं के नाम पर समूहों का नाम रखा गया।
- सुमित, आप रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन परिचय बताइएगा एवं उस समय की सामाजिक परिस्थिति पर भी प्रकाश डालिएगा जिसकी वजह से इस तरह की कविता लिखने के प्रति आपका रुझान उत्पन्न हुआ। आप अपने साथ और दो बच्चों को भी ले सकते हैं।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आज की गतिविधि हेतु आप सभी पंक्ति में खड़े हो जाइए। (सभी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते हैं।)
- अब आप मेरे पीछे सभागार तक चलिए। (सभी बच्चे सभागार तक जाकर वहाँ शांतिपूर्वक बैठ जाते हैं।)
- अब सर्वप्रथम रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के रूप में विद्यार्थी अपने सहयोगियों संग मंच पर आइए और अपने विषय में कुछ खास बातों से हमें अवगत कराइए। (सुमित मंच पर आकर अपने जीवन की मुख्य घटनाओं के विषय में बताते हैं। उनके सहयोगी भी उनकी कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं।)
- अति सुंदर सुमित। अब 'प्रणभंग' की प्रस्तुति हेतु बच्चे अपने समूह संग मंच पर आइए। (सभी बच्चे अपने समूह के संग मंच पर उपस्थित हो 'प्रणभंग' की कविता का लयात्मक ढंग से वाचन करते हैं। गायन अतिसुंदर एवं मनमोहक होता है।)
- शाबाश बच्चो! अतिसुंदर, आपकी प्रस्तुति सराहनीय थी। आज हमने 'दिनकर' जी की एक रचना की कविता को सुनकर उस समय की स्थिति को भाँपा है।

  नोट : इसी तरह सभी बच्चे अपनी-अपनी प्रस्तुति देकर रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं को सुंदरता से समझा सकेंगे।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चे रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं को जान सकेंगे एवं उनकी रचनाओं के समय की परिस्थितियों को भी समझ सकेंगे।

नाम ______________________ कक्षा ______________ दिनांक ______________

20. काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. नीचे एक वर्ग पहेली है जिसमें कुछ वन्य प्राणियों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए।

प	च	नी	ल	गा	य	क	तें	दु	आ
स	बा	ई	क	छ	झ	न	त	ल	अ
उ	र	ब	ठ	ब	र	शे	र	द	भा
हि	ह	फ	र	भ	य	म	न	रि	लू
र	सिं	ऊ	ची	ता	ज	ञ	ट	या	न
न	घा	द	म	ढ़	छ	य	त	ई	लं
ओ	ए	ब	न	मा	नु	ष	न	घो	गू
गो	रि	ल	ला	ई	त	अ	ख	ड़ा	र

2. अपने किसी मित्र के साथ राष्ट्रीय उद्यानों के महत्व विषय पर संवाद कीजिए-

(क) प्रथम छात्र - ______________________

द्वितीय छात्र - ______________________

(ख) प्रथम छात्र - ______________________

द्वितीय छात्र - ______________________

(ग) प्रथम छात्र - ______________________

द्वितीय छात्र - ______________________

3. निम्नलिखित वाक्यों के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए-

(क) 'तेज़' शब्द का विलोम शब्द है-
(अ) कमजोर ☐ (ब) धीमा ☐ (स) हल्का ☐

(ख) 'शाम' का पर्यायवाची शब्द नहीं है-
(अ) संध्या ☐ (ब) सायं ☐ (स) प्रातः ☐

(ग) 'राष्ट्रीय' शब्द में प्रत्यय है-
(अ) ईय ☐ (ब) य ☐ (स) ट्रीय ☐

(घ) 'जीव-जंतु' में समास है-
(अ) द्विगु ☐ (ब) द्वन्द्व ☐ (स) कर्मधारय ☐

(ङ) 'ग्रामीण' शब्द का विलोम है-
(अ) शहरी ☐ (ब) सामाजिक ☐ (स) महानगरीय ☐

गतिविधि (ACTIVITY)

गतिविधि : "श्रवण कौशल का विकास"

उद्देश्य : बच्चों को कहानी को ध्यानपूर्वक सुनकर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम करना।

कौशल एवं जीवन मूल्यों का विकास : बच्चों में स्मरण एवं लेखन कौशल का विकास होना। उनमें समय प्रबंधन जैसे कौशल का विकास होना।

समय : एक कालांश

प्रणाली : एकल

आवश्यक सामग्री : माइक-1, स्पीकर-1।

शिक्षिका/शिक्षक के द्वारा की गई पूर्व तैयारी : बच्चो, कल की कक्षा में श्रवण कौशल की परीक्षा ली जाएगी।

निर्देश :

- बच्चो! आपको एक कहानी सुनाई जाएगी। आप उस कहानी को सुनकर उससे संबंधित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।
- प्रत्येक बच्चे को प्रश्न लिखा हुआ एक पृष्ठ दिया जाएगा जिसमें आपको अपना नाम और अनुक्रमांक लिखना आवश्यक होगा। इसके पश्चात् लिखित प्रश्नों के उत्तर आप सुनाए गए ऑडियो के आधार पर लिखेंगे।
- जिस बच्चे को पूर्ण अंक मिलेगा, उसकी सीट पर लगा स्टीकर दिया जाएगा और उसकी शीट कक्षा में एक्टिविटी बोर्ड पर लगा दी जाएगी।
- इस गतिविधि में प्रत्येक बच्चे की उपस्थिति अनिवार्य है। यह गतिविधि दोहराई नहीं जाएगी।
- सभी बच्चों की कॉपी चेक होने के पश्चात् जिसके सभी उत्तर सही होंगे, उसे पढ़कर सुनाने के लिए कहा जाएगा।

प्रक्रिया :

- बच्चो! आप सभी को एक कहानी सुनाई जाएगी। कहानी ध्यानपूर्वक सुनिएगा। (बच्चे शांतिपूर्वक ध्यान से कहानी सुनते हैं। इसके पश्चात् शिक्षिका प्रत्येक बच्चे को प्रश्न लिखित 1-1 पृष्ठ देती है। सभी बच्चे उसपर अपना नाम और अनुक्रमांक लिखते हैं।)
- बच्चो! अब आप लोग इस पर लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए और जिनका कार्य पूर्ण हो जाए, वह मेरे पास लाकर जाँच कर दे। (सभी बच्चे प्रश्नों के उत्तर लिखने में लग जाते हैं। 10 मिनट के पश्चात् कुछ बच्चे हाथ खड़ा करते हैं और शिक्षिका की आज्ञा मिलने पर एक-एक कर वे अपने पृष्ठ को लेकर शिक्षिका के पास आते हैं। शिक्षिका उनके पृष्ठ की जाँच कर उनकी गलतियों को बताती हैं और उन्हें उनके पृष्ठ वापस करती हैं लेकिन जिनके पृष्ठ में किसी भी तरह की कोई अशुद्धि नहीं होती और सारे प्रश्न के उत्तर सही होते हैं, उस बच्चे को प्रश्न के उत्तर पढ़कर सुनाने को कहती हैं और उसके पृष्ठ पर स्टीकर देकर उसे एक्टिविटी बोर्ड पर लगवा देती हैं।)
- शाबाश संचित! आपने बहुत ही अच्छा उत्तर लिखा। आपकी स्मरण-शक्ति एवं लेखन कौशल अतिउत्तम है।

सीखने के परिणाम :

स्वयं की इस गतिविधि द्वारा बच्चों में भाषा की शुद्धता एवं वाक्य निर्माण जैसे कौशल का विकास हो सकेगा। वे आत्मनिर्भर होकर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे।